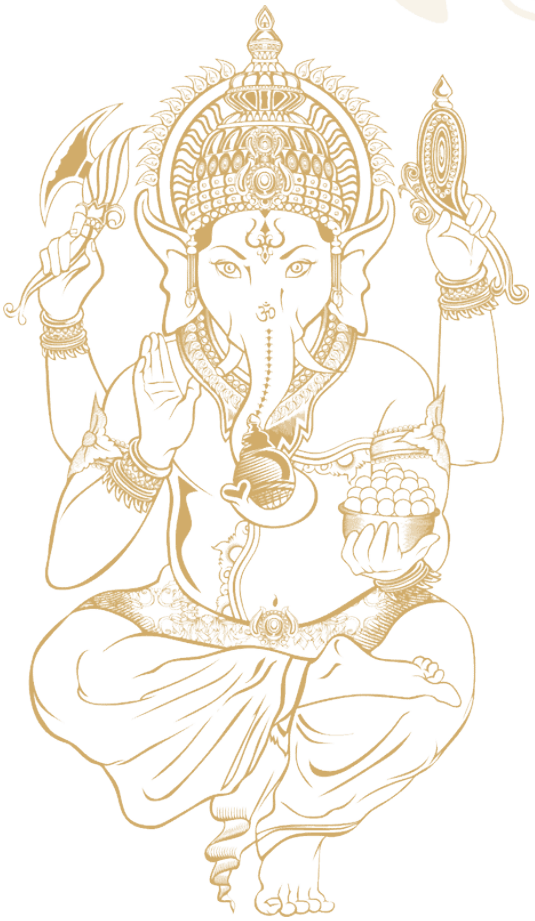

AMAN MITTAL

VISHAKHA GARG

Model: Web-MatchAnalysisDetailed

Order No: 121525601

कुँडली मिलान का महत्व

वैवाहिक जीवन में अनुकूलता हेतु जन्मकुण्डली मिलान किया जाता है।

इसमें सर्वप्रथम अष्टकूट मिलान किया जाता है। जातक की राशि व नक्षत्र के अनुसार उसका वर्ण, वश्य, तारा, योनि, राशेश, गण, भकूट एवं नाडी का ज्ञान करके वर-वधू के जीवन की अनुकूलता अथवा प्रतिकूलता का निर्णय किया जाता है। वर्ण विचार से कर्म, वश्य विचार से स्वभाव, तारा विचार से भाग्य, योनि विचार व ग्रह मैत्री विचार से पारस्परिक संबध, गण से सामाजिकता, भकूट से जीवन में तालमेल एवं नाड़ी विचार से स्वास्थ्य व सतांन संबधी फल का विचार किया जाता है। इन सभी गुणों को क्रमशः 1 से 8 तक अंक दिये जाते है। इस प्रकार अष्टकूट विचार में कुल 36 गुणों का विचार किया जाता है। जिसमें कम से कम 18 गुणों का होना आवश्यक है। इससे कम गुण वाले विवाह ज्योतिषीय विधान के अनुसार अव्यवहारिक रहते हैं।

अष्टकूट मिलान के साथ मांगलिक दोष का विचार भी अति महत्वपूर्ण माना जाता है। यदि मंगल लग्न कुंडली में 1,4,7,8 एवं 12 वें भाव में स्थित हो तो मंगली दोष होता है। मंगली दोष निवारण के लिए आवश्यक है कि वर-वधू दोनों मंगली न हों या दोनों मंगली हों। शास्त्रों में इनके अलावा भी दोष निवारण के सूत्र दिए गए हैं। इस दोष के निवारण से किसी प्रकार के अमंगल की संभावनाएं कम हो जाती है और वैवाहिक जीवन सुख व शांतिपूर्ण गुजरता है।

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
22/10/1998	जन्म तिथि	24/06/1999
गुरुवार	दिन	गुरुवार
घंटे 09:46:00	जन्म समय	07:48:00 घंटे
घटी 08:18:50	जन्म समय(घटी)	06:00:35 घटी
India	देश	India
Baghpat	स्थान	Meerut
28:56:00 उत्तर	अक्षांश	29:00:00 उत्तर
77:14:00 पूर्व	रेखांश	77:42:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:21:04	स्थानिक संस्कार	-00:19:12 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:26:28	सूर्योदय	05:21:44
17:44:29	सूर्यास्त	19:21:11
23:50:15	चित्रपक्षीय अयनांश	23:50:47

वृश्चिक	लग्न	कर्क
मंगल	लग्न लग्नाधिपति	चन्द्र
तुला	राशि	तुला
शुक्र	राशि-स्वामी	शुक्र
विशाखा	नक्षत्र	स्वाति
गुरु	नक्षत्र स्वामी	राहु
2	चरण	3
आयुष्मान	योग	शिव
कौलव	करण	विष्टि
तू-तुकाराम	जन्म नामाक्षर	रो-रोहिणी
तुला	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कर्क
शूद्र	वर्ण	शूद्र
मानव	वश्य	मानव
व्याघ्र	योनि	महिष
राक्षस	गण	देव
अन्त्य	नाड़ी	अन्त्य
सर्प	वर्ग	मृग

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
गुरु 11वर्ष 5मा 18दि		16:30:20	वृश्चि	लग्न	कर्क	09:10:17	राहु 5वर्ष 11मा 8दि	
शनि		04:43:22	तुला	सूर्य	मिथु	08:19:09	शनि	
10/04/2010		23:46:39	तुला	चंद्र	तुला	15:35:59	02/06/2021	
10/04/2029		15:03:09	सिंह	मंगल	तुला	03:00:51	01/06/2040	
शनि	13/04/2013	21:28:30	तुला	बुध	कर्क	03:14:08	शनि	04/06/2024
बुध	22/12/2015	25:09:51	कुंभ व	गुरु	मेष	05:27:08	बुध	12/02/2027
केतु	30/01/2017	02:40:25	तुला	शुक्र	कर्क	23:01:45	केतु	23/03/2028
शुक्र	01/04/2020	06:27:02	मेष व	शनि	मेष	19:42:59	शुक्र	24/05/2031
सूर्य	14/03/2021	05:47:45	सिंह व	राहु व	कर्क	19:58:46	सूर्य	05/05/2032
चन्द्र	13/10/2022	05:47:45	कुंभ व	केतु व	मक	19:58:46	चन्द्र	04/12/2033
मंगल	22/11/2023	14:58:37	मक	हर्ष व	मक	22:31:11	मंगल	13/01/2035
राहु	28/09/2026	05:34:40	मक	नेप व	मक	09:56:55	राहु	19/11/2037
गुरु	10/04/2029	12:38:05	वृश्चि	प्लूटो व	वृश्चि	14:39:10	गुरु	01/06/2040

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

23:50:15 चित्रपक्षीय अयनांश 23:50:47

लग्न-चलित

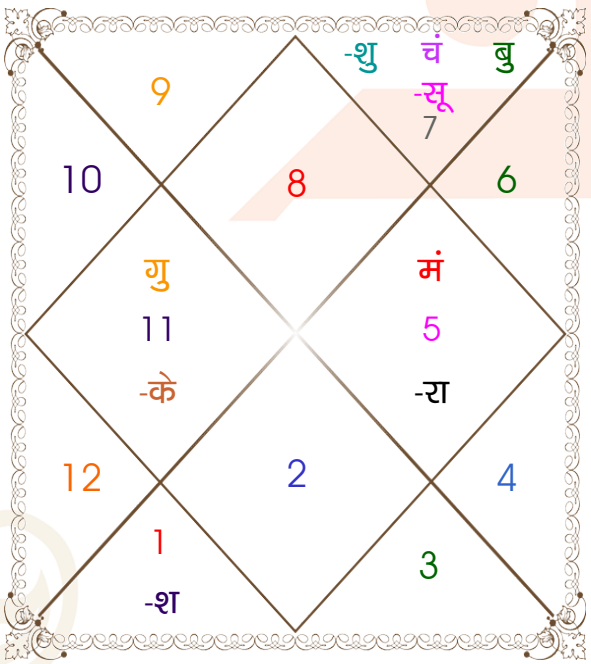

लग्न-चलित

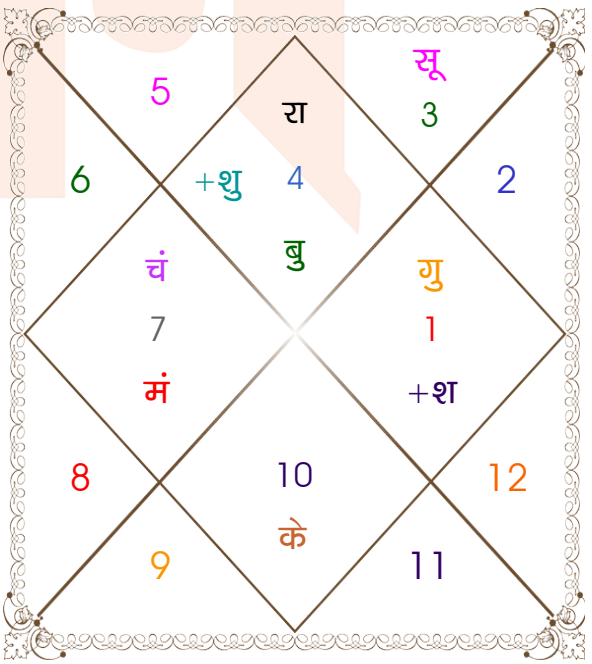

चन्द्र कुंडली

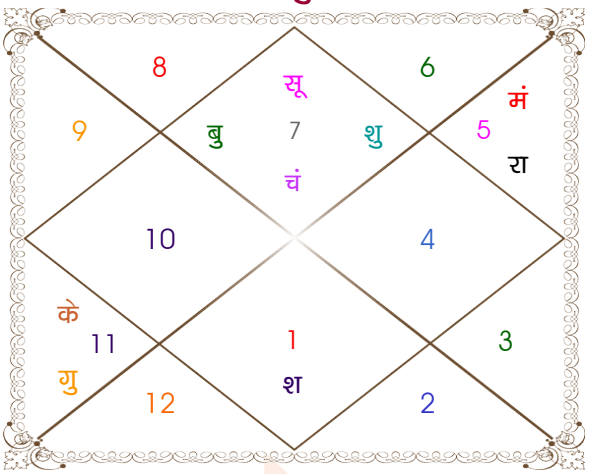

चन्द्र कुंडली

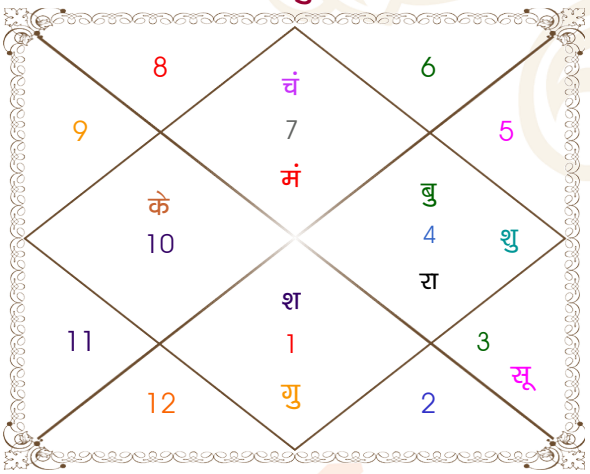

सूर्य कुंडली

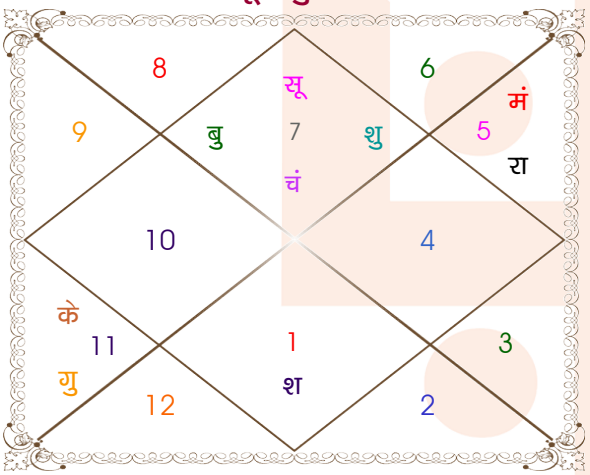

सूर्य कुंडली

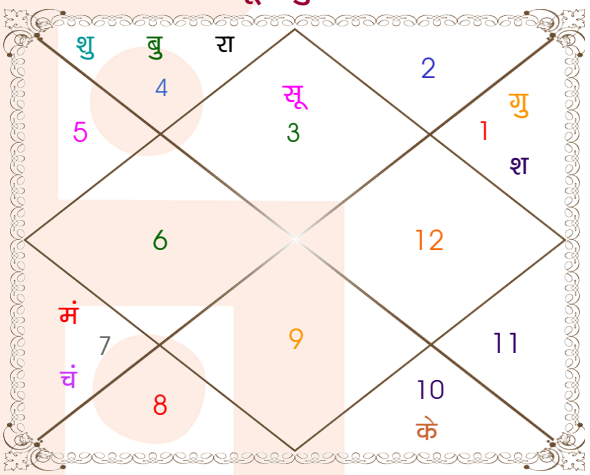

नवमांश कुंडली

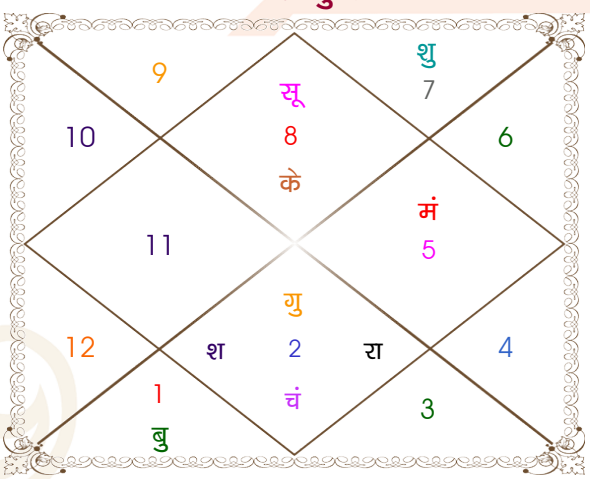

नवमांश कुंडली

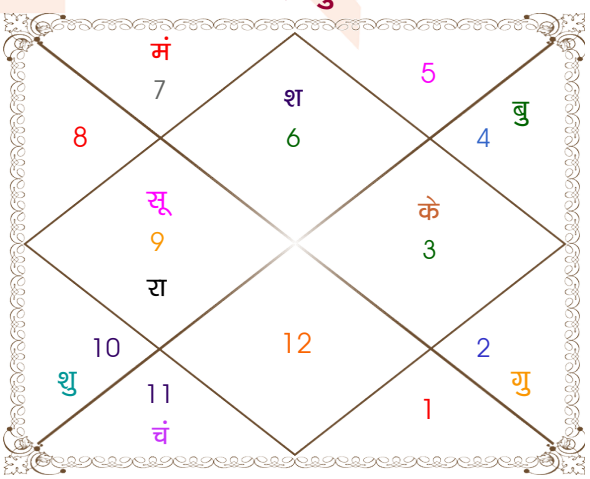

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : गुरु 11 वर्ष 4 मास 4 दिन

के.पी. अयनांश : 23:44:10

फॉरच्युना : धनु 05:39:41

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		तुला	04:49:26	शुक्र	मंगल	शुक्र	केतु
चंद्र		तुला	23:52:43	शुक्र	गुरु	शनि	गुरु
मंगल		सिंह	15:09:13	सूर्य	शुक्र	शुक्र	बुध
बुध		तुला	21:34:34	शुक्र	गुरु	गुरु	राहु
गुरु	व	कुंभ	25:15:55	शनि	गुरु	बुध	गुरु
शुक्र		तुला	02:46:29	शुक्र	मंगल	शुक्र	शुक्र
शनि	व	मेष	06:33:06	मंगल	केतु	राहु	बुध
राहु	व	सिंह	05:53:49	सूर्य	केतु	राहु	गुरु
केतु	व	कुंभ	05:53:49	शनि	मंगल	चंद्र	गुरु
हर्ष		मक	15:04:41	शनि	चंद्र	गुरु	सूर्य
नेप		मक	05:40:45	शनि	सूर्य	बुध	शुक्र
प्लूटो		वृश्चि	12:44:09	मंगल	शनि	मंगल	शुक्र

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	वृश्चि	16:36:24	मंगल	शनि	गुरु	राहु
2	धनु	17:52:03	गुरु	शुक्र	मंगल	केतु
3	मक	22:23:52	शनि	चंद्र	शुक्र	बुध
4	कुंभ	27:09:24	शनि	गुरु	शुक्र	चंद्र
5	मीन	27:58:06	गुरु	बुध	शनि	शनि
6	मेष	23:50:35	मंगल	शुक्र	शनि	गुरु
7	वृष	16:36:24	शुक्र	चंद्र	शनि	शुक्र
8	मिथु	17:52:03	बुध	राहु	सूर्य	बुध
9	कर्क	22:23:52	चंद्र	बुध	चंद्र	राहु
10	सिंह	27:09:24	सूर्य	सूर्य	सूर्य	बुध
11	कन्या	27:58:06	बुध	मंगल	शनि	शनि
12	तुला	23:50:35	शुक्र	गुरु	शनि	गुरु

भाव कुंडली

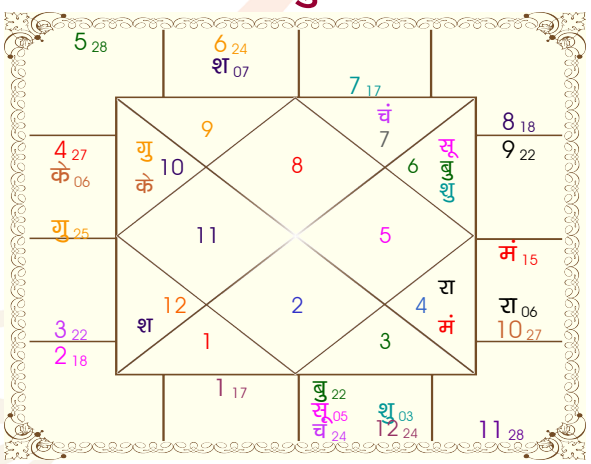

भोग्य दशा काल : राहु 5 वर्ष 9 मास 19 दिन

के.पी. अयनांश : 23:44:44

फॉरच्युना : वृश्चिक 16:33:10

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		मिथु	08:25:12	बुध	राहु	राहु	चंद्र
चंद्र		तुला	15:42:02	शुक्र	राहु	शुक्र	सूर्य
मंगल		तुला	03:06:53	शुक्र	मंगल	शुक्र	सूर्य
बुध		कर्क	03:20:11	चंद्र	शनि	शनि	शनि
गुरु		मेष	05:33:11	मंगल	केतु	मंगल	चंद्र
शुक्र		कर्क	23:07:47	चंद्र	बुध	चंद्र	शुक्र
शनि		मेष	19:49:01	मंगल	शुक्र	राहु	सूर्य
राहु	व	कर्क	20:04:49	चंद्र	बुध	शुक्र	मंगल
केतु	व	मक	20:04:49	शनि	चंद्र	केतु	राहु
हर्ष	व	मक	22:37:13	शनि	चंद्र	शुक्र	केतु
नेप	व	मक	10:02:57	शनि	चंद्र	चंद्र	चंद्र
प्लूटो	व	वृश्चि	14:45:13	मंगल	शनि	राहु	चंद्र

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	कर्क	09:16:19	चंद्र	शनि	शुक्र	गुरु
2	सिंह	02:47:43	सूर्य	केतु	शुक्र	बुध
3	कन्या	00:12:06	बुध	सूर्य	राहु	बुध
4	तुला	02:08:24	शुक्र	मंगल	केतु	चंद्र
5	वृश्चि	06:20:55	मंगल	शनि	बुध	चंद्र
6	धनु	09:14:30	गुरु	केतु	गुरु	राहु
7	मक	09:16:19	शनि	सूर्य	शुक्र	शनि
8	कुंभ	02:47:43	शनि	मंगल	शुक्र	शुक्र
9	मीन	00:12:06	गुरु	गुरु	चंद्र	बुध
10	मेष	02:08:24	मंगल	केतु	शुक्र	गुरु
11	वृष	06:20:55	शुक्र	सूर्य	बुध	राहु
12	मिथु	09:14:30	बुध	राहु	गुरु	बुध

भाव कुंडली

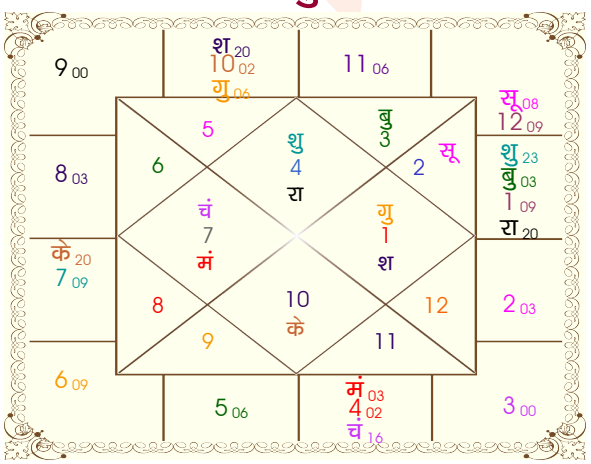

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	सूर्य- मंगल- शुक्र- केतु-
2	चंद्र- बुध- गुरु,
3	चंद्र, बुध, गुरु+ शनि+ राहु, केतु,
4	शनि-
5	चंद्र- बुध- गुरु, शनि,
6	सूर्य- मंगल- शुक्र- केतु-
7	मंगल- शुक्र-
8	बुध-
9	सूर्य, चंद्र- मंगल, शुक्र, राहु, केतु,
10	सूर्य-
11	सूर्य, मंगल, बुध, शुक्र,
12	चंद्र, मंगल- शुक्र-

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	सूर्य, चंद्र+ शुक्र, शनि, राहु, केतु-
2	सूर्य-
3	बुध- शुक्र- राहु-
4	चंद्र, मंगल+ शुक्र- शनि- केतु,
5	मंगल,
6	गुरु-
7	बुध- गुरु, शनि- केतु,
8	बुध- शनि-
9	गुरु-
10	मंगल, बुध, गुरु, शनि,
11	सूर्य, शुक्र- शनि-
12	बुध, शुक्र+ राहु+

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	1- 6- 9, 10- 11,
चंद्र	2- 3, 5- 9- 12,
मंगल	1- 6- 7- 9, 11, 12-
बुध	2- 3, 5- 8- 11,
गुरु	2, 3+ 5,
शुक्र	1- 6- 7- 9, 11, 12-
शनि	3+ 4- 5,
राहु	3, 9,
केतु	1- 3, 6- 9,

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	1, 2- 11,
चंद्र	1+ 4,
मंगल	4+ 5, 10,
बुध	3- 7- 8- 10, 12,
गुरु	6- 7, 9- 10,
शुक्र	1, 3- 4- 11- 12+
शनि	1, 4- 7- 8- 10, 11-
राहु	1, 3- 12+
केतु	1- 4, 7,

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	शनि
लग्न राशि स्वामी	मंगल
राशि नक्षत्र स्वामी	गुरु
राशि स्वामी	शुक्र
वार स्वामी	गुरु
लग्न अन्तर स्वामी	गुरु
राशि अन्तर स्वामी	शनि

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	शनि
लग्न राशि स्वामी	चन्द्र
राशि नक्षत्र स्वामी	राहु
राशि स्वामी	शुक्र
वार स्वामी	गुरु
लग्न अन्तर स्वामी	शुक्र
राशि अन्तर स्वामी	शुक्र

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

लग्न कुंडली

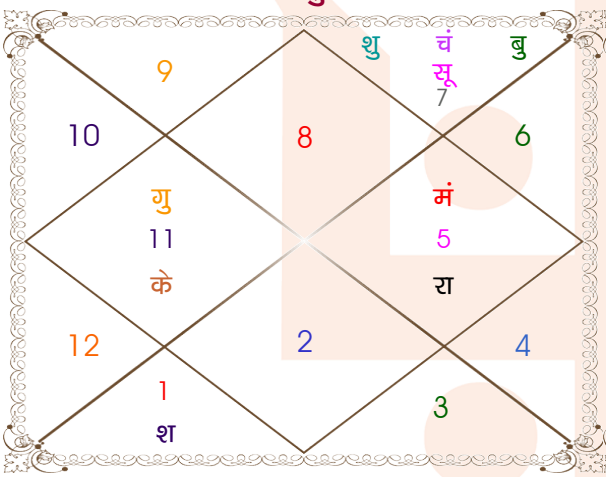

देह विचारः

लग्न कुंडली

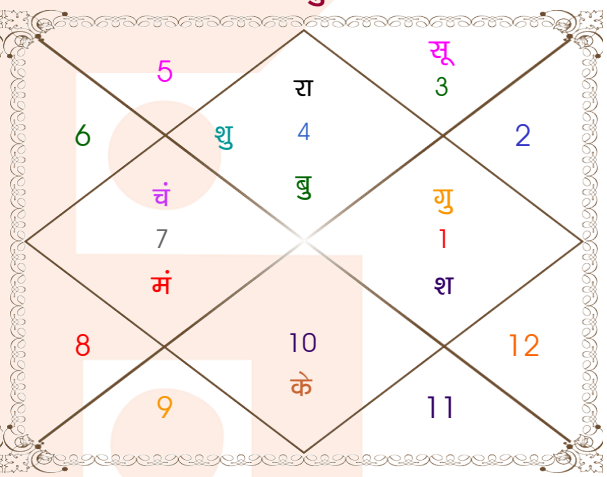

देह विचारः

होरा कुंडली

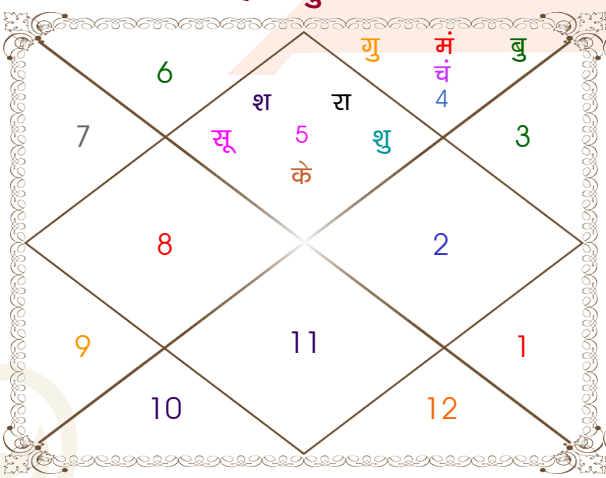

सम्पदाविचारः

होरा कुंडली

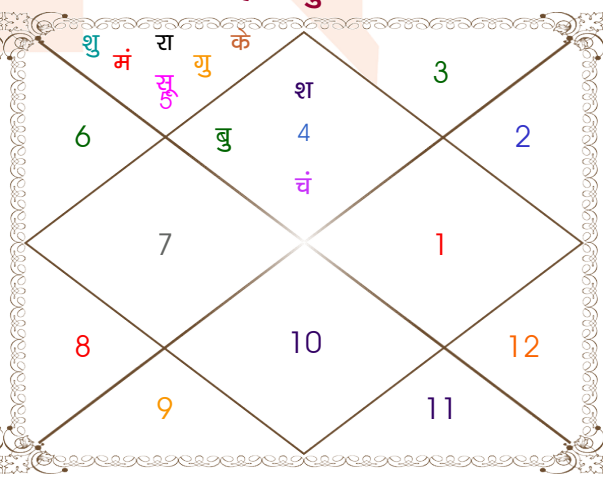

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

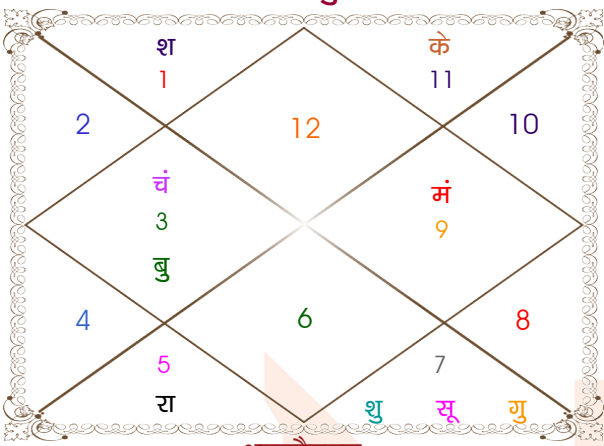

भ्रातृसौख्यम

द्रेष्काण कुंडली

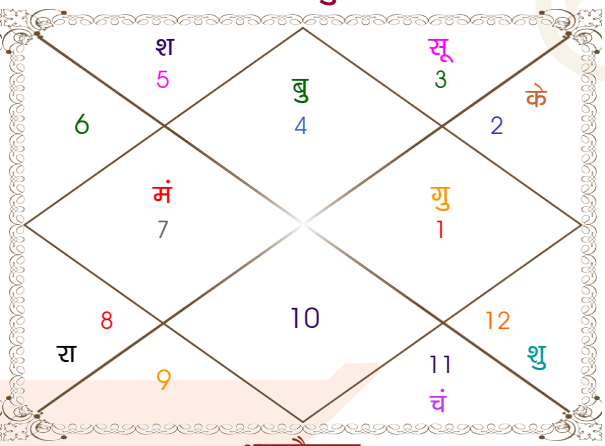

भ्रातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

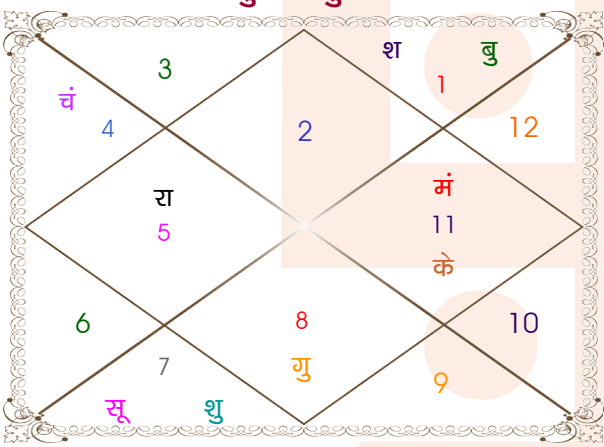

भाग्यविचारः

चतुर्थांश कुंडली

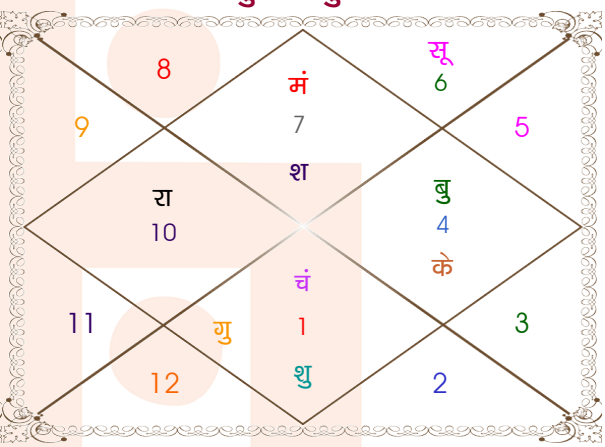

भाग्यविचारः

सप्तमांश कुंडली

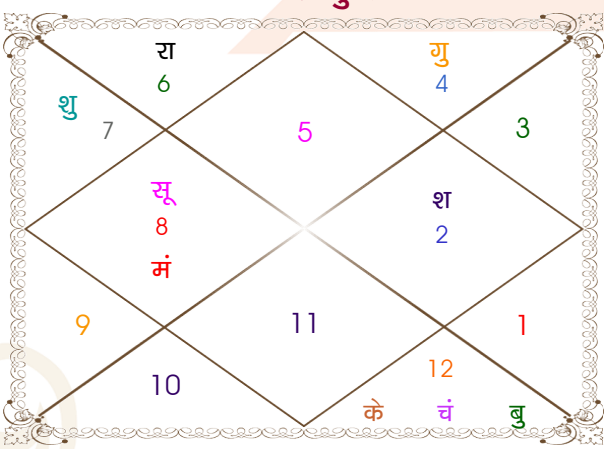

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

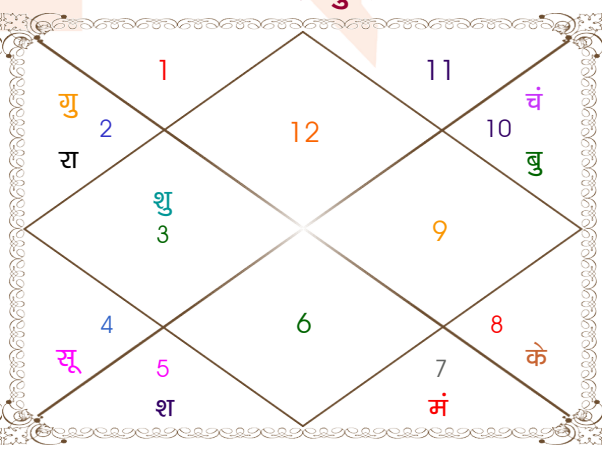

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

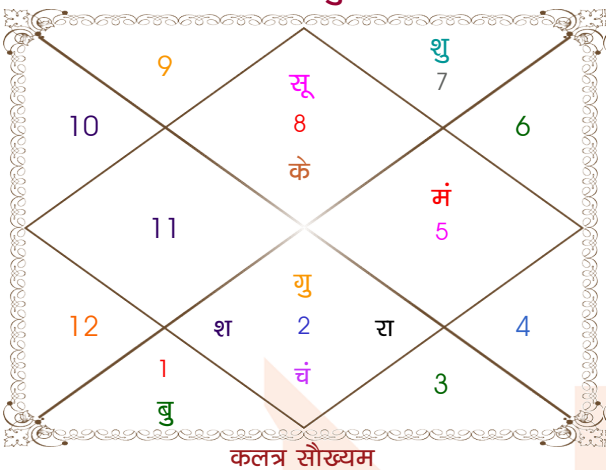

कलत्र सौख्यम

नवमांश कुंडली

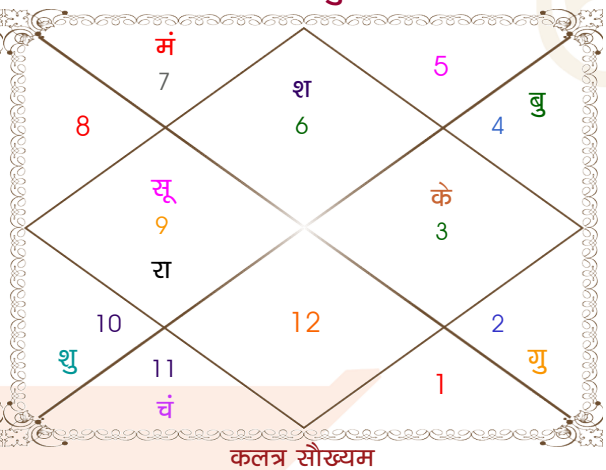

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

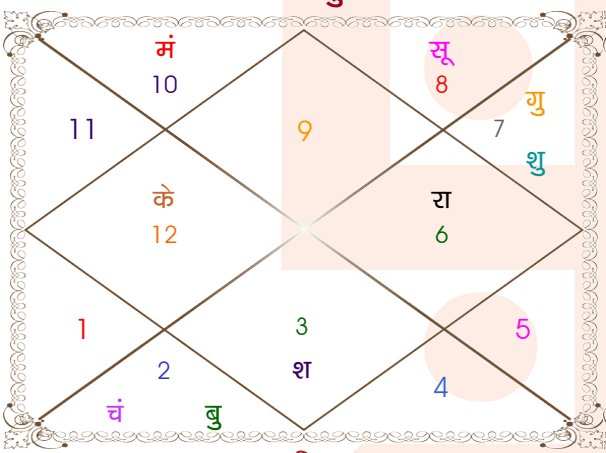

राज्यविचारः

दशमांश कुंडली

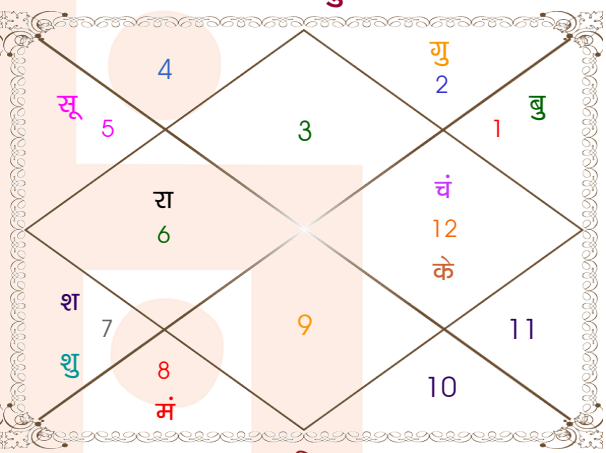

राज्यविचारः

द्वादशांश कुंडली

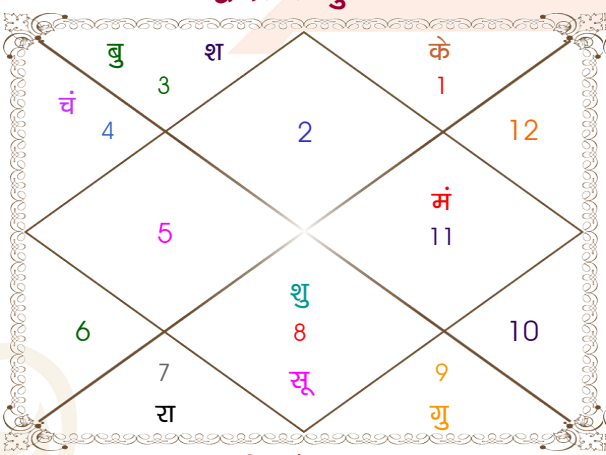

पितृसौख्यम

द्वादशांश कुंडली

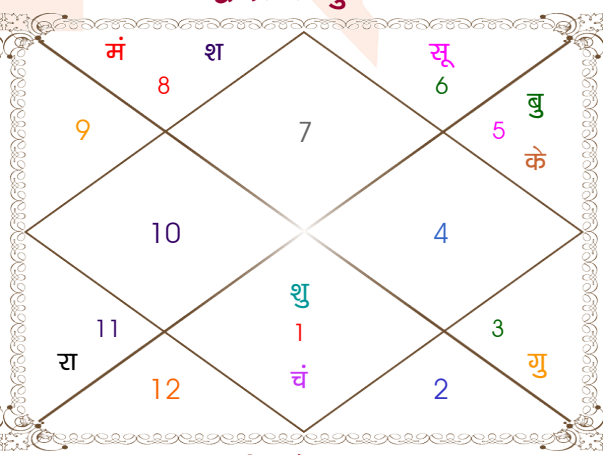

पितृसौख्यम

षोडशवर्ग चक्र

षोडशांश कुंडली

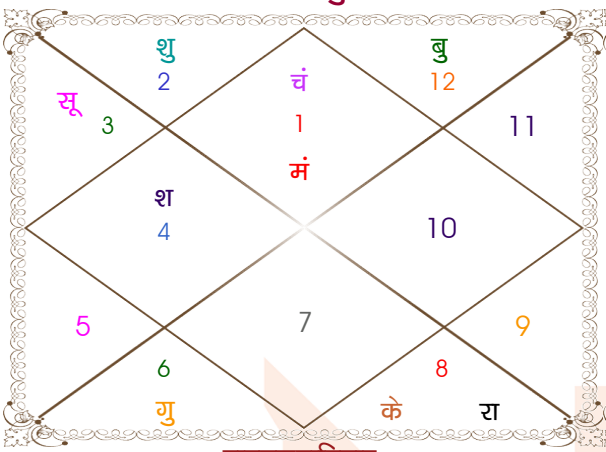

वाहनसुखविचारः

षोडशांश कुंडली

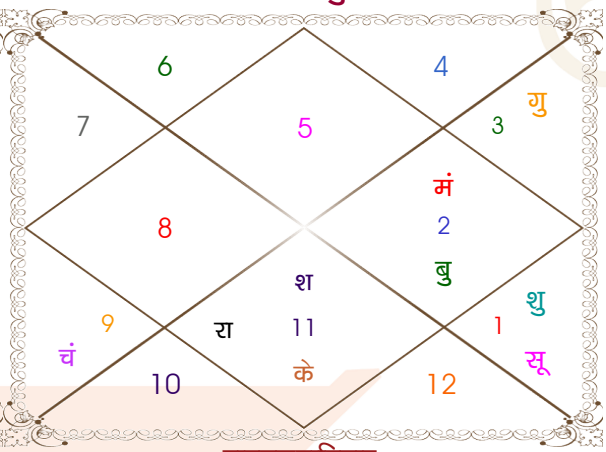

वाहनसुखविचारः

त्रिंशांश कुंडली

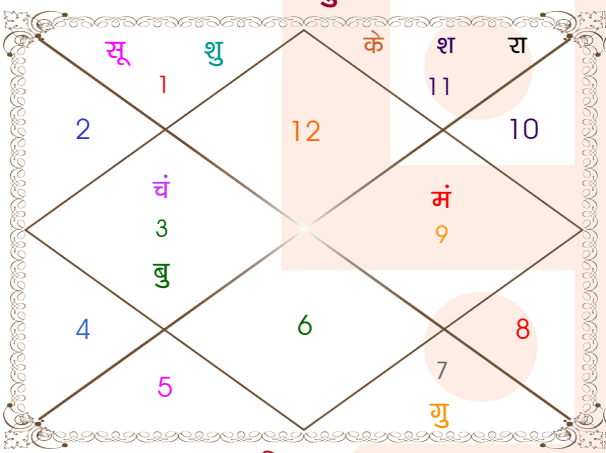

अरिष्टज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

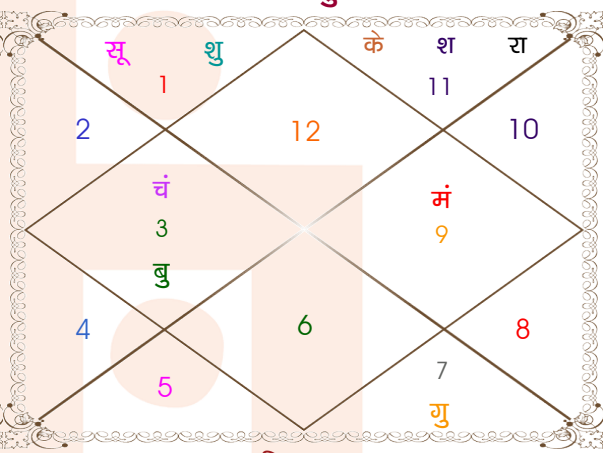

अरिष्टज्ञानम्

षष्ट्यंश कुंडली

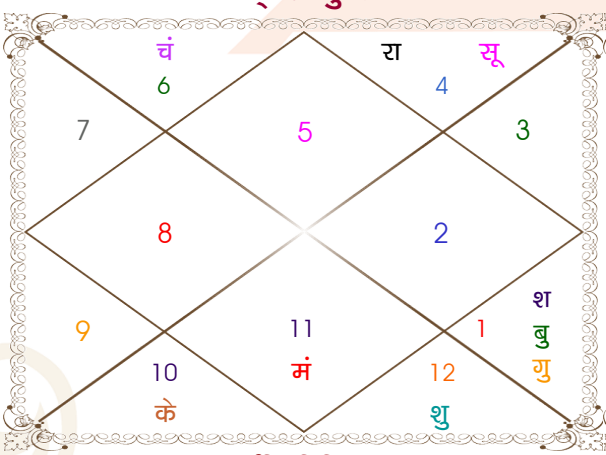

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

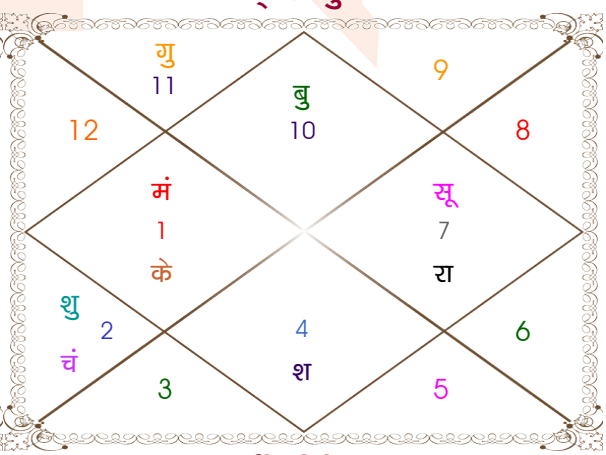

सर्वास्थितिविचारः

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

पंचधा मैत्री - AMAN MITTAL

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	सम	अतिमित्र	शत्रु	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु
चंद्र	सम	---	मित्र	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	अधिशत्रु
मंगल	अतिमित्र	अतिमित्र	---	सम	सम	मित्र	शत्रु	अधिशत्रु	सम
बुध	सम	अधिशत्रु	मित्र	---	शत्रु	सम	शत्रु	मित्र	शत्रु
गुरु	सम	सम	सम	अधिशत्रु	---	अधिशत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु
शुक्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु	मित्र	सम	शत्रु	---	सम	अतिमित्र	सम
शनि	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	मित्र	सम	---	सम	सम
राहु	सम	सम	अधिशत्रु	मित्र	शत्रु	अतिमित्र	सम	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	सम	सम	अधिशत्रु	---

पंचधा मैत्री - VISHAKHA GARG

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	सम	सम	मित्र	अतिमित्र	सम	सम	सम	अधिशत्रु
चंद्र	सम	---	शत्रु	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	सम	सम
मंगल	सम	सम	---	सम	सम	मित्र	शत्रु	सम	अतिमित्र
बुध	अतिमित्र	सम	मित्र	---	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु
गुरु	अतिमित्र	सम	सम	सम	---	सम	शत्रु	मित्र	मित्र
शुक्र	सम	सम	मित्र	सम	मित्र	---	अतिमित्र	सम	सम
शनि	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	---	अतिमित्र	सम
राहु	सम	सम	सम	शत्रु	मित्र	सम	अतिमित्र	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	सम	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	सम	सम	अधिशत्रु	---

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	तु	वृश्ि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	कुल
शनि	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	8
गुरु	1	0	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	4
मंगल	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	3
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	7
चंद्र	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
लग्न	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	6
कुल	4	3	4	3	4	4	5	3	4	5	5	4	48

सूर्य का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्ि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	6
सूर्य	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	4
मंगल	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	8
बुध	1	1	1	0	0	1	0	1	1	0	0	1	7
गुरु	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	0	4
शुक्र	0	0	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	3
शनि	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
कुल	5	4	5	4	3	4	3	3	7	4	3	3	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	तु	वृश्ि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	कुल
शनि	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	1	4
गुरु	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	7
मंगल	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	1	6
सूर्य	0	0	1	0	0	1	1	1	0	1	1	0	6
शुक्र	0	0	1	1	1	0	1	0	1	1	1	0	7
बुध	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	0	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	4
कुल	3	1	6	4	4	3	5	4	4	4	7	4	49

चंद्र का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्ि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	4
सूर्य	1	0	0	0	1	0	0	1	1	1	0	1	6
चंद्र	1	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	6
मंगल	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	7
बुध	1	1	0	1	0	1	1	1	0	1	1	0	8
गुरु	1	0	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	7
शुक्र	1	1	0	0	0	1	1	1	0	1	0	1	7
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
कुल	6	3	2	4	4	4	4	5	4	4	4	5	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	सि	कं	तु	वृश्ि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	कुल
शनि	0	0	1	1	1	1	1	0	1	0	0	1	7
गुरु	0	0	0	1	1	1	0	0	0	0	0	1	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	5
शुक्र	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	4
बुध	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	4
चंद्र	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	3
लग्न	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	5
कुल	6	3	1	4	5	3	4	5	2	2	1	3	39

मंगल का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्ि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	5
सूर्य	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	5
चंद्र	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	3
मंगल	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	7
बुध	0	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	4
गुरु	0	0	0	0	0	1	0	0	0	1	1	1	4
शुक्र	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	4
शनि	1	0	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	7
कुल	4	4	1	3	3	3	3	4	5	3	3	3	39

बुध का अष्टकवर्ग

	तु	वृश्ि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	कुल
शनि	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	8
गुरु	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	4
मंगल	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	8
सूर्य	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	5
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	0	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	6
लग्न	0	1	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	7
कुल	3	5	5	4	6	4	3	4	5	4	6	5	54

बुध का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्ि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1	0	7
सूर्य	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	5
चंद्र	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	1	6
मंगल	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	8
बुध	1	1	1	1	0	1	0	1	1	0	0	1	8
गुरु	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	4
शुक्र	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	8
शनि	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
कुल	5	7	2	6	4	3	5	7	3	3	5	4	54

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

गुरु का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुल
शनि	0	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	7
सूर्य	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	1	1	9
शुक्र	1	1	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	6
बुध	1	1	0	0	1	1	1	0	1	1	0	1	8
चंद्र	1	0	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	5
लग्न	1	1	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	9
कुल	6	6	4	4	6	4	8	4	2	7	3	2	56

गुरु का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	0	1	9
सूर्य	1	0	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	9
चंद्र	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	1	0	5
मंगल	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	7
बुध	1	1	0	1	1	0	1	1	1	0	0	1	8
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
शुक्र	1	1	0	0	1	0	0	1	1	0	0	1	6
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	0	1	4
कुल	7	5	4	5	7	2	4	6	4	4	3	5	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	कुल
शनि	0	1	1	1	1	0	0	0	1	1	1	0	7
गुरु	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	5
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	0	1	1	0	0	6
सूर्य	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	5
चंद्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	9
लग्न	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	8
कुल	4	6	6	5	5	2	1	3	7	4	5	4	52

शुक्र का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	8
सूर्य	1	1	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	3
चंद्र	0	1	1	0	1	1	1	1	1	1	1	0	9
मंगल	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	1	6
बुध	0	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	1	5
गुरु	0	0	0	0	1	0	0	1	1	1	1	0	5
शुक्र	1	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	9
शनि	0	0	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	7
कुल	2	5	3	3	6	5	3	6	5	4	6	4	52

शनि का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	4
मंगल	0	1	1	1	0	0	1	0	1	1	0	0	6
सूर्य	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	7
शुक्र	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	3
बुध	0	1	1	1	1	1	0	0	0	0	0	1	6
चंद्र	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	3
लग्न	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	1	0	6
कुल	2	3	4	4	6	4	2	2	3	4	2	3	39

शनि का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	6
सूर्य	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	7
चंद्र	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	3
मंगल	0	0	0	1	1	1	0	0	1	0	1	1	6
बुध	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	1	6
गुरु	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	4
शुक्र	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	3
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
कुल	3	3	4	3	4	5	1	0	6	1	4	5	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	कुल
शनि	0	0	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	6
गुरु	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	0	1	9
मंगल	0	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	5
सूर्य	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	1	0	6
शुक्र	1	1	1	1	0	0	1	1	0	0	0	1	7
बुध	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	1	7
चंद्र	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	1	0	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	3	4	6	3	4	2	4	4	5	6	4	4	49

लग्न का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	4
सूर्य	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	1	6
चंद्र	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	4
मंगल	0	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	5
बुध	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1	0	7
गुरु	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	0	9
शुक्र	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	8
शनि	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0	6
कुल	5	5	1	6	6	5	4	2	5	2	4	4	49

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

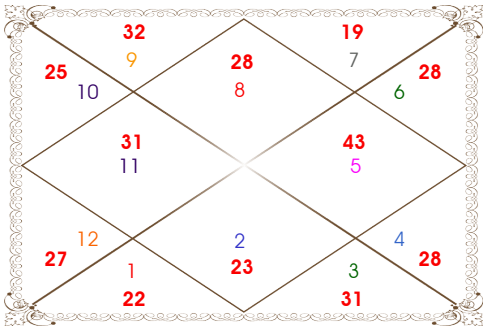

सर्वाष्टकवर्ग

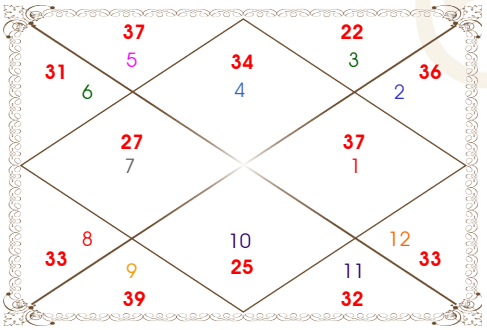

AMAN MITTAL

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	2	3	4	4	6	4	2	2	3	4	2	3	39
गुरु	4	4	6	4	8	4	2	7	3	2	6	6	56
मंगल	2	2	1	3	6	3	1	4	5	3	4	5	39
सूर्य	5	3	4	5	5	4	4	3	4	3	4	4	48
शुक्र	1	3	7	4	5	4	4	6	6	5	5	2	52
बुध	3	4	5	4	6	5	3	5	5	4	6	4	54
चंद्र	5	4	4	4	7	4	3	1	6	4	4	3	49
बिन्दु	22	23	31	28	43	28	19	28	32	25	31	27	337
रेखा	34	33	25	28	13	28	37	28	24	31	25	29	335

VISHAKHA GARG

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	5	5	1	6	6	5	4	2	5	2	4	4	49
सूर्य	5	4	5	4	3	4	3	3	7	4	3	3	48
चंद्र	6	3	2	4	4	4	4	5	4	4	4	5	49
मंगल	4	4	1	3	3	3	3	4	5	3	3	3	39
बुध	5	7	2	6	4	3	5	7	3	3	5	4	54
गुरु	7	5	4	5	7	2	4	6	4	4	3	5	56
शुक्र	2	5	3	3	6	5	3	6	5	4	6	4	52
शनि	3	3	4	3	4	5	1	0	6	1	4	5	39
बिन्दु	37	36	22	34	37	31	27	33	39	25	32	33	386
रेखा	27	28	42	30	27	33	37	31	25	39	32	31	382

शोध्य पिंड - AMAN MITTAL

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	42	72	119	102	187	162	66
ग्रह पिंड	13	26	62	54	85	42	32
शोध्य पिंड	55	98	181	156	272	204	98

शोध्य पिंड - VISHAKHA GARG

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	119	70	61	61	132	86	133	177
ग्रह पिंड	87	52	56	41	93	63	0	51
शोध्य पिंड	206	122	117	102	225	149	133	228

विंशोत्तरी दशा

गुरु 11 वर्ष 5 मास 18 दिन

गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
22/10/1998		10/04/2010		10/04/2029	
10/04/2010		10/04/2029		10/04/2046	
	22/10/1998	शनि	13/04/2013	बुध	07/09/2031
शनि	10/12/1998	बुध	22/12/2015	केतु	03/09/2032
बुध	17/03/2001	केतु	30/01/2017	शुक्र	05/07/2035
केतु	21/02/2002	शुक्र	01/04/2020	सूर्य	10/05/2036
शुक्र	22/10/2004	सूर्य	14/03/2021	चंद्र	10/10/2037
सूर्य	10/08/2005	चंद्र	13/10/2022	मंगल	07/10/2038
चंद्र	10/12/2006	मंगल	22/11/2023	राहु	25/04/2041
मंगल	16/11/2007	राहु	28/09/2026	गुरु	01/08/2043
राहु	10/04/2010	गुरु	10/04/2029	शनि	10/04/2046

केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष	
10/04/2046		10/04/2053		10/04/2073	
10/04/2053		10/04/2073		10/04/2079	
केतु	06/09/2046	शुक्र	09/08/2056	सूर्य	29/07/2073
शुक्र	06/11/2047	सूर्य	10/08/2057	चंद्र	27/01/2074
सूर्य	13/03/2048	चंद्र	10/04/2059	मंगल	04/06/2074
चंद्र	12/10/2048	मंगल	10/06/2060	राहु	29/04/2075
मंगल	11/03/2049	राहु	10/06/2063	गुरु	15/02/2076
राहु	29/03/2050	गुरु	08/02/2066	शनि	27/01/2077
गुरु	05/03/2051	शनि	10/04/2069	बुध	03/12/2077
शनि	13/04/2052	बुध	09/02/2072	केतु	10/04/2078
बुध	10/04/2053	केतु	10/04/2073	शुक्र	10/04/2079

चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष	
10/04/2079		10/04/2089		10/04/2096	
10/04/2089		10/04/2096		11/04/2114	
चंद्र	09/02/2080	मंगल	06/09/2089	राहु	22/12/2098
मंगल	09/09/2080	राहु	25/09/2090	गुरु	18/05/2101
राहु	11/03/2082	गुरु	01/09/2091	शनि	23/03/2104
गुरु	11/07/2083	शनि	09/10/2092	बुध	11/10/2106
शनि	08/02/2085	बुध	07/10/2093	केतु	29/10/2107
बुध	11/07/2086	केतु	05/03/2094	शुक्र	29/10/2110
केतु	09/02/2087	शुक्र	05/05/2095	सूर्य	23/09/2111
शुक्र	09/10/2088	सूर्य	10/09/2095	चंद्र	24/03/2113
सूर्य	10/04/2089	चंद्र	10/04/2096	मंगल	11/04/2114

राहु 5 वर्ष 11 मास 8 दिन

राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष	
24/06/1999		02/06/2005		02/06/2021	
02/06/2005		02/06/2021		01/06/2040	
	00/00/0000	गुरु	21/07/2007	शनि	04/06/2024
	00/00/0000	शनि	31/01/2010	बुध	12/02/2027
	00/00/0000	बुध	08/05/2012	केतु	23/03/2028
	00/00/0000	केतु	14/04/2013	शुक्र	24/05/2031
	24/06/1999	शुक्र	14/12/2015	सूर्य	05/05/2032
शुक्र	19/12/2001	सूर्य	01/10/2016	चंद्र	04/12/2033
सूर्य	13/11/2002	चंद्र	31/01/2018	मंगल	13/01/2035
चंद्र	14/05/2004	मंगल	07/01/2019	राहु	19/11/2037
मंगल	02/06/2005	राहु	02/06/2021	गुरु	01/06/2040

बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष	
01/06/2040		02/06/2057		01/06/2064	
02/06/2057		01/06/2064		01/06/2084	
बुध	29/10/2042	केतु	29/10/2057	शुक्र	02/10/2067
केतु	26/10/2043	शुक्र	29/12/2058	सूर्य	01/10/2068
शुक्र	26/08/2046	सूर्य	06/05/2059	चंद्र	02/06/2070
सूर्य	02/07/2047	चंद्र	05/12/2059	मंगल	02/08/2071
चंद्र	01/12/2048	मंगल	02/05/2060	राहु	02/08/2074
मंगल	28/11/2049	राहु	20/05/2061	गुरु	02/04/2077
राहु	16/06/2052	गुरु	26/04/2062	शनि	01/06/2080
गुरु	22/09/2054	शनि	05/06/2063	बुध	02/04/2083
शनि	02/06/2057	बुध	01/06/2064	केतु	01/06/2084

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष	
01/06/2084		02/06/2090		02/06/2100	
02/06/2090		02/06/2100		03/06/2107	
सूर्य	19/09/2084	चंद्र	02/04/2091	मंगल	29/10/2100
चंद्र	20/03/2085	मंगल	01/11/2091	राहु	17/11/2101
मंगल	26/07/2085	राहु	02/05/2093	गुरु	24/10/2102
राहु	20/06/2086	गुरु	01/09/2094	शनि	03/12/2103
गुरु	08/04/2087	शनि	01/04/2096	बुध	29/11/2104
शनि	20/03/2088	बुध	01/09/2097	केतु	27/04/2105
बुध	25/01/2089	केतु	02/04/2098	शुक्र	27/06/2106
केतु	02/06/2089	शुक्र	02/12/2099	सूर्य	02/11/2106
शुक्र	02/06/2090	सूर्य	02/06/2100	चंद्र	03/06/2107

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध	
22/11/2023		28/09/2026		10/04/2029	
28/09/2026		10/04/2029		07/09/2031	
राहु	26/04/2024	गुरु	29/01/2027	बुध	13/08/2029
गुरु	12/09/2024	शनि	25/06/2027	केतु	03/10/2029
शनि	23/02/2025	बुध	03/11/2027	शुक्र	27/02/2030
बुध	21/07/2025	केतु	27/12/2027	सूर्य	11/04/2030
केतु	20/09/2025	शुक्र	29/05/2028	चंद्र	24/06/2030
शुक्र	12/03/2026	सूर्य	14/07/2028	मंगल	14/08/2030
सूर्य	03/05/2026	चंद्र	29/09/2028	राहु	24/12/2030
चंद्र	29/07/2026	मंगल	22/11/2028	गुरु	20/04/2031
मंगल	28/09/2026	राहु	10/04/2029	शनि	07/09/2031

शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र	
04/06/2024		12/02/2027		23/03/2028	
12/02/2027		23/03/2028		24/05/2031	
बुध	22/10/2024	केतु	08/03/2027	शुक्र	02/10/2028
केतु	18/12/2024	शुक्र	15/05/2027	सूर्य	29/11/2028
शुक्र	31/05/2025	सूर्य	04/06/2027	चंद्र	05/03/2029
सूर्य	19/07/2025	चंद्र	08/07/2027	मंगल	12/05/2029
चंद्र	09/10/2025	मंगल	31/07/2027	राहु	01/11/2029
मंगल	05/12/2025	राहु	30/09/2027	गुरु	04/04/2030
राहु	02/05/2026	गुरु	23/11/2027	शनि	05/10/2030
गुरु	10/09/2026	शनि	26/01/2028	बुध	17/03/2031
शनि	12/02/2027	बुध	23/03/2028	केतु	24/05/2031

बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य	
07/09/2031		03/09/2032		05/07/2035	
03/09/2032		05/07/2035		10/05/2036	
केतु	28/09/2031	शुक्र	22/02/2033	सूर्य	20/07/2035
शुक्र	27/11/2031	सूर्य	15/04/2033	चंद्र	15/08/2035
सूर्य	15/12/2031	चंद्र	10/07/2033	मंगल	02/09/2035
चंद्र	14/01/2032	मंगल	09/09/2033	राहु	19/10/2035
मंगल	05/02/2032	राहु	11/02/2034	गुरु	29/11/2035
राहु	30/03/2032	गुरु	29/06/2034	शनि	17/01/2036
गुरु	17/05/2032	शनि	10/12/2034	बुध	01/03/2036
शनि	14/07/2032	बुध	05/05/2035	केतु	19/03/2036
बुध	03/09/2032	केतु	05/07/2035	शुक्र	10/05/2036

शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल	
24/05/2031		05/05/2032		04/12/2033	
05/05/2032		04/12/2033		13/01/2035	
सूर्य	10/06/2031	चंद्र	22/06/2032	मंगल	28/12/2033
चंद्र	09/07/2031	मंगल	26/07/2032	राहु	27/02/2034
मंगल	29/07/2031	राहु	21/10/2032	गुरु	21/04/2034
राहु	19/09/2031	गुरु	06/01/2033	शनि	25/06/2034
गुरु	05/11/2031	शनि	07/04/2033	बुध	21/08/2034
शनि	30/12/2031	बुध	28/06/2033	केतु	14/09/2034
बुध	17/02/2032	केतु	01/08/2033	शुक्र	20/11/2034
केतु	08/03/2032	शुक्र	05/11/2033	सूर्य	10/12/2034
शुक्र	05/05/2032	सूर्य	04/12/2033	चंद्र	13/01/2035

बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु	
10/05/2036		10/10/2037		07/10/2038	
10/10/2037		07/10/2038		25/04/2041	
चंद्र	22/06/2036	मंगल	31/10/2037	राहु	24/02/2039
मंगल	22/07/2036	राहु	24/12/2037	गुरु	28/06/2039
राहु	08/10/2036	गुरु	10/02/2038	शनि	22/11/2039
गुरु	16/12/2036	शनि	09/04/2038	बुध	02/04/2040
शनि	08/03/2037	बुध	30/05/2038	केतु	26/05/2040
बुध	20/05/2037	केतु	20/06/2038	शुक्र	29/10/2040
केतु	19/06/2037	शुक्र	20/08/2038	सूर्य	14/12/2040
शुक्र	14/09/2037	सूर्य	07/09/2038	चंद्र	02/03/2041
सूर्य	10/10/2037	चंद्र	07/10/2038	मंगल	25/04/2041

शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध	
13/01/2035		19/11/2037		01/06/2040	
19/11/2037		01/06/2040		29/10/2042	
राहु	18/06/2035	गुरु	22/03/2038	बुध	04/10/2040
गुरु	04/11/2035	शनि	16/08/2038	केतु	24/11/2040
शनि	17/04/2036	बुध	25/12/2038	शुक्र	20/04/2041
बुध	11/09/2036	केतु	17/02/2039	सूर्य	03/06/2041
केतु	11/11/2036	शुक्र	21/07/2039	चंद्र	15/08/2041
शुक्र	03/05/2037	सूर्य	05/09/2039	मंगल	05/10/2041
सूर्य	24/06/2037	चंद्र	21/11/2039	राहु	14/02/2042
चंद्र	19/09/2037	मंगल	14/01/2040	गुरु	12/06/2042
मंगल	19/11/2037	राहु	01/06/2040	शनि	29/10/2042

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - गुरु		बुध - शनि		केतु - केतु	
25/04/2041		01/08/2043		10/04/2046	
01/08/2043		10/04/2046		06/09/2046	
गुरु	14/08/2041	शनि	04/01/2044	केतु	19/04/2046
शनि	23/12/2041	बुध	22/05/2044	शुक्र	14/05/2046
बुध	19/04/2042	केतु	18/07/2044	सूर्य	21/05/2046
केतु	06/06/2042	शुक्र	29/12/2044	चंद्र	03/06/2046
शुक्र	22/10/2042	सूर्य	16/02/2045	मंगल	11/06/2046
सूर्य	03/12/2042	चंद्र	09/05/2045	राहु	04/07/2046
चंद्र	10/02/2043	मंगल	06/07/2045	गुरु	24/07/2046
मंगल	30/03/2043	राहु	30/11/2045	शनि	16/08/2046
राहु	01/08/2043	गुरु	10/04/2046	बुध	06/09/2046

बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य	
29/10/2042		26/10/2043		26/08/2046	
26/10/2043		26/08/2046		02/07/2047	
केतु	19/11/2042	शुक्र	16/04/2044	सूर्य	11/09/2046
शुक्र	18/01/2043	सूर्य	06/06/2044	चंद्र	06/10/2046
सूर्य	06/02/2043	चंद्र	01/09/2044	मंगल	24/10/2046
चंद्र	08/03/2043	मंगल	31/10/2044	राहु	10/12/2046
मंगल	29/03/2043	राहु	04/04/2045	गुरु	20/01/2047
राहु	22/05/2043	गुरु	20/08/2045	शनि	11/03/2047
गुरु	09/07/2043	शनि	31/01/2046	बुध	24/04/2047
शनि	05/09/2043	बुध	27/06/2046	केतु	12/05/2047
बुध	26/10/2043	केतु	26/08/2046	शुक्र	02/07/2047

केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र	
06/09/2046		06/11/2047		13/03/2048	
06/11/2047		13/03/2048		12/10/2048	
शुक्र	16/11/2046	सूर्य	13/11/2047	चंद्र	31/03/2048
सूर्य	08/12/2046	चंद्र	24/11/2047	मंगल	13/04/2048
चंद्र	12/01/2047	मंगल	01/12/2047	राहु	14/05/2048
मंगल	06/02/2047	राहु	20/12/2047	गुरु	12/06/2048
राहु	11/04/2047	गुरु	06/01/2048	शनि	16/07/2048
गुरु	07/06/2047	शनि	26/01/2048	बुध	15/08/2048
शनि	13/08/2047	बुध	14/02/2048	केतु	27/08/2048
बुध	13/10/2047	केतु	21/02/2048	शुक्र	02/10/2048
केतु	06/11/2047	शुक्र	13/03/2048	सूर्य	12/10/2048

बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु	
02/07/2047		01/12/2048		28/11/2049	
01/12/2048		28/11/2049		16/06/2052	
चंद्र	15/08/2047	मंगल	22/12/2048	राहु	17/04/2050
मंगल	14/09/2047	राहु	14/02/2049	गुरु	19/08/2050
राहु	30/11/2047	गुरु	04/04/2049	शनि	13/01/2051
गुरु	07/02/2048	शनि	31/05/2049	बुध	25/05/2051
शनि	29/04/2048	बुध	21/07/2049	केतु	19/07/2051
बुध	12/07/2048	केतु	11/08/2049	शुक्र	21/12/2051
केतु	11/08/2048	शुक्र	11/10/2049	सूर्य	06/02/2052
शुक्र	05/11/2048	सूर्य	29/10/2049	चंद्र	23/04/2052
सूर्य	01/12/2048	चंद्र	28/11/2049	मंगल	16/06/2052

केतु - मंगल		केतु - राहु		केतु - गुरु	
12/10/2048		11/03/2049		29/03/2050	
11/03/2049		29/03/2050		05/03/2051	
मंगल	21/10/2048	राहु	07/05/2049	गुरु	14/05/2050
राहु	12/11/2048	गुरु	27/06/2049	शनि	06/07/2050
गुरु	02/12/2048	शनि	27/08/2049	बुध	24/08/2050
शनि	26/12/2048	बुध	20/10/2049	केतु	13/09/2050
बुध	16/01/2049	केतु	12/11/2049	शुक्र	08/11/2050
केतु	25/01/2049	शुक्र	15/01/2050	सूर्य	26/11/2050
शुक्र	19/02/2049	सूर्य	03/02/2050	चंद्र	24/12/2050
सूर्य	26/02/2049	चंद्र	07/03/2050	मंगल	13/01/2051
चंद्र	11/03/2049	मंगल	29/03/2050	राहु	05/03/2051

बुध - गुरु		बुध - शनि		केतु - केतु	
16/06/2052		22/09/2054		02/06/2057	
22/09/2054		02/06/2057		29/10/2057	
गुरु	05/10/2052	शनि	25/02/2055	केतु	10/06/2057
शनि	13/02/2053	बुध	14/07/2055	शुक्र	05/07/2057
बुध	10/06/2053	केतु	10/09/2055	सूर्य	13/07/2057
केतु	29/07/2053	शुक्र	21/02/2056	चंद्र	25/07/2057
शुक्र	14/12/2053	सूर्य	10/04/2056	मंगल	03/08/2057
सूर्य	24/01/2054	चंद्र	01/07/2056	राहु	25/08/2057
चंद्र	03/04/2054	मंगल	27/08/2056	गुरु	14/09/2057
मंगल	21/05/2054	राहु	21/01/2057	शनि	08/10/2057
राहु	22/09/2054	गुरु	02/06/2057	बुध	29/10/2057

योगिनी दशा

धान्या 2 वर्ष 1 मास 24 दिन

धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष	
22/10/1998		15/12/2000		15/12/2004	
15/12/2000		15/12/2004		15/12/2009	
	00/00/0000	भ्राम	27/05/2001	भद्रि	26/08/2005
	22/10/1998	भद्रि	15/12/2001	उल्क	26/06/2006
भद्रि	16/12/1998	उल्क	16/08/2002	सिद्ध	16/06/2007
उल्क	16/06/1999	सिद्ध	27/05/2003	संक	26/07/2008
सिद्ध	15/01/2000	संक	16/04/2004	मंग	15/09/2008
संक	15/09/2000	मंग	26/05/2004	पिंग	25/12/2008
मंग	15/10/2000	पिंग	15/08/2004	धांय	27/05/2009
पिंग	15/12/2000	धांय	15/12/2004	भ्राम	15/12/2009

उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष	
15/12/2009		16/12/2015		16/12/2022	
16/12/2015		16/12/2022		16/12/2030	
उल्क	16/12/2010	सिद्ध	26/04/2017	संक	25/09/2024
सिद्ध	15/02/2012	संक	15/11/2018	मंग	15/12/2024
संक	16/06/2013	मंग	25/01/2019	पिंग	27/05/2025
मंग	16/08/2013	पिंग	16/06/2019	धांय	25/01/2026
पिंग	15/12/2013	धांय	15/01/2020	भ्राम	16/12/2026
धांय	16/06/2014	भ्राम	25/10/2020	भद्रि	26/01/2028
भ्राम	15/02/2015	भद्रि	16/10/2021	उल्क	27/05/2029
भद्रि	16/12/2015	उल्क	16/12/2022	सिद्ध	16/12/2030

मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष	
16/12/2030		16/12/2031		15/12/2033	
16/12/2031		15/12/2033		15/12/2036	
मंग	26/12/2030	पिंग	26/01/2032	धांय	17/03/2034
पिंग	15/01/2031	धांय	26/03/2032	भ्राम	17/07/2034
धांय	15/02/2031	भ्राम	16/06/2032	भद्रि	16/12/2034
भ्राम	27/03/2031	भद्रि	25/09/2032	उल्क	16/06/2035
भद्रि	17/05/2031	उल्क	25/01/2033	सिद्ध	15/01/2036
उल्क	17/07/2031	सिद्ध	16/06/2033	संक	15/09/2036
सिद्ध	26/09/2031	संक	25/11/2033	मंग	15/10/2036
संक	16/12/2031	मंग	15/12/2033	पिंग	15/12/2036

पिंगला 0 वर्ष 7 मास 28 दिन

पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष	
24/06/1999		20/02/2000		20/02/2003	
20/02/2000		20/02/2003		20/02/2007	
	00/00/0000	धांय	21/05/2000	भ्राम	01/08/2003
	00/00/0000	भ्राम	20/09/2000	भद्रि	20/02/2004
	00/00/0000	भद्रि	19/02/2001	उल्क	20/10/2004
	00/00/0000	उल्क	21/08/2001	सिद्ध	31/07/2005
	24/06/1999	सिद्ध	22/03/2002	संक	21/06/2006
सिद्ध	21/08/1999	संक	20/11/2002	मंग	01/08/2006
संक	31/01/2000	मंग	21/12/2002	पिंग	21/10/2006
मंग	20/02/2000	पिंग	20/02/2003	धांय	20/02/2007

भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष	
20/02/2007		20/02/2012		19/02/2018	
20/02/2012		19/02/2018		19/02/2025	
भद्रि	31/10/2007	उल्क	19/02/2013	सिद्ध	02/07/2019
उल्क	31/08/2008	सिद्ध	21/04/2014	संक	20/01/2021
सिद्ध	21/08/2009	संक	21/08/2015	मंग	01/04/2021
संक	01/10/2010	मंग	21/10/2015	पिंग	21/08/2021
मंग	20/11/2010	पिंग	20/02/2016	धांय	22/03/2022
पिंग	02/03/2011	धांय	21/08/2016	भ्राम	31/12/2022
धांय	01/08/2011	भ्राम	21/04/2017	भद्रि	21/12/2023
भ्राम	20/02/2012	भद्रि	19/02/2018	उल्क	19/02/2025

संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष	
19/02/2025		19/02/2033		19/02/2034	
19/02/2033		19/02/2034		20/02/2036	
संक	30/11/2026	मंग	01/03/2033	पिंग	01/04/2034
मंग	20/02/2027	पिंग	22/03/2033	धांय	01/06/2034
पिंग	01/08/2027	धांय	21/04/2033	भ्राम	21/08/2034
धांय	31/03/2028	भ्राम	01/06/2033	भद्रि	30/11/2034
भ्राम	19/02/2029	भद्रि	21/07/2033	उल्क	01/04/2035
भद्रि	01/04/2030	उल्क	20/09/2033	सिद्ध	21/08/2035
उल्क	01/08/2031	सिद्ध	30/11/2033	संक	31/01/2036
सिद्ध	19/02/2033	संक	19/02/2034	मंग	20/02/2036

योगिनी दशा

धान्या 2 वर्ष 1 मास 24 दिन

भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष	
15/12/2036		15/12/2040		15/12/2045	
15/12/2040		15/12/2045		16/12/2051	
भ्राम	27/05/2037	भद्रि	26/08/2041	उल्क	16/12/2046
भद्रि	15/12/2037	उल्क	26/06/2042	सिद्ध	15/02/2048
उल्क	16/08/2038	सिद्ध	16/06/2043	संक	16/06/2049
सिद्ध	27/05/2039	संक	26/07/2044	मंग	16/08/2049
संक	16/04/2040	मंग	15/09/2044	पिंग	15/12/2049
मंग	26/05/2040	पिंग	25/12/2044	धांय	16/06/2050
पिंग	15/08/2040	धांय	27/05/2045	भ्राम	15/02/2051
धांय	15/12/2040	भ्राम	15/12/2045	भद्रि	16/12/2051

पिंगला 0 वर्ष 7 मास 28 दिन

धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष	
20/02/2036		20/02/2039		20/02/2043	
20/02/2039		20/02/2043		20/02/2048	
धांय	21/05/2036	भ्राम	01/08/2039	भद्रि	31/10/2043
भ्राम	20/09/2036	भद्रि	20/02/2040	उल्क	31/08/2044
भद्रि	19/02/2037	उल्क	20/10/2040	सिद्ध	21/08/2045
उल्क	21/08/2037	सिद्ध	31/07/2041	संक	01/10/2046
सिद्ध	22/03/2038	संक	21/06/2042	मंग	20/11/2046
संक	20/11/2038	मंग	01/08/2042	पिंग	02/03/2047
मंग	21/12/2038	पिंग	21/10/2042	धांय	01/08/2047
पिंग	20/02/2039	धांय	20/02/2043	भ्राम	20/02/2048

सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष	
16/12/2051		16/12/2058		16/12/2066	
16/12/2058		16/12/2066		16/12/2067	
सिद्ध	26/04/2053	संक	25/09/2060	मंग	26/12/2066
संक	15/11/2054	मंग	15/12/2060	पिंग	15/01/2067
मंग	25/01/2055	पिंग	27/05/2061	धांय	15/02/2067
पिंग	16/06/2055	धांय	25/01/2062	भ्राम	27/03/2067
धांय	15/01/2056	भ्राम	16/12/2062	भद्रि	17/05/2067
भ्राम	25/10/2056	भद्रि	26/01/2064	उल्क	17/07/2067
भद्रि	16/10/2057	उल्क	27/05/2065	सिद्ध	26/09/2067
उल्क	16/12/2058	सिद्ध	16/12/2066	संक	16/12/2067

उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष	
20/02/2048		19/02/2054		19/02/2061	
19/02/2054		19/02/2061		19/02/2069	
उल्क	19/02/2049	सिद्ध	02/07/2055	संक	30/11/2062
सिद्ध	21/04/2050	संक	20/01/2057	मंग	20/02/2063
संक	21/08/2051	मंग	01/04/2057	पिंग	01/08/2063
मंग	21/10/2051	पिंग	21/08/2057	धांय	31/03/2064
पिंग	20/02/2052	धांय	22/03/2058	भ्राम	19/02/2065
धांय	21/08/2052	भ्राम	31/12/2058	भद्रि	01/04/2066
भ्राम	21/04/2053	भद्रि	21/12/2059	उल्क	01/08/2067
भद्रि	19/02/2054	उल्क	19/02/2061	सिद्ध	19/02/2069

पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष	
16/12/2067		15/12/2069		15/12/2072	
15/12/2069		15/12/2072		15/12/2076	
पिंग	26/01/2068	धांय	17/03/2070	भ्राम	27/05/2073
धांय	26/03/2068	भ्राम	17/07/2070	भद्रि	15/12/2073
भ्राम	16/06/2068	भद्रि	16/12/2070	उल्क	16/08/2074
भद्रि	25/09/2068	उल्क	16/06/2071	सिद्ध	27/05/2075
उल्क	25/01/2069	सिद्ध	15/01/2072	संक	16/04/2076
सिद्ध	16/06/2069	संक	15/09/2072	मंग	26/05/2076
संक	25/11/2069	मंग	15/10/2072	पिंग	15/08/2076
मंग	15/12/2069	पिंग	15/12/2072	धांय	15/12/2076

मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष	
19/02/2069		19/02/2070		20/02/2072	
19/02/2070		20/02/2072		20/02/2075	
मंग	01/03/2069	पिंग	01/04/2070	धांय	21/05/2072
पिंग	22/03/2069	धांय	01/06/2070	भ्राम	20/09/2072
धांय	21/04/2069	भ्राम	21/08/2070	भद्रि	19/02/2073
भ्राम	01/06/2069	भद्रि	30/11/2070	उल्क	21/08/2073
भद्रि	21/07/2069	उल्क	01/04/2071	सिद्ध	22/03/2074
उल्क	20/09/2069	सिद्ध	21/08/2071	संक	20/11/2074
सिद्ध	30/11/2069	संक	31/01/2072	मंग	21/12/2074
संक	19/02/2070	मंग	20/02/2072	पिंग	20/02/2075

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

4	मूलांक	6
5	भाग्यांक	4
1, 4, 6, 5	मित्र अंक	3, 4, 6, 9
3, 7, 8	शत्रु अंक	1, 7, 8
22,31,40,49,58	शुभ वर्ष	24,33,42,51,60
रवि, सोम, मंगल	शुभ दिन	मंगल, सोम, गुरु
सूर्य, चन्द्र, मंगल	शुभ ग्रह	मंगल, चन्द्र, गुरु
मकर, मिथुन	मित्र राशि	मकर, मिथुन
कुम्भ, कर्क, कन्या	मित्र लग्न	तुला, मीन, वृष
लक्ष्मी	अनुकूल देवता	लक्ष्मी
मूंगा	शुभ रत्न	मोती
संगमूंगी	शुभ उपरत्न	चन्द्रमणि
मोती	भाग्य रत्न	पुखराज
ताम्र	शुभ धातु	रजत
रक्त	शुभ रंग	श्वेत
दक्षिण	शुभ दिशा	पश्चिमोत्तर
सूर्योदय के बाद	शुभ समय	संध्या
केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन	दान पदार्थ	शंख, कपूर, श्वेतचन्दन
मल्का	दान अन्न	चावल
घी	दान द्रव्य	दही

रत्न चयन

किसी भी कुंडली में दशानुसार ग्रह का उपाय एवं रत्न धारण करने से शुभत्व में वृद्धि होती है। वैज्ञानिक रूप से विशिष्ट ग्रह का मंत्रोच्चारण करने से उस ग्रह की रश्मियों की मानव शरीर के चारों ओर सुरक्षा श्रृंखला बन जाती है एवं रत्न रश्मियों को सोखकर मानव शरीर में प्रवाहित कर शुभत्व में वृद्धि करता है। अतः रत्न का बेदाग होना एवं शरीर से स्पर्श करना अत्यंत आवश्यक माना गया है।

सामान्यतया उपाय ग्रह दशा के फल की वृद्धि के लिए महादशा स्वामी का किया जाता है। उपाय में मंत्रोच्चारण, दान एवं व्रत ही प्रमुख हैं। रत्न निर्बल परंतु लग्नेश, भाग्येश या योगकारक ग्रहों का पहना जाता है। आपको कब कौन सा उपाय या रत्न धारण करना चाहिए नीचे तालिका में उसके कार्यसिद्धि क्षेत्र सहित दिया गया है। महादशाओं में रत्नों के तीन-तीन विकल्प दिए गए हैं। आपको कोई भी विकल्प उसकी कार्यसिद्धि क्षेत्र एवं क्षमता देखकर अपनी आवश्यकतानुसार पहन सकते हैं तथा अतिरिक्त उपाय भी अपनी क्षमतानुसार कर सकते हैं।

AMAN MITTAL

जीवन रत्नः	मूंगा	व्यावसायिक उन्नति, शत्रु व रोग मुक्ति, स्वास्थ्य
भाग्य रत्नः	मोती	कम खर्च, भाग्योदय
कारक रत्नः	माणिक्य	कम खर्च, व्यावसायिक उन्नति
शुभ उपरत्नः	पुखराज	सुख, धन, सन्तति सुख

VISHAKHA GARG

जीवन रत्नः	मोती	सुख, स्वास्थ्य
भाग्य रत्नः	पुखराज	व्यावसायिक उन्नति, शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय
कारक रत्नः	मूंगा	सुख, व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख
शुभ उपरत्नः	गोमेद	स्वास्थ्य, सुख

रत्न	ग्रह	रत्ती	धातु	अंगुली	दिन	समय	नक्षत्र
माणिक्य	सूर्य	4	सोना	अना	रविवार	सुबह	कृतिका, उ०फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा
मोती	चन्द्र	4	चांदी	कनि	सोमवार	सुबह	रोहिणी, हस्त, श्रवण
मूंगा	मंगल	6	चांदी	अना	मंगलवार	सुबह	मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा
पन्ना	बुध	4	सोना	कनि	बुधवार	सुबह	आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती
पुखराज	गुरु	4	सोना	तर्जन	गुरुवार	सुबह	पुनर्वसु, विशाखा, पू०भाद्रपद
हीरा	शुक्र	1	प्लेटि	कनि	शुक्रवार	सुबह	भरणी, पू०फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा
नीलम	शनि	4	पंचधातु	मध्य	शनिवार	शाम	पुष्य, अनुराधा, उ०भाद्रपद
गोमेद	राहु	5	अष्टधातु	मध्य	शनिवार	रात्रि	आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा
लहसुनिया	केतु	6	चांदी	अना	गुरुवार	रात्रि	अश्विनी, मघा, मूल

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	05/06/2000-22/07/2002
साढेसाती प्रथम ढैया	09/09/2009-15/11/2011
साढेसाती द्वितीय ढैया	15/11/2011-02/11/2014
साढेसाती तृतीय ढैया	02/11/2014-19/01/2017
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	18/01/2020-21/07/2022

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/04/2030-25/05/2032
साढेसाती प्रथम ढैया	29/06/2039-06/03/2041
साढेसाती द्वितीय ढैया	06/03/2041-02/12/2043
साढेसाती तृतीय ढैया	02/12/2043-29/11/2046
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	20/07/2049-17/02/2052

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	22/05/2059-05/07/2061
साढेसाती प्रथम ढैया	21/08/2068-25/10/2070
साढेसाती द्वितीय ढैया	25/10/2070-20/04/2073
साढेसाती तृतीय ढैया	20/04/2073-04/08/2076
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	03/01/2079-18/08/2081

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	दम्पति
साढेसाती प्रथम ढैया	सम	धनार्जन
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	कम खर्च
साढेसाती तृतीय ढैया	अशुभ	बुरा स्वास्थ्य
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	पराक्रम

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	05/06/2000-22/07/2002
साढेसाती प्रथम ढैया	09/09/2009-15/11/2011
साढेसाती द्वितीय ढैया	15/11/2011-02/11/2014
साढेसाती तृतीय ढैया	02/11/2014-19/01/2017
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	18/01/2020-21/07/2022

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/04/2030-25/05/2032
साढेसाती प्रथम ढैया	29/06/2039-06/03/2041
साढेसाती द्वितीय ढैया	06/03/2041-02/12/2043
साढेसाती तृतीय ढैया	02/12/2043-29/11/2046
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	20/07/2049-17/02/2052

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	22/05/2059-05/07/2061
साढेसाती प्रथम ढैया	21/08/2068-25/10/2070
साढेसाती द्वितीय ढैया	25/10/2070-20/04/2073
साढेसाती तृतीय ढैया	20/04/2073-04/08/2076
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	03/01/2079-18/08/2081

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	धनार्जन
साढेसाती प्रथम ढैया	सम	पराक्रम
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	सुख
साढेसाती तृतीय ढैया	अशुभ	सन्तति कष्ट
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	दम्पति

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त

किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

AMAN MITTAL

आपकी जन्मकुण्डली में घातक नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्य मान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। परिणामस्वरूप जातक जन्म से ही परिवार से अलग रहता है। माता-पिता का स्नेह अधिक नहीं मिलता है। जातक के अनेक शत्रु होते हैं। वे समय-समय पर नुकसान पहुँचाते रहते हैं। नाना-नानी या दादा-दादी का प्रायः वियोग होता है। इस योग के प्रभाव से सन्तान कभी अस्वस्थ हो जाते हैं और जातक चिन्ता व परेशानी के घेरे में आ जाता है।

इस योग के प्रभाव से जातक को व्यापार व्यवसाय में थोड़ा बहुत नुकसान उठाना पड़ता है। नौकरी व्यवसाय में भी कभी कुछ व्यवधान उपस्थित हो जाता है पर कालान्तर में वह स्वतः नष्ट हो जाता है। जातक को भागीदारी में मनमुटाव की स्थिति पैदा हो जाती है और सरकारी अधिकारियों से कभी अनबन भी हो जाती है।

इस योग के कारण जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी-कभी अशान्त या कष्टमय हो जाता है। घर में सुख-शान्ति का थोड़ा बहुत अभाव रहता है। सुख-प्राप्ति के लिए विशेष रूप से संघर्ष करना पड़ता है और मित्र गण समय पर धोखा दे जाते हैं। परिणामस्वरूप जातक को आंशिक रूप में नुकसान उठाना पड़ता है। आय में कमी रहती है। फलस्वरूप आर्थिक संकट समय-समय पर घेर लेता है। लेकिन इतना सब कुछ होने के बाद भी जातक के जीवन में एक अच्छा समय आता है जिसमें जातक को विशेष रूप से प्रसिद्धि मिलती है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।

8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।
11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
12. नीला रूमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

VISHAKHA GARG

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	शूद्र	शूद्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	मानव	मानव	2	2.00	--	स्वभाव
तारा	सम्पत	अतिमित्र	3	3.00	--	भाग्य
योनि	व्याघ्र	महिष	4	1.00	--	यौन विचार
मैत्री	शुक्र	शुक्र	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	देव	6	1.00	--	सामाजिकता
भकूट	तुला	तुला	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	अन्त्य	8	0.00	हाँ	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	20.00		

कुल : **20 / 36**

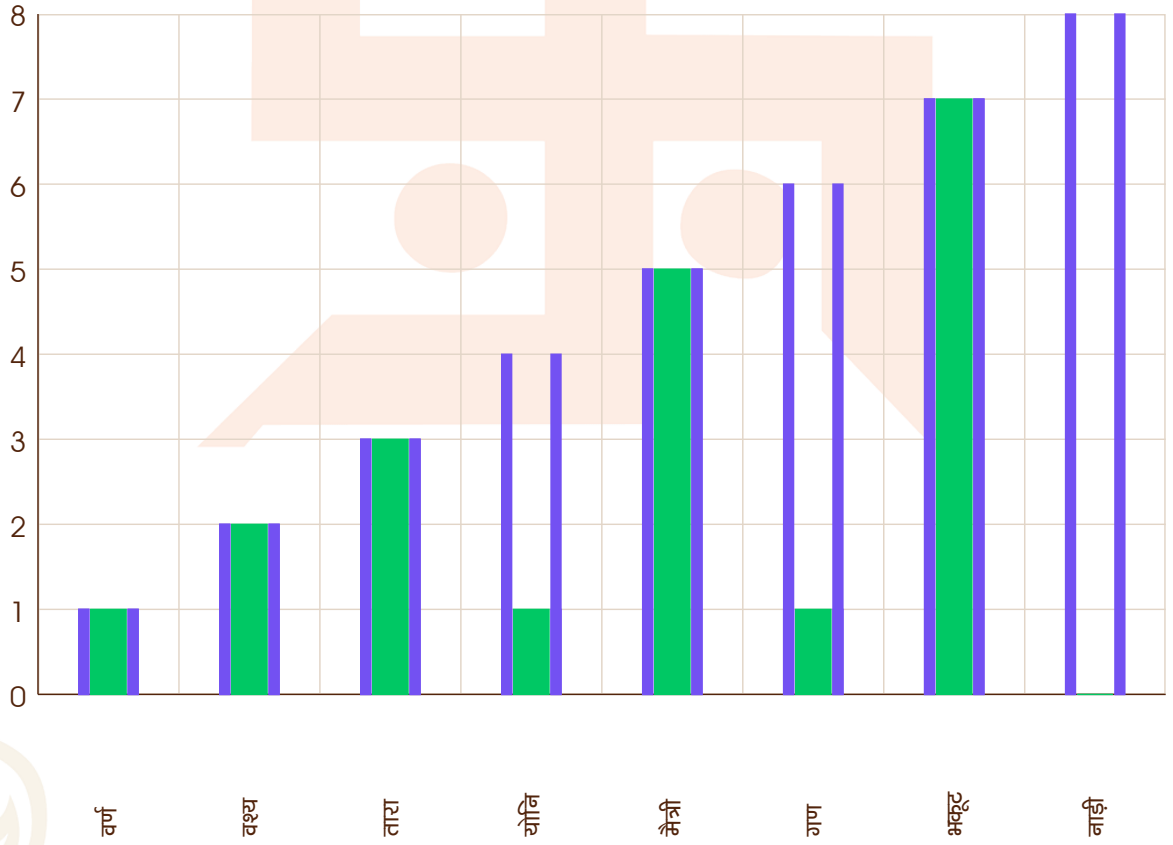

अष्टकूट मिलान

नाड़ी दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के नक्षत्र भिन्न हैं तथा राशियां एक है।

इस मिलान में नक्षत्र दोष भी विधमान है।

।ड ।छ डप्ज्ज ।स् का वर्ग सर्प है तथा VISHAKHA GARG का वर्ग मृग है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार ।ड ।छ डप्ज्ज ।स् और VISHAKHA GARG का मिलान औसत है।

मंगलीक दोष मिलान

।ड ।छ डप्ज्ज ।स् मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में दशम् भाव में स्थित है।

VISHAKHA GARG मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में चतुर्थ भाव में स्थित है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं चन्द्र VISHAKHA GARG कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि ।ड ।छ डप्ज्ज ।स् कि कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

।ड ।छ डप्ज्ज ।स् तथा VISHAKHA GARG में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

।ड ।छ डप्ज्ज ।स् का वर्ण शूद्र है तथा VISHAKHA GARG का वर्ण भी शूद्र है। इसमें दोनों का वर्ण समान है अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान है। दोनों के स्वभाव, व्यवहार, दृष्टिकोण, पसन्द-नापसन्द में समानता रहेगी। साथ ही दोनों में इतना प्रेम होगा कि लगेगा कि दोनों एक-दूसरे के लिए ही बने हों। दोनों के बीच गहरा प्रेम, सद्भाव, साहचर्य एवं पारस्परिक समझ बनी रहेगी। दोनों घर की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति को उन्नत एवं सुदृढ़ बनाने के लिए साथ मिलकर कार्य करते रहेंगे।

वश्य

।ड ।छ डप्ज्ज ।स् का वश्य द्विपद अर्थात मनुष्य है एवं VISHAKHA GARG का वश्य भी द्विपद अर्थात मनुष्य है अर्थात दोनों का वश्य समान है। अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान होगा। ।ड ।छ डप्ज्ज ।स् एवं VISHAKHA GARG दोनों के स्वभाव, गुण, व्यवहार पसंद/नापसंद तथा बुद्धि एवं ज्ञान एक समान होंगे। यह मिलान अति अनुकूल है तथा दोनों एक-दूजे के लिए ही बने हैं। दोनों के बीच प्रेम, सद्भावना एवं आपसी समझ एवं सामंजस्य की भावना बनी रहेगी। दोनों एक-दूसरे का सम्मान करेंगे तथा मिलजुलकर पारिवारिक दायित्वों का बोझ एक-दूसरे की सहायता एवं सहयोग करके साथ उठाते रहेंगे।

तारा

।ड ।छ डप्ज्ज ।स् की तारा सम्पत तथा VISHAKHA GARG की तारा अतिमित्र है। अतः तारा मिलान अनुकूल होने के कारण यह मिलान अति उत्तम मिलान है। इस मिलान के कारण उत्तम स्वास्थ्य, धन एवं समृद्धि का बनी रहेगी। इस विवाह से ।ड ।छ डप्ज्ज ।स् एवं VISHAKHA GARG दोनों के सौभाग्य के द्वार खुल जायेंगे। VISHAKHA GARG एक अच्छे साथी की भूमिका अदा करने वाली होगी तथा अपने पति की हर प्रकार से समय समय पर मदद करती रहेगी। घर में प्रेम, शांति एवं सौहार्द का माहौल बना रहेगा। इनकी संतान भी काफी अच्छी होंगी तथा जीवन में सफलता प्राप्त करती रहेंगी।

योनि

।ड ।छ डप्ज्ज ।स् की योनि व्याघ्र है तथा VISHAKHA GARG की योनि महिष है। अर्थात दोनों की योनि समान नहीं है। इन दोनों योनि के बीच सामान्य वैर है। अतः यह मिलान अच्छा मिलान न होकर बुरा मिलान ही रहेगा। जिसके कारण दोनों की रुचि एवं पसंद नापसंद अलग-अलग ही होंगी। इनके वैवाहिक एवं पारिवारिक जीवन में अक्सर लड़ाई झगड़े हो सकते हैं। कभी- कभी लड़ाई झगड़ा घरेलू हिंसा का रूप भी ले सकता है। लड़ाई झगड़े के कारण पारिवारिक माहौल तनावपूर्ण एवं कलेशपूर्वक ही रहेगा। दोनों कभी कभी एक दूसरे पर हिंसक आक्रमण भी कर सकते हैं। दोनों के बीच झगड़े का कारण बुद्धिमत्ता एवं परस्पर समझदारी की कमी ही हो सकती है। यदि समझदारी और समझबूझ से काम न लिया गया तो कुछ समय

अंतराल पर यह स्थिति मुकदमेबाजी तक भी पहुंच सकती है। इस प्रकार परस्पर प्रेम एवं सौहार्द्र की भावना का अभाव ही रहेगा। साथ ही दोनों के बीच अविश्वास की भावना भी रह सकती है। कभी-कभी धनहानि होने की भी संभावना होगी। अतः यदि दोनों परस्पर समझदारी एवं बुद्धि से काम लें तो स्थिति को सुधारा भी जा सकता है। परस्पर लड़ाई झगड़े और वैचारिक मतभेद रहने के कारण परिवार में सुख समृद्धि का अभाव ही देखने को मिलेगा। इस प्रकार वैवाहिक जीवन संघर्षपूर्ण व कलेशपूर्वक बीतने की संभावना है अतः सतर्कता बरतें।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में ।ड।छ डप्ज्ज।स् एवं VISHAKHA GARG दोनों के राशि स्वामी समान हैं। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से अति उत्तम मिलान है। ज्यातिष की दृष्टि से यदि ।ड।छ डप्ज्ज।स् एवं VISHAKHA GARG दोनों के राशि स्वामी एक ही होने के कारण कुंडली मिलान में इसे अति उत्तम माना जाता है तथा पूरे 5 अंक प्रदान किए जाते हैं। जिसके कारण दोनों में असीम प्रेम बना रहेगा तथा साथ ही दोनों जीवन के हर क्षेत्र में एक-दूसरे का सहयोग करते रहेंगे। इनका प्रयास रहेगा कि वे स्वयं को आदर्श दम्पत्ति साबित कर सकें। इनके बच्चे योग्य, आज्ञाकारी, सफल एवं यशस्वी होंगे।

गण

।ड।छ डप्ज्ज।स् का गण राक्षस तथा VISHAKHA GARG का गण देव है। अर्थात VISHAKHA GARG का गण ।ड।छ डप्ज्ज।स् के गण से श्रेष्ठ है। अतः यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। जिसके कारण ।ड।छ डप्ज्ज।स् निर्दयी, कठोर, निष्ठुर एवं झगड़ालू हो सकते हैं। साथ ही ।ड।छ डप्ज्ज।स् का VISHAKHA GARG के साथ क्रूर व्यवहार करने की संभावना बनी रह सकती है। पति-पत्नी, अक्सर कुत्ते-बिल्लियों की भांति झगड़ा कर सकते हैं एवं परिवार में अक्सर अशांति का माहौल बना रहेगा। VISHAKHA GARG हमेशा हर कदम पर समझौता करने की कोशिश करती रहेगी ताकि दोनों का संबंध बना रहे।

भकूट

।ड।छ डप्ज्ज।स् एवं VISHAKHA GARG दोनों की राशि एक समान ही है इसलिये यह अति उत्तम मिलान है। ऐसा मिलान ।ड।छ डप्ज्ज।स् एवं VISHAKHA GARG तथा परिवार के चतुर्दिक विकास के मार्ग को प्रशस्त करता है। इन्हें अनेक रूपों में ईश्वरीय कृपा जैसे - सौभाग्य, सम्पत्ति, समाज में मान-सम्मान तथा योग्य संतान आदि प्राप्त होगी।

नाड़ी

।ड।छ डप्ज्ज।स् की नाड़ी अन्त्य है तथा VISHAKHA GARG की नाड़ी भी अन्त्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी समान है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोषपूर्ण है। अर्थात यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। ।ड।छ डप्ज्ज।स् एवं VISHAKHA GARG की एक ही नाड़ी अन्त्य होने के कारण शरीर में श्लेष्मा की अत्यधिक वृद्धि होने की संभावना है। जोकि भावी दम्पत्ति के लिए खतरे की सूचक हैं। जिसके प्रभाववश संतान की मृत्यु भी संभव है। आपको श्वांस की तकलीफ,

दमा जैसी बीमारियां तथा कमजोर स्वास्थ्य का सामना करना पड़ सकता है। आपकी संतान मानसिक रोग, सुस्त विकास एवं निम्न बौद्धिक स्तर की शिकार हो सकती हैं।

मेलापक फलित

स्वभाव

।ड।छ डप्ज्ज।स् एवं VISHAKHA GARG की जन्म राशि वायुतत्व युक्त तुला राशि है। इसके प्रभाव से इन दोनों के मध्य स्वभावगत समानता रहेगी फलतः दाम्पत्य संबंधों में मधुरता होगी तथा वैवाहिक जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा । अतः शास्त्रीय दृष्टि से यह मिलान उत्तम रहेगा ।

।ड।छ डप्ज्ज।स् एवं VISHAKHA GARG की जन्म राशि का स्वामी शुक्र है। अतः ।ड।छ डप्ज्ज।स् एवं VISHAKHA GARG के संबधों में मधुरता तथा मित्रता का भाव विद्यमान रहेगा तथा एक दूसरे के प्रति सहानुभूति सहयोग तथा समर्पण का भाव होगा। वे एक दूसरे के गुणों की प्रशंसा करेंगे तथा सच्चे मित्र की तरह कमियों की उपेक्षा करके परस्पर सुख एवं शांतिमय वैवाहिक जीवन व्यतीत करेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुख में भी एक दूसरे को पूर्ण सहयोग देंगे तथा सहायता आदि करने के लिए भी सक्रिय रहेंगे।

।ड।छ डप्ज्ज।स् और VISHAKHA GARG की जन्म राशि परस्पर प्रथम - प्रथम भाव में पड़ती है। यह शास्त्रानुसार शुभ भकूट माना जाता है। इसके प्रभाव से ।ड।छ डप्ज्ज।स् और VISHAKHA GARG की प्रवृतियां तथा अन्य मानसिक समानताओं में उभयनिष्ठता रहती है जिससे जीवन में उचित सामंजस्य बनाए रखने में वे सफलता प्राप्त करते है । अतः ।ड।छ डप्ज्ज।स् और VISHAKHA GARG का परस्पर संबध मधुर रहेंगे एवं सुख तथा प्रसन्नता पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे ।

।ड।छ डप्ज्ज।स् और VISHAKHA GARG दोनों का वश्य मानव है। अतः इनकी रूचियों में समानता होगी तथा शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक स्तर पर भी आवश्यकताएं समान रहेंगी । अतः काम संबधों में एक दूसरे को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करने में समर्थ रहेंगे।

।ड।छ डप्ज्ज।स् एवं VISHAKHA GARG दोनों का वर्ण शूद्र है। अतः इनकी कार्य क्षमताएं समान रहेंगी तथा अपने कार्यो को बिना किसी चुनाव के परिश्रम एवं ईमानदारी से सम्पन्न करेंगे फलतः आर्थिक क्षेत्र में सुदृढ़ता बनी रहेगी।

धन

।ड।छ डप्ज्ज।स् की तारा सम्पत तथा VISHAKHA GARG की तारा अतिमित्र है इसके शुभ प्रभाव से ।ड।छ डप्ज्ज।स् सौभाग्यशाली तथा धनवान व्यक्ति होंगे तथा VISHAKHA GARG के भाग्य से उनकी धन सम्पति में नित्य वृद्धि होती रहेगी। भकूट का उनकी आर्थिक स्थिति पर सामान्य प्रभाव रहेगा तथा उससे आर्थिक स्थिति सामान्य ही रहेगी। साथ ही मंगल का भी आर्थिक क्षेत्र पर कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। इस प्रकार वे ऐश्वर्य एवं समृद्धि से युक्त होंगे तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन करके अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

।ड ।छ डप्ज्ज ।स् और VISHAKHA GARG को अनायास धन प्राप्ति की पूर्ण संभावना रहेगी तथा जीवन में वे समस्त भौतिक सुख संसाधनों का उपभोग करने में समर्थ रहेंगे। विशेष रूप से VISHAKHA GARG का शुभ प्रभाव इनकी आर्थिक स्थिति पर रहेगा तथा सामाजिक स्तर पर भी उनका पूर्ण सम्मान रहेगा।

स्वास्थ्य

।ड ।छ डप्ज्ज ।स् तथा VISHAKHA GARG दोनों की नाड़ी अन्त्य है। यद्यपि सामान्य रूप से यह नाड़ी दोष प्रतीत होता है परन्तु इनका जन्म भिन्न भिन्न नक्षत्रों में हुआ है तथा इनकी राशि का स्वामी एक ही ग्रह है। अतः नाड़ी दोष का इनके स्वास्थ्य पर कोई अशुभ प्रभाव नहीं होगा जिससे इनका स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा ही रहेगा। लेकिन ।ड ।छ डप्ज्ज ।स् के स्वास्थ्य पर मंगल का प्रभाव रहेगा जिससे वे रक्त या पित संबंधी परेशानी एवं हृदय संबंधी कष्ट की प्राप्ति कर सकते है। साथ ही धातु या गुप्त रोगों की भी संभावना होगी एवं काम शक्ति की अल्पता के कारण दाम्पत्य जीवन में तनाव उत्पन्न होगा। अतः मंगल के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए ।ड ।छ डप्ज्ज ।स् को नित्य हनुमानजी की पूजा करनी चाहिए तथा मंगलवार के उपवास भी रखने चाहिए।

संतान

संतति प्राप्ति की दृष्टि से ।ड ।छ डप्ज्ज ।स् और VISHAKHA GARG का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उन्हें उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब भी नहीं होगा। साथ ही बच्चों के जन्म में भी सामान्य अंतर रहेगा जिससे उनका पालन पोषण उचित ढंग से करने में आसानी रहेगी। इसके अतिरिक्त ।ड ।छ डप्ज्ज ।स् और VISHAKHA GARG के पुत्र एवं कन्या संतति की संख्या समान होगी।

प्रसव के विषय में VISHAKHA GARG के मन में पहले से ही अनावश्यक भय की अनुभूति रहेगी लेकिन VISHAKHA GARG को इस विषय में किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा सामान्य रूप से गर्भावस्था का समय व्यतीत करना चाहिए। प्रसव काल में VISHAKHA GARG को प्रसूति या अन्य किसी भी प्रकार की चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी तथा सुदंर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में सफल होंगी। साथ ही स्वयं भी स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

संतति पक्ष से ।ड ।छ डप्ज्ज ।स् और VISHAKHA GARG सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे तथा बच्चे अपने क्षेत्र में अपनी बुद्धिमता तथा योग्यता से उन्नतिमार्ग पर अग्रसर होंगे। साथ ही व्यवहार कुशलता का गुण भी उनमें विद्यमान रहेगा। माता पिता के प्रति उनका पूर्ण आदर तथा आज्ञापालन का भाव रहेगा तथा उनकी इच्छा के विरुद्ध वे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। इस प्रकार ।ड ।छ डप्ज्ज ।स् और VISHAKHA GARG का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

VISHAKHA GARG के सास से प्रायः अच्छे संबध रहेंगे। यद्यपि उनकी सास अन्य जनों के मामलों में कम ही हस्तक्षेप करने वाली महिला होंगी तथापि उनके कुछ सिद्धांत VISHAKHA GARG के लिए अनुकरणीय हो सकते है। साथ ही इन दोनों के मध्य कोई विशेष समस्या या मतभेद नहीं रहेंगे।

VISHAKHA GARG अपने कुशल व्यवहार मधुर वाणी एवं सेवा भाव से ससुर को प्रसन्न एवं सन्तुष्ट करने में सफलता प्राप्त करेंगी। साथ ही ननद एवं देवरों के साथ भी उनके संबध मित्रता पूर्ण रहेंगे तथा उनको पूर्ण सहयोग एवं स्नेह प्रदान करेंगी। अतः उनका दिल जीतने में सफल रहेंगी।

इस प्रकार VISHAKHA GARG के प्रति उनके सास ससुर का दृष्टि कोण आत्मयीता से पूर्ण रहेगा तथा घर में उसे पूर्ण सुख सुविधा तथा स्नेह प्रदान करेंगे।

ससुराल-श्री

।ड।छ डप्ज्ज।स् के अपनी सास से सामान्य संबध रहेंगे। वह अपनी ओर से उन्हें पूर्ण आदर तथा सम्मान प्रदान करेंगे तथा उनकी सेवा तथा सुख सुविधा के प्रति भी तत्पर रहेंगे। इनके मध्य कोई विशेष मतभेद नहीं रहेंगे तथा ।ड।छ डप्ज्ज।स् अवसरानुकूल सपत्नीक से मिलने जाया करेंगे जिससे संबधों में मधुरता के भाव की वृद्धि होगी।

ससुर के प्रति भी ।ड।छ डप्ज्ज।स् का आदर तथा सेवा का भाव रहेगा तथा वे भी इनको पूर्ण स्नेह तथा सहानुभूति प्रदान करेंगे साथ ही ससुर भी समय समय पर महत्वपूर्ण मामलों में ।ड।छ डप्ज्ज।स् का दिग्दर्शन करेंगे। लेकिन साले एवं सालियों के साथ संबध अच्छे नहीं रहेंगे तथा परस्पर मतभेद एवं तनाव की बहुलता रहेगी। साथ ही एक दूसरे के प्रति प्रतिद्वन्दिता तथा ईर्ष्या का भी भाव रहेगा। लेकिन यदि ।ड।छ डप्ज्ज।स् तथा वे आपस में सामंजस्य रखें तो संबधों में अनुकूलता आ सकती है। इस प्रकार ससुराल में ।ड।छ डप्ज्ज।स् के संबध सामान्यतया अच्छे ही रहेंगे।

अंक ज्योतिष फल

AMAN MITTAL

आपका जन्म दिनांक 22 है। दो एवं दो के योग से आपका मूलांक 4 होता है। मूलांक चार का स्वामी भारतीय मत से राहु तथा पाश्चात्य मत से हर्षल हेाता है। अंक दो का स्वामी चन्द्र है। चन्द्र एवं राहु या हर्षल का प्रभाव आपके जीवन में निरन्तर चलता रहेगा।

मूलांक स्वामी हर्षल या राहु के प्रभाव से आपकी प्रगति यकायक होगी। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में कई बार आपको अचानक सफलताएं प्राप्त होंगी। विज्ञान के क्षेत्र में यह सफलता देगा एवं आपका दृष्टिकोण रूढ़वादी न होते हुये वैज्ञानिक रहेगा। जीवन आपका संषर्घशील रहेगा एवं आपकी सोच जमाने से अलग रहेगी। इससे आपके विरोधी उत्पन्न होंगे। आप रीतियों में परिवर्तन पसन्द करेंगे। धन संग्रह की अपेक्षा नाम, यश आपको अधिक प्राप्त होगा। सामाजिक परिवर्तन के आप हिमायती होंगे एवं सुधारवादी विचारधारा के कारण आप सामाजिक प्रथाओं में परिवर्तन कर अच्छी ख्याति अर्जित करेंगे।

चन्द्र प्रभाव से आप में कल्पनाशीलता अच्छी रहेगी एवं शारीरिक कार्यों की अपेक्षा मानसिक कार्य के क्षेत्र को आप अधिक पसन्द करेंगे। मानसिक कार्यों में आपको अच्छी दक्षता प्राप्त होगी। चन्द्रमा का स्वभाव घटना बढ़ना है। अतः आपके जीवन में भी काफी उतार-चढ़ाव आयेंगे। कभी तो आप एकदम उच्चता का शिखर छू लेंगे और कभी एकदम रसातल की स्थिति को निर्मित करेंगे। आपके कार्य करने के ढ़ंग में जल्दबाजी रहेगी। जिससे कभी-कभी आपको भारी हानि उठानी पड़ेगी।

आपके लिये अच्छा यही रहेगा कि आप अपनी योजनाओं पर धैर्य के साथ विचार करें एवं सोच समझकर प्रारम्भ करें। इसमें थोड़ा विलम्ब अवश्य होगा लेकिन सफलता के अवसर पूरे रहेंगे। जबकि जल्दबाजी में असफलता निहित रहेगी। आपको शीतरोग, रक्तदोष, कभी-कभी परेशान कर सकते हैं।

VISHAKHA GARG

आपका जन्म दिनांक 24 है। दो तथा चार के जोड़ से 6 आपका मूलांक होता है। मूलांक 6 का स्वामी शुक्र ग्रह है। अंक दो का चन्द्र तथा अंक चार का स्वामी भारतीय मत से राहु तथा पाश्चात्य मत से हर्षल ग्रह होता है। इन तीनों ही ग्रहों का संयुक्त प्रभाव आपके ऊपर आयेगा।

मूलांक 6 के प्रभाव से आप एक आकर्षण व्यक्तित्व की धनी होंगी। दूसरों को अपनी ओर आकृष्ट करने की विशेष शक्ति आपके अन्दर रहेगी। सौन्दर्य बोध आपमें काफी रहेगा एवं विपरीत योनि के प्रति सहज आकर्षण रहेगा। आप सुन्दर स्त्री-पुरूषों के मध्य अधिक समय बिताना पसन्द करेंगी तथा स्थायी संबंध बनाना आपको रास आयेगा। ललित कलाओं में आपकी रुचि रहेगी एवं एकाधकला आपकी स्थायी हॉबी के रूप में आ जायेगी।

आपको सुन्दर सुसज्जित घर, चाहे छोटा ही हो पर करीने से सजावट के साथ हा, ऐसी आपकी पसन्द रहेगी। आप अतिथि सत्कार में कभी भी कोई कमी अपनी समझ में नहीं करेंगी। आपके स्वभाव में थोड़ी हठधर्मिता रहेगी। इस कारण आपको कभी-कभी हानि उठानी पड़ेगी। अतः कोई भी निर्णय सोच-विचारकर सलाह, मशवरा के उपरांत प्रारम्भ करना आपके हित में रहेगा। प्रतिस्पर्धा से आप में ईर्ष्या जाग्रत होगी और आप अधिक उन्नति प्राप्त करने के लिए अधिक श्रम करेंगी, जिससे प्रतिस्पर्धा में विजय प्राप्त करेंगी।

प्रतिद्वन्दिता सहन न कर सकने के कारण कभी-कभी हानि उठानी पड़ेगी। चन्द्र एवं हर्षल के प्रभाववश आपकी दिनचर्या में परिवर्तन होते रहेंगे। आपकी सामाजिक स्थिति भी घटती बढ़ती रहेगी। कभी आप बहुत सुखानुभूति करेंगी तो कई ऐसे अवसर भी आयेंगे जब मायूसी छा जायेगी। अधिक कल्पनाशीलता तथा विध्वंसक कार्यों से दूर रहना आपके लिए हितकर रहेगा।

AMAN MITTAL

भाग्यांक पाँच का स्वामी बुध ग्रह होने से आपका भाग्योदय स्व-बुद्धि विवेक द्वारा होगा। बुध वाणिज्य, व्यावसायिक कला का दाता है। गणित, लेखन, शिल्प, चिकित्सा, लेखा कार्यों में अच्छी प्रगति प्रदान करेगा। आपके अन्दर व्यापारिक कला अच्छी विकसित होगी। वाक् पटुता, तर्कशक्ति, बहुत बोलने की आदत रहेगी। आप रोजगार के क्षेत्र में नित नई स्कीम बनायेंगे जो आपकी तरक्की का मार्ग प्रशस्त करेंगी। वाणिज्य कला में आप काफी निपुण रहेंगे एवं रोजमर्रा के कार्यों को फुर्ती से पूर्ण करेंगे। दूसरों से कार्य निकलवाने में आप निपुण रहेंगे।

आपकी व्यवसायिक बुद्धि होने से धन संग्रह की ओर आप अधिक आकृष्ट रहेंगे एवं आवश्यकतानुसार वक्त-वे-वक्त के लिए धन एकत्रित करेंगे। आर्थिक क्षेत्र में आपकी स्थिति मध्यमोत्तम श्रेणी की रहेगी। कानून का आपको ठीक ज्ञान रहने से आप कार्यक्षेत्र में सभी कार्यों को बखूबी निभायेंगे तथा सामने वाले आपके ज्ञान के आगे नत-मस्तक होंगे।

VISHAKHA GARG

भाग्यांक चार का स्वामी भारतीय मतानुसार राहु एवं पाश्चात्य मत से हर्षल ग्रह को माना गया है। हर्षलग्रह के प्रभाव से आपका भाग्योदय अचानक होगा। आपके जीवन में कई कार्य ऐसे होंगे जिनमें अथक परिश्रम के बाद चाही गई अवधि में सफलता न मिले और कार्य रुक जायें। लेकिन एक दिन अचानक ही ऐसे कार्य बन भी जाया करेंगे। आप अपने कार्यक्षेत्र में परिवर्तन की हिमायती होंगी एवं पुरानी मान्यताओं में परिवर्तन करते रहना आपकी आदत में शुमार होगा। आप रूढ़ि वादिता से थोड़ी दूर तथा आधुनिक होंगी।

ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में आपका रुझान रहेगा एवं ऐसे कार्यों को संपादन करने में आनन्द आयेगा जिन्हें अन्य जन दुष्कर समझेंगे। आपके कार्यों में विस्फोटकता रहेगी तथा आप अचानक चर्चित होंगी। लेकिन यह स्थायित्व नहीं ले सकेगा। बार-बार का परिवर्तन आपकी उन्नति में बाधक रहेगा। अचानक सफलता या असफलता से आपको सबक लेना होगा कि भाग्य आपका परिवर्तनशील है। अतः आपको अधिक विस्फोटक, जोखिम युक्त कार्यों से दूर

रहना या सोच-समझकर कार्य करना भाग्य वृद्धि कारक रहेगा।

AMAN MITTAL

आपका जन्म अनुराधा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में वृश्चिक लग्नोदय काल हुआ था। जन्म के समय मेदिनीय क्षितिज पर वृश्चिक नवमांश के साथ-साथ मीन राशि का द्रेष्काण भी उदित था। आपके जन्मकालिक आकृति से यह दृश्य हो रहा है कि आप संभाव्य वैदेशिक यात्राओं सहित धन से आनंदित होकर संसारिक सुखों एवं आनन्ददायक उत्तम प्रकार का जीवन व्यतीत करेंगे। परंतु आपको एक पूर्व सूचना दी जाती है कि आपको छोटे-मोटे रूप से उछल कूद के परिणामस्वरूप हल्की मरहम पट्टी की आवश्यकता पड़ती रहेगी। अतः आप सावधानी पूर्वक अपनी दैनिक गतिविधियां रखें। अन्यथा आप के पैर में चोट, दर्द या मोच संबंधी रोग से ग्रसित हो सकते हैं। अतएव आप गाड़ी चलाते समय तथा रोड पार करते समय सावधानी बरतें। अन्यथा कोई दुर्घटना की भी आशंका बनती है।

सामान्यतः आप उत्तम शारीरिक स्वास्थ्य से आनंदित रहेंगे। परंतु वृश्चिक राशीय बिंदु से यह संभाव्य है कि आप प्रजनन संबंधी इंद्रिय रोग से संबंधित हो सकते हैं अथवा मस्तिष्क संबंधी रोग का प्रकोप भी आप पर पड़ सकता है। अतः आप समय-समय पर परिवारिक चिकित्सक से स्वास्थ्य संबंधी परीक्षण कराते रहे।

आप एक आश्चर्यजनक शक्ति से संपन्न प्राणी है तथा आप किसी भी कार्य व्यवसाय में किस प्रकार सफल हो सकते हैं, इस संबंध में आश्वस्त हैं। आप में अतिशय प्रवीनता विद्य मान हैं आप में ईश्वरीय वरदान है कि आप जन सामान्य से बातचीत करके उन्हें विश्वास-पात्र बना लेते हैं। आपके हृदय में विभिन्न प्रकार के उपचार की पद्धतियाँ विद्यमान है। आप अपने सामर्थ्य के अनुसार अन्य से सुरक्षित अपनी योजना का संपादन धीरे-धीरे कराते हैं। परंतु आप व्यवहारिता के दृष्टिकोण सच्चे अर्थों में आलसी प्रवृति के प्राणी हैं।

व्यक्तिगत रूप से आपके स्वभाव के अनुकूल कार्य-व्यवसाय हेतु कृषि कार्य एवं कृषि उत्पादन, आयल इंजिन का कार्य अथवा माइंस का कार्य उत्तम प्रतीत होता है। यदि आपकी अभिलाषा हो तो आप अभिनय कार्य व्यवसाय में भी सफल हो सकते हैं। आप यह अच्छी प्रकार जानते हैं कि किसके साथ किस प्रकार मिथ्याचरण करना चाहिए।

आप अपने परिवारिक विषयों पर यथेष्ठ समय का सदुपयोग करेंगे। आप अपने समय को शांतिपूर्वक, सुव्यवस्थित, सुखदायक वातावरण के अनुकूल बिताना चाहते है।

आप अपनी पत्नी एवं बच्चों के समय को प्रीति पूर्वक बिताने के लिए आरामदायक सभी व्यवस्था करेंगे।

आप अपने वैवाहिक जीवन को तुलनात्मक रखने के लिए अपने जीवन संगिनी का चयन हेतु उन राशि की कन्याओं को देखें जिसका जन्म वृश्चिक, मीन, कर्क, वृष, मकर अथवा कन्या राशि में हुआ हो।

साप्ताहिक दिनों में आपका भाग्यशाली दिन रविवार, सोमवार, एवं मंगलवार, है। आपके लिए वास्तव में शुक्रवार, बुधवार एवं शनिवार का दिन अनुकूल नही है।

आपके लिए अंकों में अनुकूल अंक 1, 2, 3, 4 एवं 9 अंक व्यवहार के लिए अनुकूल हैं। परंतु अंक 5, 6 एवं 8 अंक आपके लिए अनुपयुक्त है।

आपके लिए रंगों में अनुकूल रंग पीला, लाल, नारंगी एवं क्रीम रंग उपयुक्त एवं अच्छा रंग है। परंतु आपको किसी भी दशा में सफेद रंग, नीला एवं हरा रंग त्याज्य है।

VISHAKHA GARG

आपका जन्म पुष्यनक्षत्र के द्वितीय चरण में कर्क लग्नोदयकाल हुआ था। उस क्षण मेदिनीय क्षितिज पर कर्क लग्न के साथ-साथ कन्या का नवांश एवं कर्क राशि का द्रेष्काण का भी उदय हुआ था। इस जन्म की आकृति से यह स्पष्ट होता है कि आपका जीवन आशानुरूप फलदायी होगा।

आप विश्वासी विलक्षण बुद्धि की कठिन परिश्रमी एवं दृढ़निश्चयी प्राणी है। आप निःसन्देह धन प्राप्ति की आकांक्षी हैं। परन्तु इसका अर्थ नहीं कि आप विश्वशघाती हैं। क्योंकि आप कभी भी किसी के साथ धोखा धड़ी अथवा कपटपूर्ण व्यवहार नहीं करेगीं। आप मनोयोग पूर्वक, कठिन श्रम करके यथेष्ठ धन सम्पत्ति उपार्जित करेंगी। आप आर्थिक रूप से श्रेष्ठ सौभाग्यशाली हैं। आप सदैव (एक समान) यात्रा करके अनेक तीर्थस्थल का परिदर्शन करेंगी। आप आस्तिक हैं तथा आपको पूर्ण विश्वास है कि ईश्वर सर्वशक्तिमान है। आप धर्म ग्रन्थों का अध्ययन कर धर्म के सम्बंध में पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर सार्वजनिक सेवक के रूप में प्रस्तुत रह कर, सेवा कर्म करेंगी।

आप पूर्णरूपेण आश्वस्त हैं कि आप धर्म मार्ग पर चलकर, विश्व में सफलता प्राप्त करेंगी। आप 36 वें वर्ष से बहुत बड़ी भाग्यशाली होंगी।

आप गौरवर्ण की लम्बी दीर्घकाय महिला होंगी। आपके शरीर का उपरी भाग निचले भाग की अपेक्षा बहुत उन्नत एवं प्रभावशाली होगा। आपकी आकृति (स्वरूप) विस्तृत बड़ा मुँह, सुन्दर दाँतों से परिपूर्ण होगा।

बल्कि आपके जीवन के प्रारम्भ में कुछ दिनों तक आप शारीरिक रूप से सर्वोत्कृष्ट हो जाएंगी। परन्तु जीवन में एक लघु व्यवधान विद्यमान रहेगा। क्योंकि आपका क्षणिक उद्वेग एवं तनावपूर्ण मानस संभवतः हिस्टिरिया, मूर्छा एवं बेहोशीपन रोग को आमंत्रित कर सकता है। इसके विरूद्ध गम्भीर रूप से आपको सतर्कता बरतनी होगी। इसके अतिरिक्त आपको खान-पान पर भी नियंत्रण रखना पड़ेगा। क्योंकि आप अधिक भोजन करने वाली पेटू महिला हैं। आपको हर दशा में मध्यपान के उपयोग एवं लालच से बचना होगा।

आपका मैत्री का क्षेत्र विस्तृत होगा। वे लोग आपकी सामान्य प्रतिभात्मक मनोवृत्ति के अनुरागी अर्थात् प्रशंसक होंगे। वे लोग हर दशा में आपको सहयोग एवं समर्थन प्रदान कर,

आपके सुन्दर जीवन के प्रति शुभकांक्षी रहेंगे।

आप में बहुत सुन्दर गुण विद्यमान है अर्थात् विश्वसनीय, सतर्क तत्पर एवं कर्मठ कार्य कर्त्ता हैं। आप अविश्वसनीयता को त्याग कर लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करेंगी। ऐसा संभव है कि आप आंशिक परिवर्तित होकर उत्तम मार्ग की अनुगामी होंगी।

आप अपने पति के प्रति पूर्णतः समर्पित महिला है। परन्तु आप परिवार नियोजन में विश्वास नहीं करती हैं। आप निःसन्देह अपने पति से प्यार करती हैं। परन्तु आप बाहरी मामलों में कोई हस्तक्षेप करना नहीं चाहती ताकि अपने पति के साथ कोई गलती न हो जाए। आपके लिए उत्तम तो यह है कि आप उत्तेजनात्मक प्रवृति का परित्याग कर दें। अन्यथा परिणाम स्वरूप घर परिवार में अनुपयुक्त वैमनस्यता हो सकता है। यदि आपको अपने पति के सम्बंध में विचार करना हो तो यह देखें कि उसका जन्म लग्न या राशि वृश्चिक या मीन हो तो समझ ले कि आप उस लड़के के साथ सामंजस्य स्थापित कर सकते हैं।

सामन्यतया कर्क राशि प्राणी की प्रवृति एवं कार्यकलाप व्यवसायिक होती है। इनके लिए व्यवहारणीय पेशा वृत्ति नौसेना, जहाजरानी कार्य, सिंचाई, नहर एवं पुल निर्माण विभाग आदि अनुकूल होते हैं। ये स्व निर्मित आत्मावलम्बी प्राणी होती हैं। यदि ये चाहें तो अपनी प्रतिष्ठा का विस्तार कर विश्वसनीय मंत्री या एक प्रशासनिक पदाधिकारी तक हो सकती हैं।

आपके लिए साप्ताहिक दिनों में शुक्रवार एवं शनिवार पूर्ण आनन्द प्रदायक नही होगा। मंगलवार, गुरुवार एवं सोमवार का दिन सफलता प्रदायक होगा। बुधवार का दिन चिन्तनीय एवं व्ययकारी होगा। परन्तु रविवार का दिन सचेत रहने योग्य है।

आपके लिए क्रीम, श्वेत, पीत एवं लाल रंग का व्यवहार उत्तम है परन्तु, हरा एवं ब्लू रंग सर्वथा त्यागनीय है। आपके लिए अंक 4 एवं 6 अंक अनुकूल है जबकि अंक 3 एवं 5 अंक अनुपयुक्त हैं।

AMAN MITTAL

आपका जन्म विशाखा नक्षत्र के द्वितीय चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्म राशि तुला तथा राशि स्वामी शुक्र होगा। नक्षत्रानुसार आपका वर्ण शूद्र, वर्ग सर्प, नाड़ी अन्त्य, योनि व्याघ्र तथा गण राक्षस होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रथम अक्षर "तु" या "तू" अक्षर से प्रारम्भ होगा।

आप हमेशा अपनी स्त्री के वश में रहने वाले पुरूष होंगे तथा अधिकांश सांसारिक कार्यों को उसी के आदेश तथा सलाह के अनुसार सम्पन्न करें। उसकी आज्ञा के बिना आप किसी भी सांसारिक कार्य को स्वयं सम्पन्न करने में अपने आपको असमर्थ सा महसूस करेंगे। आपकी प्रवृति अभिमानी होगी तथा यदा कदा अनावश्यक रूप से इस प्रवृति का समाज में प्रदर्शन करेंगे। अतः अन्य लोगों का आपके प्रति विशेष लगाव नहीं रहेगा सभी आपको उपेक्षित करना चाहेंगे। शत्रुओं का नाश करने में आप हमेशा सक्षम रहेंगे। वे आपसे काफी भयभीत तथा प्रभावित रहेंगे। आपका स्वभाव अत्याधिक कोधी होगा। छोटी छोटी बातों में आप अकारण ही उत्तेजित हो जाएंगे इससे कई बार आपको आथिक तथा सामाजिक तिरस्कार भी सहन करना पड़ सकता है।

गर्वी दारवशो जितारिरधिक कोधी विशाखोद्भवः।
जातक परिजातः

आपके मन में दूसरों के प्रति कभी कभी ईर्ष्या की भावना भी विद्यमान रहेगी। यदि कोई भी व्यक्ति आपकी अपेक्षा कोई अच्छा कार्य या कोई उपलब्धि प्राप्त करता हैं तो आपके मन में उसके प्रति द्वेष भावना उत्पन्न हो जाएगी। तथा अपनी सीमा से अधिक वस्तुओं को प्राप्त करने का लालच आपके अर्न्तमन में हमेशा विद्यमान रहेगा। अतः मानसिक रूप से आप हमेशा आन्दोलित से रहेंगे। आपका शरीर कान्तिमय तथा आकर्षक रहेगा एवं बोलने में आप दक्षता प्राप्त करेंगे। अपनी इसी वाक्पटुता के आधार पर आप अपने पूर्ण कार्य सिद्ध करने में सफल रहेंगे।

ईर्ष्युर्लुब्धोः द्युतिमान्वचनपटुः कलहकृद्विशाखासु।।
बृहज्जातकम्

आप नैसर्गिक रूप से धामिक भावनाओं से युक्त रहेंगे तथा देवताओं को प्रसन्न करने के लिए नित्य हवनादि क्रियाओं को सम्पन्न करते रहेंगे। आपकी मित्रता का क्षत्रे विस्त्रत नहीं रहेगा तथा आपके वास्तविक भिन्न अल्प सख्या में ही रहेंगे।

सदानुरक्तोग्निसुरक्रियायां धातुक्रियायामपि चोग्रसोम्यः।
यस्य प्रसूतौ च भवेद्विशाखा सखा न कस्यापि भवेन्मनुष्यः।।
जातकाभरणम्

अल्प ही आप हृदय से कठोर रहेंगे तथा किसी के भी प्रति आपके मन में करूणा का भावना रहेगा। आपकी इस कठोरता से लोग आपसे प्रसन्न नहीं रहेंगे साथ ही अन्यजनों से भी आपके परस्पर मित्रतापूर्ण घनिष्ठ संबंध स्थापित रहेंगे।

अतिलुब्धोडतिमानी च निष्ठुरः कलहप्रियः।
विशाखायां नरो जातः वैश्याजन रतो भवेत।।
मानसागरी

VISHAKHA GARG

आप स्वाती नक्षत्र के तृतीय चरण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी जन्मराशि तुला तथा राशि स्वामी शुक्र होगा। नक्षत्रानुसार आपकी योनि महिष, वर्ग मृग, वर्ण शूद्र, गण देव तथा नाड़ी अन्त्य होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भिक अक्षर "रो" से प्रारम्भ होगा।

आप स्वभाव से ही सहनशील प्रवृति की महिला होंगी। आप कष्टों को सहन करने की क्षमता से परिपूर्ण रहेंगी। व्यापारिक या क्रय विक्रय संबंधी कार्यों में आप अत्यन्त ही प्रवीण रहेंगी तथा अपनी आजीविका अर्जन में इसका प्रधान रूप से प्रयोग कर सकेंगी। आप के हृदय में दया एवं करूणा की भावना भी सर्वथा विद्यमान रहेंगी तथा यथाशक्ति दीन दुःखियों को आप समय समय पर सेवा तथा सहयोग प्रदान करती रहेंगी। आपकी वाणी अत्यन्त ही प्रिय एवं मधुर रहेगी जिससे अन्य लोग भी आपसे प्रभावित रहेंगे तथा हृदय से आपका सम्मान भी करेंगे। धार्मिकता की भावना से भी आप युक्त रहेंगी तथा अपने जीवन काल में प्रयत्नपूर्वक इसका निष्ठा पूर्वक पालन करेंगी।

दान्तो वणिक्कृपालु प्रियवाग्धर्माश्रितः स्वातौ।
बृहज्जातकम्

देवता तथा ब्राहमणों के आप श्रद्धालु एवं भक्त रहेंगी तथा हमेशा उनके प्रिय कार्य अर्थात् धर्माचरण में रत रहेंगी। आप एक भाग्यशाली महिला होंगी तथा नाना प्रकार के सुखों का अपने जीवन में प्रसन्नतापूर्वक उपभोग करेंगी। साथ ही धनैश्वर्य एवं वैभव का भी आप के पास अभाव नही रहेगा। इनसे आप हमेशा परिपूर्ण रहेंगी। आपकी बुद्धि में तीव्रता का अभाव रहेगा तथा मध्यम बुद्धि रहेगी।

स्वात्यां देवमहीसुरप्रियकरो भोगी धनी मन्द धीः।
जातकपरिजातः

देखने में आप अत्याधिक सुन्दर रूप वाली होंगी तथा आपके सौन्दर्य से सभी लोग आपसे आकर्षित तथा प्रभावित रहेंगे। साथ ही आपका मुखमंडल तेज गुण से प्रकाशित रहेगा। समाज में अन्य जनों मित्रतापूर्ण संबंध स्थापित करके इनसे पूर्ण आदर तथा सहयोग प्राप्त करेंगी। साथ ही आप हमेशा प्रसन्न चित्त रहेंगी तथा दुःखादि को आप चेहरे से अधिक प्रदर्शित नहीं करेंगी। इसके अतिरिक्त आपको प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सरकार से धन प्राप्त होगा

जिसे आप सुखपूर्वक उपभोग करेंगी।

कन्दर्परूपः प्रभयासमेतः कान्तापरप्रीति रतिप्रसन्नः।
स्वाती प्रसूतौ मनुजस्य यस्य महीपति प्राप्त विभूतियुक्तः।।
जातकाभरणम्

आप नाना प्रकार के शास्त्रों के ज्ञान प्राप्त करने में सफल रहेंगी तथा समाज में एक विदुषी के रूप में हमेशा आदरनीय रहेंगी। धर्मानुपालन में भी आपकी प्रकृति रहेंगी तथा पुरूषवर्ग की आप प्रिय रहेंगी। परन्तु स्वभाव में आपकी कृतज्ञता का बाहुल्य रहेगा। आपका आचरण शुद्ध रहेगा तथा अपने सम्भाषण में हमेशा प्रिय वाणी का ही उपयोग करेंगी साथ ही देवताओं के प्रति आपके मन में आस्था विद्यमान रहेगी।

विदग्धो धार्मिकश्चैव कृपणः प्रियवल्लभः।
सुशीलो देवभक्तश्च स्वातौ जातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

AMAN MITTAL

तुला राशि में जन्म लेने के कारण आप शरीर तथा मुख से सन्दर परिलक्षित होंगे। आपकी आखें बड़ी बड़ी होगी तथा नासिका भी उन्नत रहेगी। विविध प्रकार के वाहनादि साधनों से सुसम्पन्न रहेंगे तथा भूमि एवं वाहनों से आप पूर्ण शक्तिशाली होकर इनसे पर्याप्त मात्रा में लाभार्जन करेंगे। जिससे आप धन वैभव तथा ऐश्वर्य से पुरूष कहलाएंगे। इनका आपके जीवन में कभी भी अभाव नहीं रहेगा। पराक्रम की आप में बहुलता रहेगी तथा समाज के सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। स्त्री के आप सम्पूर्ण रूप से वश में रहेंगे तथा उसी के निर्देशानुसार अपने ग्रहस्थ जीवन को सम्पन्न करेंगे। कई कार्यों के आप ज्ञाता होंगे तथा उन्हे सम्पन्न करने में दक्ष रहेंगे। देवता तथा ब्राहमणों के आप भक्त रहेंगे। इनके प्रति आपके मन में पूर्ण आस्था रहेगी। धन धान्य को संग्रह करने में भी आप चतुर होंगे। बन्धुवर्ग के आप विशेष हितकारी रहेंगे तथा हमेशा उनके हितकार्यों को करने में तत्पर रहेंगे।

उन्नासो व्यायताक्षः कृशवदनतनुर्भूरिदारो वृषाढ्यो।
गो भूम्यः शौचकरो वृषसमवृषणो विक्रमज्ञः क्रियेशः।।
भक्तो देवद्विजानां बहुविभवयुतः स्त्रीजितो हीनदेहो।
धान्यादानैकबुद्धिस्तुलिनि शशधरे बन्धुवर्गोपकारी।।
सारावली

आप देवताओं ब्राहमणों तथा सज्जनों की सेवा में हमेशा तत्पर रहेंगे एवं इनके प्रति अपने मन में पूर्ण श्रद्धाभाव रखेंगे। आप उच्चकोटि के विद्वान होंगे तथा शुद्धता पूर्ण जीवन व्यतीत करेंगे। आप भ्रमण प्रिय रहेंगे तथा अपना अधिकाँश समय यात्रादि पर ही व्यतीत करेंगे। खरीदने तथा बेचने अथवा व्यापारिक कार्यों में आप अत्यन्त ही दक्षता का परिचय देंगे। समाज में आप देववाची शब्द के द्वितीय नाम से प्रसिद्धि प्राप्त कर सकते हैं। अपने सम्बन्धी तथा बन्धुओं के आप परम सहयोगी तथा उपकारी होंगे परन्तु यही लोग आपकी बाद में अपेक्षा भी करेंगे। साथ ही धनधान्यादि से भी आप हमेशा परिपूर्ण रहेंगे।

देवब्राहमणसाधुपूजनरतः प्राज्ञः शुचिः स्त्रीजितः।
प्रांशुश्चोन्नतनासिका कृशचलदगात्रो डटनोडर्थान्वितः।।
हीनाङ्गः क्रयविक्रयेषु कुशलो देवद्विनामा सरूक्।
बन्धूनामुपकारकृद्वि रूषतस्त्यक्तस्तु तैः सप्तमे।।
बृहज्जातकम्

आप एक धैर्यवान व्यक्ति होंगे तथा अधिकांश महत्वपूर्ण कार्यों को धैर्यपूर्वक ही सम्पन्न करने के लिए यत्नशील रहेंगे। शीघ्रता पूर्वक कार्य करना आपकी प्रकृति के विरूद्ध रहेगा। आप पूर्ण रूप न्याय प्रिय होंगे तथा मन से न्याय करना पसन्द करेंगे। आपकी इसी प्रवृति को मध्य नजर रखते हुए अन्य लोग अपने विवादों को सुलझाने के लिए आपको मध्यस्थ या पंच मनोनीत करेंगे। साथ ही आपकी संतति भी अल्प मात्रा में रहेगी एवं भाग्योदय

भी काफी समय बाद होगा।

चलत्कृशाङ्गो डुतोडतभक्तो देवद्विजानामटनोद्विनामा।
प्रांशुश्च दक्षः क्रयविक्रयेषु धीरो डदयस्तौलिनि मध्यवादी।।
फलदीपिका

आप मध्यम कद के पुरूष होंगे तथा राज्य के उच्च अधिकारी तथा पदाधिकारी वर्ग को प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रखने की कला में चतुर रहेंगे तथा इनसे पूर्ण सहयोग तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। आप कभी कभी अत्याधिक मात्रा में बोलने लगेंगे जिससे लोग आपसे असन्तुष्ट से रहेंगे। इसके अतिरिक्त ग्रह नक्षत्रादि शास्त्र अथवा ज्योतिष शास्त्र का भी आपको ज्ञान रहेगा। बन्धु वर्ग एवं सेवको के प्रति हमेशा आपके मन में अनुराग की भावना विद्यमान रहेगी।

भवति शिथिलगात्रो नातिदीर्घो न खर्वी।
जनपति परितोषी बान्धवेभ्यः प्रदाता।।
अतिशय बहुभाषी ज्योतिषां ज्ञान युक्तो।
भवति सः तुलाराशि बन्धुभृत्यानुरागी।।
जातक दीपिका

कभी कभी आप सर्वदा कुअवसर पर अपने क्रोध का प्रदर्शन करेंगे जिससे आपके आथिक या सामाजिक हानि उठानी पड़ेगी इससे आप अत्यन्त दुःख की अनुभूति करेंगे। आपकी वाणी अत्यन्त ही मधुर एवं कार्य प्रिय होगी जो अन्य जनों को सुनने में अच्छी लगेगी। साथ ही दीन दुःखियो के प्रति आपके मन में दयालुता का भाव भी रहेगा तथा अवसरानुकूल यथा शक्ति अपनी इस प्रवृति का जीवन में यत्न पूर्वक पालन करेंगे। आपके नेत्र भी चंचलता से युक्त रहेंगे। आपके धनागमन में अस्थिरता रहेगी कभी अत्याधिक धनागमन होगा तथा कभी अत्यल्प मात्रा में विद्यमान रहेगा। इससे आप काफी असुविधा का सामना करेंगे। घर के अन्दर आप अत्याधिक बल का अहसास करेंगे परन्तु बाहर एक दम कमजोर बन जाएंगे। मित्रो के आप प्रिय रहेंगे तथा विदेश में भी प्रवास कर सकेंगे।

अस्थानरोषणो दुःखी मृदुभाषी कृपान्वितः।
चलाक्षश्चललक्ष्मीको गृहमध्येळति विक्रमः।।
वाणिज्य दक्षो देवानां पूजको मित्रवत्सलः।
प्रवासी सुहृदयमिष्टस्तुला जातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

नाना प्रकार के वाहनों से आप युक्त रहकर जीवन में सहर्ष उनका उपभोग करेंगे। आप एक दानशील व्यक्ति होंगे तथा समय समय पर अपनी इस प्रवृति का अनुपालन करते रहेंगे। स्त्री के आप अतिप्रिय होंगे तथा उससे पूर्ण सम्मान तथा सहयोग की प्राप्ति करेंगे। साथ ही सम्पूर्ण जीवन वैभव से परिपूर्ण रहेगा।

वृषतुरंग विक्रमविक्रमनद्विजसुरार्चनदानमना पुभान्।
शशिनि तौलिगते बहुदारभाग्विभवसंभव संचित विक्रमः।।

आपके लिए माघ मास, चतुर्थी, चतुर्दशी तिथियां, नवमी, शतमिषा नक्षत्र, शुक्ल योग, तैतिल करण, गुरूवार, चतुर्थ प्रहर तथा धनु राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फलदायक हैं। अतः आप 15 जनवरी से 14 फरवरी के मध्य 4,9,14 तिथियों, शुक्ल योग, शतमिषा नक्षत्र, तथा तैतिल करण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवग्रहनिर्माण, क्रयविक्रयादि महत्वपूर्ण कार्यों को प्रारम्भ न करे अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही गुरूवार चतुर्थ प्रहर तथा धनु राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा के प्रति भी सर्तक रहे।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक अशान्ति, शारीरिक परेशानी, व्यापार में हानि, नौकरी या प्रोन्नति में बाधाएं उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देवी लक्ष्मी जी की आराधना करनी चाहिए तथा शुक्रवार के व्रत रखने चाहिए। साथ ही हीरा, सोना, श्वेत वस्त्र, श्वेत चन्दन, चावल इत्यादि पदार्थो का किसी सुपात्र को श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए इससे आपके अशुभ फल कम होंगे। इसके अतिरिक्त शुक्र के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 20000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए।

ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।
मंत्र- ऊँ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।

VISHAKHA GARG

तुला राशि में उत्पन्न होने के कारण आप शरीर तथा मुख से पतली रहेंगी। आपकी आखें बड़ी बड़ी तथा नाक ऊंची होगी। आपके पास वाहनों का कभी भी अभाव नही रहेगा तथा नाना प्रकार के वाहनों से आप सर्वदा युक्त रहेंगी। समाज में अन्य जनों से आपके घनिष्ठ संबंध रहेंगे। वाहन तथा जायदाद आदि से आप बलवती रहेंगी तथा इनसे पूर्ण आथिक सहायता को प्राप्त करेंगी। आप एक पराक्रमी महिला होंगी जिससे समाज में आप अपना पूर्ण प्रभाव स्थापित करने में सफल रहेंगी। सभी सामाजिक जन भी आपको उचित सम्मान तथा आदर प्रदान करेंगे। आप एक धनैश्वर्य से सम्पन्न वैभवशाली महिला भी होंगी तथा समस्त सुखों का आनन्दपूर्वक जीवन में उपभोग करेंगी। पति को आप पूर्ण रूप से अपने नियंत्रण में रखेंगी तथा कोई भी कार्य आज्ञा तथा निर्देश के बिना सम्पन्न नही होगा। कार्य करने में आप हमेशा सक्रिय रहेंगी तथा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति श्रद्धाभाव रखेगी तथा बन्धु वर्ग के उपकार करने में आप तत्पर रहेंगी।

उन्नासो व्यायताक्षः कृशवदनतनुर्भूरिदारो वृषाढ्यो।
गो भूम्यः शौचकरो वृषसमवृषणो विक्रमज्ञः क्रियेशः।।
भक्तो देवद्विजानां बहुविभवयुतः स्त्रीजितो हीनदेहो।
धान्यादानैकबुद्धिस्तुलिनि शशधरे बन्धुवर्गोपकारी।।
सारावली

समाज में देवता, ब्राहमण तथा सज्जन पुरूषों की सेवा करने में सदैव तत्पर

रहेंगी। साथ ही आप एक महान विदुषी के रूप में समाज में मान सम्मान तथा ख्याति भी अजित करेंगी। आप अपना जीवन शुद्धता से युक्त होकर व्यतीत करने की इच्छुक रहेंगी। आपका शरीर सुवासित रहेगा घूमने फिरने की आप अत्यन्त शौकीन रहेंगी तथा अपने अधिकांश समय को भ्रमणादि में ही व्यतीत करेंगी। किसी भी प्रकार वस्तुओं के क्रयविक्रय कार्य में आप अत्यन्त दक्ष रहेंगी। आप शरीर से व्याकुलता का अनुभव करेंगी। आप तो अपनी ओर से बन्धु वर्ग की भलाई करेंगी परन्तु ये ही लोग बाद में आपकी उपेक्षा करेंगे।

देवब्राहमणसाधुपूजनरतः प्राज्ञः शुचिः स्त्रीजितः।
प्रांशुश्चोन्नतनासिका कृशचलदगात्रो डटनोडर्थान्वितः।।
हीनाङ्गः क्रयविक्रयेषु कुशलो देवद्विनामा सरूक्।
बन्धूनामुपकारकृद्वि रूषतस्त्यक्तस्तु तैः सप्तमे।।
बृहज्जातकम्

आप एक धैर्यशाली महिला होंगी तथा अपने अधिकांश कार्यकलापों को धैर्यपूर्वक ही सम्पन्न करेंगी। आप की न्याय प्रियता समाज में प्रसिद्ध रहेंगी अतः लोग आपको अपने विवादों का समाधान करने में आपको मध्यस्थ या पंच बनाएंगे आप अपनी इस कर्तव्य का ईमानदारी से निर्वाह करेंगी। इससे लोगों के मन में आपके प्रति अधिक सम्मान तथा आदर का भाव बढेगा। आपकी पुत्र संतति अल्प रहेगी तथा भाग्योदय देर से ही होगा।

चलत्कृशाङ्गो डुतोडतभक्तो देवद्विजानामटनोद्विनामा।
प्रांशुश्च दक्षः क्रयविक्रयेषु धीरो डदयस्तौलिनि मध्यवादी।।
फलदीपिका

आपका शारीरिक कद मध्यम रहेगा। आप सरकारी पदाधिकारियों को प्रसन्न करने की कला में दक्ष होंगी तथा उनसे पूर्ण सहयोग तथा आदर की प्रप्ति करेंगी। आप अपने संबंधियो तथा बन्धुओं का कुछ न कुछ सहयोग हमेशा प्रदान करती रहेंगी। कभी कभी आप अनावश्यक रूप से अधिक बोलना पसन्द करेंगी इससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में न्यूनता आएगी। ज्योतिष अथवा ग्रह नक्षत्र संबंधी शास्त्रों की आप विदुषी रहेंगी इसके साथ ही बंधुवर्ग तथा सेवक जनों के लिए आपके मन में स्नेह भाव विद्यमान रहेगा।

भवति शिथिलगात्रो नातिदीर्घो न खर्वी।
जनपति परितोषी बान्धवेभ्यः प्रदाता।।
अतिशय बहुभाषी ज्योतिषां ज्ञान युक्तो।
भवति सः तुलाराशि बन्धुभृत्यानुरागी।।
जातक दीपिका

कभी कभी आप कुअवसर पर अपने क्रोध को प्रदर्शित करेंगी इससे बाद में आपको दुःखानुभूति होगी। आपकी वाणी प्रिय तथा मधुरता से युक्त रहेंगी। आप दयावान तथा करूणाशील रहेंगी तथा दीनदुःखियों की सेवा एवं सहायता करने के लिए सर्वथा तत्पर रहेंगी। आपकी आखों में भी चंचलता का आधिक्य रहेगा। आप स्वयं को घर के अन्दर अत्यन्त ही

बलवती समझेगी परन्तु बाहर जाकर अत्यन्त ही कमजोरी का अहसास करेंगी। आपके पास धनागम में सर्वथा अस्थिरता रहेंगी कभी तो अत्याधिक मात्रा में धन प्राप्त होगा तो कभी अल्प मात्रा में। इससे आप जीवन में आथिक विषमता की अनुभूति करेंगी। व्यापारिक कार्यो में आप हमेशा रूचिशील तथा सफलता प्राप्त करेंगी। बन्धु वर्ग तथा मित्रों के आप प्रिय रहेंगे एवं विदेश में भी निवास कर सकेगी।

अस्थानरोषणो दुःखी मृदुभाषी कृपान्वितः।
चलाक्षश्चललक्ष्मीको गृहमध्येऽति विक्रमः।।
वाणिज्य दक्षो देवानां पूजको मित्रवत्सलः।
प्रवासी सुहृदयमिष्टस्तुला जातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

आप जीवन में सर्वथा नाना प्रकार के शास्त्रो के ज्ञान से सुसम्पन्न रहेंगी तथा दानशीलता की प्रकृति भी आपके मन में विद्यमान रहेंगी साथ ही अन्य पुरूषों से भी आपके गहन संबंध रहेंगे।

वृषतुरंग विक्रमविक्रमनद्विजसुरार्चनदानमना पुभान्।
शशिनि तौलिगते बहुदारभाग्विभवसंभव संचित विक्रमः।।
जातकाभरणम्

आपके लिए माघ मास, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी तिथियां, शतभिषा, शुक्ल योग, तैतिल करण, गुरूवार, चतुर्थ प्रहर तथा मीन राशिस्थ चन्द्रमा अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 जनवरी से 14 फरवरी के मध्य 4,9,14 तिथियों में शतभिषा नक्षत्र, शुक्लयोग तथा तैतिल करण में कोई भी शुभकार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि महत्वपूर्ण कार्यो को प्रारम्भ न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ गुरूवार, चतुर्थ प्रहर एवं मीन राशिस्थ चन्द्रमा को भी शुभ कार्यो में वर्जित ही रखें तथा इन दिनो तथा समय में शारीरिक सुरक्षा के प्रति भी विशेष रूप से सावधान रहें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक उद्विग्नता, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति प्राप्त करने में असफलता तथा अन्य शुभकार्यो में सफलता प्राप्त नही हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपनी इष्ट देवी लक्ष्मी जी की श्रद्धापूर्वक उपासना करनी चाहिए तथा शुक्रवार के व्रत रखने चाहिए। साथ ही हीरा, सोना, श्वेत वस्त्र, श्वेत पुष्प, श्वेत चन्दन चावल, दूध इत्यादि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक किसी सुपात्र को दान करना चाहिए। ऐसा करने से आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलो में भी न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त शुक्र के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 20000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए।

ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।
मंत्र- ऊँ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।

पाया विचार

AMAN MITTAL

आपका जन्म लौहपाद में हुआ है यद्यपि लौहपाद में उत्पन्न जातक जीवन में विभिन्न प्रकार से रोगी दुःखी, धन एवं सुख संसाधनों से हीन रहकर जीवन यापन करते है। परन्तु आपकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा की स्थिति शुभ राशि में है। अतः आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फलों की प्राप्ति ही अधिक मात्रा में होगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा सामान्य जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा। आप एक दानशील व्यक्ति होंगे तथा दान देने के लिए सदैव उद्यत रहेंगे। आप एक गुणवान पुरूष होंगे तथा अपने सद्गुणों से अन्य जनों को प्रभावित करेंगे। आप शुभ कार्यों पर अधिक व्यय करेंगे। अनावश्यक या अन्य अशुभ कार्यों पर व्यय करना आपको अच्छा नहीं लगेगा। इसके अतिरिक्त जीवन में सर्वप्रकार के भौतिक एवं विलासमय सुखसंसाधनों से आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। इन्ही विलासमय वस्तुओं पर आपका व्ययाधिक होता रहेगा।

VISHAKHA GARG

आप लौहपाद में उत्पन्न हुई हैं। यद्यपि लौहपाद में उत्पन्न जातक प्रायः रोगी धनाभाव से व्याकुल, सुखसंसाधनों से हीन तथा अन्य प्रकार से जीवन में दुःख प्राप्त करता है। परन्तु आपकी कुडंली में चन्द्रमा शुभ राशि में स्थित है। अतः आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फलों की ही अधिक प्राप्ति होगी। आप जलोत्पन्न पदार्थो से नित्य लाभार्जन करने में सफल रहेंगी। आप धनवान महिला होंगी तथा चल अचल सम्पतियों की स्वामिनी होंगी। विविध प्रकार के नवीन परिधानों से आप हमेशा सुशोभित रहेंगी तथा जीवन में वाहन सुख को भी प्राप्त करेंगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी। बन्धु एवं मित्र वर्ग से आपको उचित सहायता तथा सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। माता की आप प्रिय रहेंगी तथा आप भी उनको पूर्ण सम्मान प्रदान करेंगी। जीवन में सर्वप्रकार के भौतिक सुखसंसाधनों से आप युक्त रहेंगी तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग करेंगी। साथ ही दानशीलता का भाव भी आपके मन में सदैव विद्यमान रहेगा। इसके अतिरिक्त जलक्रीडा में भी आपकी हार्दिक रूचि रहेगी।

AMAN MITTAL

राक्षस गण में पैदा होने के कारण आपकी कभी कभी प्रवृति बेकार की बातों को अधिक बोलने की रहेगी जिससे आपका सामाजिक प्रभाव न्यून रहेगा। आप का हृदय भी कठोरता के भाव से युक्त रहेगा तथा दया के भाव की इसमें अल्पता रहेगी। साहसिक कार्यों को सम्पन्न करने के लिए आप सर्वदा उद्यत रहेंगे क्योंकि आपकी प्रवृति पूर्ण रूप से साहसयुक्त रहेगी। साथ ही आप किसी भी बात पर शीघ्र ही अपने क्रोध का भी प्रदर्शन करेंगे आपका शरीर स्वस्थ एवं बलवान रहेगा तथा अन्य जनों से आपका विवाद होता रहेगा जिससे अधिकांश लोग आपसे शत्रुता का भाव रखेंगे। अतः आपको संयम तथा विनम्रतापूर्वक अन्य जनों से व्यवहार करना चहिए।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

जीवन में यदा कदा आप उन्माद तथा प्रमेह रोग से भी पीड़ित रह सकते हैं। आपका शारीरिक सौन्दर्य भी मध्यम रहेगा परन्तु वाणी कभी कभी अत्यन्त ही कटुता को प्राप्त होगी जिससे श्रोता आपसे असन्तुष्ट रहेंगे। अतः प्रयत्नपूर्वक अपने वार्तालाप में मधूर शाब्दो का प्रयोग करें।

उन्मादी भीषणाकारः सर्वदाकलहप्रियः।
पुरूषोदुस्सहब्रूते प्रमेही राक्षणे गणे।।
मानसागरी

VISHAKHA GARG

देवगण में पैदा होने के कारण आपकी वाणी अत्यन्त ही प्रिय एवं मधुरता से परिपूर्ण रहेंगी इससे सभी लोग आप से प्रसन्न रहेंगे। आपकी बुद्धि निर्मल तथा सादगी से युक्त रहेंगी। आप अपने विचारों को सादगी पूर्ण ढंग से प्रकट करने तथा अन्य लोगों के विचारों को भी सादगी से ग्रहन करने में प्रवीण रहेंगी। आपको अल्प मात्रा में शुद्ध भोजन करना अत्यन्त ही प्रियकर लगेगा। अन्य लोगों के गुणों के विषय में आपको पूर्ण ज्ञान रहेगा तथा स्वयं भी श्रेष्ठ विद्वानो द्वारा प्रतिष्ठित श्रेष्ठ गुणों से सुशोभित रहेंगी इसके अतिरिक्त आपको विविध प्रकार के धनैश्वर्य एवं वैभव से भी आप अपने जीवन में सर्वथा युक्त रहैंगी तथा आनन्दपूर्वक उसका जीवन में उपभोग करेंगी।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

आप देखने में अत्यन्त ही सौन्दर्य शाली रहेंगी तथा आपके हृदय में दानशीलता की भावना सर्वथा विद्यमान रहेंगी। आप एक बुद्धिमती महिला भी होंगी तथा हमेशा सादगी पसन्द रहेंगी तथा अनावश्यक भौतिकता से दूर ही रहना पसन्द करेंगी। साथ ही आप एक विदुषी भी होंगी।

सुन्दरो दानशीलश्च कान्तिमान सरलः सदा।
अल्प भोगी महाप्रज्ञो नरो देवगणो भवेत।।
मानसागरी

योनी फलादेश

AMAN MITTAL

व्याघ्र योनि में उत्पन्न होने के कारण आप स्वतंत्र प्रकृति के व्यक्ति होंगे तथा अपने समस्त कार्यों को स्वच्छन्दता से सम्पन्न करना चाहेंगे। धनादि के अर्जन में तत्पर रहकर उसे संग्रह करने की भी प्रवृति आपमें रहेंगी। आप अपने कार्य क्षेत्र में पूर्ण प्रशिक्षित रहेंगे अतः अन्य लोगों को यथोचित सम्मान प्राप्त करेंगे। आप हमेशा वैभव एवं ऐश्वर्य से भी सुसम्पन्न रहकर प्रसन्नतापूर्वक इसका उपभोग करेंगे। सद्गुणों को ग्रहण करने की शक्ति आपमें अधिक मात्रा में रहेगी परन्तु आप अपने ही मुख से अपनी बड़ाई स्वयं करेंगे जिससे समाजिक जन से आपको उचित आदर प्रदान करने में अपने को असमर्थ सा महसूस करेंगे।

स्वच्छन्दोऽर्थरतो ग्राही दीक्षावान सः विभुः सदा।
आत्मस्तुतिपरो नित्यं व्याघ्रयोनि भवो नरः।।
मानसागरी

VISHAKHA GARG

महिष योनि में उत्पन्न होने के कारण आप वाद विवाद तथा लड़ाई झगड़े इत्यादि में हमेशा विजय प्राप्त करेंगे। आप स्वयं भी साहसी होंगी तथा साहसी कार्यों को करने के लिए सर्वथा उत्सुक रहेंगी। आपके जीवन के अधिकांश कार्य साहस से ही सम्पन्न होगे। आपकी संततियां अधिक मात्रा में होंगी। आप में वात प्रवृति की हमेशा प्रधानता बनी रहेगी। अतः वात से उत्पन्न रोगों से यदा कदा आप पीड़ित भी रहेंगी। इसके अतिरिक्त आपकी बुद्धि में तीक्ष्णता का अभाव रहेगा तथा मध्यम बुद्धि से ही आपके समस्त कार्य सम्पन्न होंगे।

संग्रामे विजयी योद्धा सकामस्तु बहुप्रजः।
वाताधिको मन्दमतिर्नरो महिषयोनिजः।।
मानसागरी

AMAN MITTAL

बारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक वाम नेत्र तथा मस्तक रोगी ,आलसी, उदासीन, परदेशवासी, मित्र-द्वेषी एवं कृश शरीर होता है।

तुला राशि में रवि हो तो जातक मन्दाग्नि रोगी, आत्मबलहीन, मलीन व्यभिचारी, परदेशाभिलाषी, नैतिकता की कमी एवं दूसरों से दबने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगे एवं जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको नित्य अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। दानशीलता की प्रवृति से वे युक्त रहेंगे एवं आपको भी पुण्य कार्यों को करने की नित्य प्रेरणा प्रदान करते रहेंगे।

आप का भी उनके प्रति मन में पूर्ण आदर का भाव रहेगा एवं समयानुसार उनकी आज्ञा का आप अनुपालन करते रहेंगे। आपके आपसी संबंध अच्छे होंगे परन्तु बीच बीच में कभी सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनाव या कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही आजीवन में हमेशा उनके सहयोग एवं सहायता के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे एवं उन्हे किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे तथा समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार की वांछित सहयोग भी प्रदान करेंगे।

VISHAKHA GARG

बारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक वाम नेत्र तथा मस्तक रोगी ,आलसी, उदासीन, परदेशवासी, मित्र-द्वेषी एवं कृश शरीर होता है।

मिथुन राशि में रवि हो तो जातक धनवान्, ज्योतिषी, इतिहास प्रेमी उदार, विवेकी, विद्वान्, बुद्धिमान, मधुरभाषी, नम्र एवं प्रेमी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक रूप से अस्वस्थता की अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा एवं जीवन में हमेशा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी सहायता करते रहेंगे। साथ ही उनकी प्रवृति पुण्य एवं दान संबंधी कार्यों को करने की रहेगी अतः आपको भी वे पुण्य कार्यों की ओर प्रेरित करेंगे। साथ ही धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण आदर की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों से संबंधों में कटुता या तनाव उत्पन्न होगा परन्तु कुछ समय के बाद स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। जीवन में आप उनके सुख दुःख का भी ध्यान रखेंगी एवं समयानुसार उनको पूर्ण सहयोग तथा सहायता भी प्रदान करेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कोई कष्ट

नहीं होने देंगी।

AMAN MITTAL

बारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक मृदुभाषी, चिन्ताशील, एकात्तप्रिय, क्रोधी, कफरोगी, चंचल, नेत्ररोगी एवं अधिक व्यय करने वाला होता है।,

तुला राशि में चन्द्रमा हो तो जातक दीर्घदेही, आस्तिक, अन्नदाता, धनवान्, जमींदार, कुशाबुद्धिवाला, चतुर, उच्चाकांक्षाओं से रहित, सन्तोषी एवं परोपकारी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति द्वादश भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य अच्छा रहेगा तथा यदा कदा कष्टों का भी सामना करना पडेगा। लेकिन आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव रहेगा तथा जीवन में आपको प्रायः यथाशक्ति अपना सहयोग प्रदान करती रहेंगी। आप उनसे अच्छे तथा पुण्य के कार्यों के प्रति प्रवृत होंगे तथा समयानुसार दानादि को भी उन्हीं के कथनानुसार सम्पन्न करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन आप कुछ अवसरों को छोडकर करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध विशेष मधुर नहीं होंगे क्योंकि आप में काफी मतभेद रहेंगे तथापि सांसारिक संबंधों में कोई तनाव नहीं रहेगा एवं सामंजस्य पूर्वक आप के परस्पर व्यवहार चलते रहेंगे। साथ ही उन्हें कष्ट के समय आप अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता अवश्य प्रदान करेंगे।

VISHAKHA GARG

चतुर्थभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सुखी, मानी, दानी, उदार, रोगरहित, राजद्वेषवर्जित, कृषक, विवाह के पश्चात् भाग्योदयी, जलजीवी एवं बुद्धिमान होता है।

तुला राशि में चन्द्रमा हो तो जातक दीर्घदेही, आस्तिक, अन्नदाता, धनवान्, जमींदार, कुशाबुद्धिवाला, चतुर, उच्चाकांक्षाओं से रहित, सन्तोषी एवं परोपकारी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति चतुर्थ भाव में स्थित हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक व्याकुलता की उनको अनुभूति नहीं होगी। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह का भाव रहेगा। आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे एवं मतभेदों का प्रायः अभाव ही रहेगा। विभिन्न प्रकार की धन सम्पत्ति तथा वाहनादि सुख से वे युक्त रहेंगी तथा आपकी सुख समृद्धि एवं सुखसंसाधनों की प्राप्ति के लिए नित्य आपका आर्थिक तथा अन्य तरफ से सहयोग करती रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति असीम निष्ठा एवं आदर का भाव रहेगा। साथ ही जीवन में उनको सर्वप्रकार से सुख प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। एवं उनकी आज्ञा का पालन भी नित्य करती रहेंगी। इस प्रकार आप माता के लिए शुभ ही रहेंगी।

AMAN MITTAL

दसवें भाव में मंगल हो तो जातक कुलदीपक, स्वाभिमानी, सन्तति कष्टवाला, धनवान्, सुखी, उत्तम-वाहनों से सुखी एवं यशस्वी होता है।

सिंह राशि में मंगल हो तो जातक शूरवीर, सदाचारी, कार्यनिपुण, स्नेहशील, परोपकारी, ज्योतिषी, गणितज्ञ, माता-पिता का आज्ञाकारी, गुरुजनों का आदर करने वाला, उदार एवं सफल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी महसूस करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह विद्यमान रहेगा। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी उनसे वांछित सहयोग आपको प्राप्त होता रहेगा। तथा नौकरी या यपार संबंध कार्यों में भी वे आपको सहपोग प्रदान करगै।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा तथा आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी परन्तु कई बार मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु यह अल्प समय तक रहेगा। इसके साथ ही आप आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हें सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं सुख दुःख में भी एक दूसरे का सहायता करते रहेंगे।

VISHAKHA GARG

चतुर्थभाव में मंगल हो तो जातक सन्तितिवान्, मातृसुखहीन, वाहनसुख, प्रवासी, अग्निभययुक्त, अल्पमृत्यु चा अपमृत्यु प्राप्त करने वाला, कृषक, बन्धुविरोधी एवं लाभ युक्त होता है।

तुला राशि में मंगल हो तो जातक प्रवासी, वक्ता, कामी, परधनहारी, उच्चाकांक्षी, लड़ाकू, कृपालु एवं परस्त्रियों की ओर झुकाव होता है।

आपकी जन्म कुण्डली में मंगल की स्थिति चौथे भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा वे शारीरिक रूप से अस्वस्थ रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा तथा सुख दुःख में आपको हमेशा उनसे वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार का सहयोग प्राप्त होता रहेगा। साथ ही व्यापार एवं आजीविका संबंधी कार्यों में भी वे आपकी पूर्ण सहायता करेंगे।

आप भी उनको मन से सम्मान एवं स्नेह प्रदान करेंगी तथा सुख दुःख में सर्वदा उनके साथ रहेंगी एवं यथाशक्ति उनको वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता भी प्रदान करती रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण संबंधों में कटुता या तनाव आएगा परन्तु कुछ समय के बाद स्थिति सामान्य हो जाएगी। साथ

ही आप एक दूसरे से सहमत भी रहेंगे एवं विश्वास पूर्वक जीवन में परस्पर सहयोग का भाव रखेंगे।

AMAN MITTAL

बारहवें भाव में बुध हो तो जातक अल्पभाषी, विद्वान्, आलसी धर्मात्मा, वकील, सुन्दर, वेदान्ती, लेखक, दानी एवं शास्त्रज्ञ होता है।

तुला राशि में बुध हो तो जातक आस्तिक, व्यापार दक्ष, वक्ता, चतुर, शिल्पज्ञ, कुटुम्बवत्सल, उदार, अच्छा अन्तर्ज्ञान, वफादार, विनीत संतुलित मन एवं दार्शनिक होता है।

VISHAKHA GARG

लग्न (प्रथम) में बुध हो तो जातक आस्तिक, गणितज्ञ, दीर्घायु, उदार-विनोदी, वैद्य, विद्वान, स्त्रीप्रिय, मितव्ययी एवं मधुरभाषी होता है।

कर्क राशि में बुध हो तो जातक नीतिकुशल, सूक्ष्माही, अत्यन्त कामुक, छोटाकदवाला, अनैतिक चरित्र, अनिश्चित स्वभाव, वाचाल, गवैया, परदेशवासी, प्रसिद्ध एवं परिश्रमी होता है।

AMAN MITTAL

चतुर्थभाव में गुरु हो तो जातक शौकीन मिजाज, सुन्दरदेही, आरामतलब, परिश्रमी, ज्योतिषी, उच्चशिक्षा प्राप्त, कमसन्तान, सरकार द्वारा सम्मानित, माँ से स्नेह करने वाला, कार्यरत, उद्योगी, लोकमान्य, यशस्वी एवं व्यवहारज्ञ होता है।

कुम्भ राशि में गुरु होतो जातक विद्वान परन्तु धनहीन, लोकप्रिय, मिलनसार, स्वप्नों के जगत में विचार करने वाला डरपोक प्रवासी, कपटी एवं रोगी होता है।

VISHAKHA GARG

दशमभाव में गुरु हो तो जातक सुकर्म करने वाला, प्रसिद्ध और सम्मानित प्रतिष्ठित पद पर आसीन, सदाचारी, पुण्यात्मा, ऐश्वर्यवान्, साधु, चतुर, न्यायी, प्रसन्न, ज्योतिषी, सत्यवादी, शत्रुहन्ता, राजमान्य, स्वतन्त्र विचारक, मातृपितृ भक्त, लाभवान्, धनी एवं भाग्यवान् होता है।

मेष राशि में गुरु हो तो जातक ऐश्वर्यशाली, तेजस्वी, वकील, वादी, प्रसिद्ध, कीर्तिमान, विजयी, उस्वभाव, धनी, विद्वान, प्रचुर सन्तान, उदार, नम्रभाषी परन्तु अपने आपको दूसरों से उच्च समझने वाला, सुखी विवाहित जीवन एवं उच्चपद पर आसीन होता है।

AMAN MITTAL

बारहवें भाव में शुक्र होतो जातक धनवान्, परस्त्रीरत, बहुभोजी, शत्रुनाशक, मितव्ययी, आलसी, पतित, धातुविकारी, स्थूल एवं न्यायशील होता है।

तुला राशि में शुक्र हो तो जातक विलासी, कलानिपुण, प्रवासी, यशस्वी, कार्यदक्ष, कुशाबुद्धि, उदार, दार्शनिक, सुन्दर, सुखी विवाहित जीवन, अभिमानी, बौद्धिक कामों में रुचि, कविता और उपन्यास लिखने में रुचि एवं संतुलित स्वभाव होता है।

VISHAKHA GARG

लग्न (प्रथम) में शुक्र हो तो जातक सुन्दरदेही, दीर्घायु, राजप्रिय, कामी, उच्चसरकारी पद पर आसीन, विलासी, भोगी, विद्वान्, प्रवासी, मधुरभाषी, प्रसिद्ध सुखी एवं ऐश्वर्यवान् होता है।

कर्क राशि में शुक्र हो तो जातक धार्मिक, ज्ञाता, सुन्दर, सुख और धन का इच्छुक, नीतिज्ञ, आवेशपूर्ण, डरपोक, दुःखी एवं प्रचुर सन्तान होता है।

AMAN MITTAL

षष्ठभाव में शनि हो तो जातक बलवान्, आचारहीन, व्रणी, जातिविरोधी, श्वासरोगी, कण्ठरोगी, योगी, शत्रुहन्ता भोगी एवं कवि होता है।

मेष राशि में शनि हो तो जातक आत्मबलहीन, मूर्ख, आवारा, क्रूर जालफरेव करने वाला, व्यसनी, निर्धन, दुराचारी, कपटी लम्पट एवं कृतघ्न होता है।

VISHAKHA GARG

दशम भाव में शनि हो तो जातक विद्वान, ज्योतिषी, राजयोगी ,न्यायी, नेता, धनवान्, राजमान्य, उदरविकारी, अधिकारी, चतुर, भाग्यवान् परिश्रमी, निरुद्पयोगी एवं महत्त्वाकांक्षी होता है।

मेष राशि में शनि हो तो जातक आत्मबलहीन, मूर्ख, आवारा, क्रूर जालफरेव करने वाला, व्यसनी, निर्धन, दुराचारी, कपटी लम्पट एवं कृतघ्न होता है।

AMAN MITTAL

दशम भाव में राहु हो तो जातक मितव्ययी, वाचाल, सन्ततिक्लेशी चन्द्रमा से युक्त राहु के होने पर राजयोग कारक अनियमित कार्यकर्त्ता एवं आलसी होता है।

सिंह राशि में राहु हो तो जातक चतुर, विचारक, सज्जन, नीति दक्ष एवं सत्पुरुष होता है।

VISHAKHA GARG

लग्न (प्रथम) में राहु हो तो जातक कामी, दुर्बल, मनस्वी, अल्पसन्तति युक्त, राजद्वेषी, नीचकर्मरत दुष्ट, स्तकरोगी, स्वार्थी एवं बात-बात पर सन्देह करने वाला होता है।

कर्क राशि में राहु हो तो जातक चतुर, उदार, रोगी, अनेकों शत्रुओं वाला, धोखेबाज, धनहीन एवं पराजि होता है।

AMAN MITTAL

चतुर्थ भाव में केतु हो तो जातक, कार्यहीन, चंचल, वाचाल एवं निरुत्साही होता है।

कुम्भ राशि में केतु हो तो जातक दुःखी, कर्णरोगी, भ्रमणशील, व्ययशील एवं साधारण धनी होता है।

VISHAKHA GARG

सप्तम भाव में केतु हो तो जातक मतिमन्द, मूर्ख, दुखद विवाहित जीवन, पति-पत्नी में सम्बन्ध विच्छेद, शत्रुभीरु एवं सुखहीन होता है।

मकर राशि में केतु हो तो जातक परिश्रमशील, पराक्रमी जन्म स्थान छोड़कर जाने वाला, प्रसिद्ध एवं तेजस्वी होता है।

AMAN MITTAL

आपके जन्मसमय में लग्न में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। सामान्यता वृश्चिक लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ एवं हृष्ट पुष्ट होते हैं। इनमें शारीरिक बल की प्रचुरता रहती है अतः परिश्रम एवं पराक्रम के द्वारा ये अपने सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करते हैं। स्वभाव से ये निर्भीक होते हैं तथा विभिन्न शास्त्रों का ज्ञानार्जन करके एक विद्वान के रूप में इनकी छवि रहती है। परिवार में ये श्रेष्ठ होते हैं तथा मित्र एवं बन्धुवर्ग में सम्माननीय समझे जाते हैं। ये अत्यधिक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होते हैं तथा आत्मिक शक्ति की भी इनमें प्रबलता रहती है।

धन संग्रह के प्रति भी इनकी रूचि रहती है तथा धर्नाजन में नैतिक सीमा का अनुपालन कम ही करते हैं। इसके अतिरिक्त विज्ञान या गणित में इनकी विशेष रूचि रहती है तथा इस क्षेत्र में उनको सफलता एवं यश की प्राप्ति होती है।

अतः इसके प्रभाव से आप स्वस्थ एवं हृष्ट पुष्ट व्यक्ति होंगे तथा स्वपराक्रम एवं परिश्रम से सांसारिक कार्यों में सफलता अर्जित करेंगे इससे आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त होंगे तथा जीवन में धनैश्वर्य वैभव एवं सुख संसाधनों को अर्जित करके सुख पूर्वक उनका उपभोग करने में समर्थ रहेंगे। निर्भीकता तथा लगनशीलता का भी भाव आप में विद्यमान होगा। अतः कार्य क्षेत्र में आप उन्नति एवं सफलता के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। विज्ञान गणित या मेडिकल के क्षेत्र में आप विशिष्ट उन्नति या सफलता अर्जित कर सकते हैं।

आप एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूर्ण करने के लिए सर्वदा यत्नशील रहेंगे। धनसंग्रह में भी आपकी रूचि होगी परन्तु इससे आपके समीपस्थ लोग असुविधा महसूस करेंगे। आपके महत्वपूर्ण कार्य भावना से नहीं बल्कि बुद्धि द्वारा संचालित होंगे। अतः सामान्य रूप से आप प्रसन्नतापूर्वक आप अपना समय व्यतीत करेंगे।

लग्न में लग्नेश मंगल की राशि की प्रभाव से आप स्वस्थ एवं बलवान होंगे मानसिक शांति भी बनी रहेगी। पराक्रम एवं तेजस्विता का भाव प्रारम्भ से ही आप में विद्यमान होगा तथा इन गुणों से आप अपने सांसारिक महत्व के कार्य कलापों को सम्पन्न करके उनमें सफलता प्राप्त करेंगे। इससे आप धनैश्वर्य अर्जित करेंगे तथा अन्य भौतिक सुख संसाधनों की भी प्राप्ति होगी जिनका आप आनंदपूर्वक उपभोग करेंगे परन्तु यदा कदा तेजस्विता के स्थान पर उग्रता या क्रोध का असमय प्रदर्शन करेंगे। इससे आपको अनावश्यक समस्याएं एवं परेशानियां उत्पन्न होगी।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव अवश्य रहेगा परन्तु धार्मिक कार्यकलापों एवं अनुष्ठानों को अल्प मात्रा में ही सम्पन्न करेंगे। मित्र वर्ग में आप लोकप्रिय एवं आदरणीय होंगे तथा उनसे आपको वांछित सहयोग एवं लाभ समय समय पर मिलता रहेगा इस प्रकार आप स्वस्थ बलवान पराक्रमी तेजस्वी धनसंग्रह कर्ता एवं परिश्रमी पुरूष होंगे तथा

स्वपुरुषार्थ से जीवन में इच्छित सुख संसाधनों को अर्जित करके प्रसन्नता पूर्वक उनका उपभोग करेंगे।

VISHAKHA GARG

आपके जन्म समय में लग्न में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है। सामान्यतया कर्क लग्न में उत्पन्न जातक शान्त स्वभाव एवं दृढ़तापूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करने वाले होते हैं। इनकी प्रवृति भावुक होती है तथा प्रेम एवं स्नेह का निश्छल भाव विद्यमान रहता है। जीवन में समस्त भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करने में ये समर्थ रहते हैं तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करते हैं। ये धार्मिक प्रवृति के भी व्यक्ति होते हैं तथा समाज एवं देश सेवा के कार्य में तत्पर रहते हैं। अन्य जनों की मनोइच्छा को जानने में ये दक्ष होते है। साथ ही राजनीति या सरकारी क्षेत्रों में उच्चाधिकार प्राप्त पद को अर्जित करने में इनको सफलता प्राप्त होती है जिससे समाज में ये प्रतिष्ठित तथा यशस्वी होते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आपका स्वरूप सुन्दर, दर्शनीय एवं आकर्षक होगा तथा सभी लोग आपसे प्रभावित तथा आकर्षित रहेंगे। आप एक विदुषी महिला होंगी तथा अपने विषय पर आपका आधिपत्य रहेगा। साथ ही बुद्धि भी तीक्ष्ण होगी तथा अपने सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को बुद्धिमतापूर्वक सम्पन्न करेंगी तथा इनमें आपको वांछित सफलता भी प्राप्त होगी। आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित होगा।

यद्यपि यदा कदा आपको जीवन में उतार चढ़ाव का सामना करना पड़ेगा परन्तु अपने साहस पराक्रम एवं बुद्धि से आप इनका सामना तथा समाधान करने में समर्थ होंगी। साथ ही स्वपरिश्रम से भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करके सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगी।

लग्न में शुक्र की स्थिति के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। आपके व्यक्तित्व से सभी लोग प्रभावित होंगे एवं यथोचित मात्रा में आपको मान सम्मान प्रदान करेंगे। आपकी सभी कार्य उत्साह एवं परिश्रम से सम्पन्न होंगे तथा इनमें आपको अवसरानुकूल सफलता भी प्राप्त होगी। आप श्रेष्ठ कार्यों को करने में रूचिशील रहेंगी तथा इन कार्यों से आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

पिता के प्रति आपका आत्मिक लगाव रहेगा तथा उनकी सेवा करने में तत्पर होंगी। पिता के नाम से आपको प्रसिद्धि भी प्राप्त होगी। परिवार में आप श्रेष्ठ रहेंगी तथा परिवार का गौरव बढ़ाने में समर्थ होंगी। कर्तव्यपरायणता का भाव भी आप में विद्यमान रहेगा तथा ईमानदारी से अपने कार्यों को सम्पन्न करके समाज या कार्य क्षेत्र में उन्नति तथा सम्मान प्राप्त करेंगी। इसके अतिरिक्त कृतज्ञता का भाव भी रहेगा एवं अन्य जनों के उपकार के लिए उनका अवश्य आभार प्रकट करेंगी।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा अवसरानुकूल धार्मिक कार्यकलापों को सम्पन्न करेंगी। संगीत एवं कला के प्रति आपकी रूचि होगी तथा यत्नपूर्वक उनका ज्ञान अर्जित

करके इस क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकती हैं। मित्रों के मध्य आप प्रिय एवं आदरणीय रहेंगी तथा उनसे आपको यथोचित मात्रा में सहयोग प्राप्त होगा।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

AMAN MITTAL

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप एक आत्मविश्वासी पुरूष होंगे तथा अपने विचारों को बिना किसी हिचकिचाहट के प्रदर्शन करते हुए अन्य जनों के समक्ष प्रस्तुत करेंगे इससे सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। जीवन में व्यवधानों तथा समस्याओं का आप दृढ़ता पूर्वक सामना तथा समाधान करने में समर्थ रहेंगे। सत्य के प्रति आपकी पूर्ण निष्ठा रहेगी तथा इसका अनुपालन करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपको जो भी रूचिकर लगेगा वही आप अन्य जनों के समक्ष कहेंगे तथा इस बात की कोई चिन्ता नहीं करेंगे कि अन्य जनों पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा या वे किस रूप में उसे ग्रहण करेंगे। आप अपने समीपस्थ संबंधियों से औपचारिक संबंध रहेंगे परन्तु अवसरानुकूल उनसे घनिष्ठ संबंध स्थापित करने के भी उत्सुक रहेंगे।

आपका पारिवारिक जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा। साथ ही वाणी अत्यंत ही मधुर एवं ओजस्वी रहेगी तथा अन्य जनों को वाणी द्वारा प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे। सांसारिक धनऐश्वर्य एवं भौतिक सुख संसाधनों से आप युक्त रहेंगे तथा प्रसन्नता पूर्वक इसका उपभोग करेंगे। आपकी प्रवृति धार्मिक रहेगी तथा समय समय पर आप धार्मिक कार्य कलापों तथा उत्सव का भी आयोजन करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप स्थिर धन के स्वामी वाहन आदि से युक्त तथा यशस्वी पुरूष होंगे। रस युक्त पदार्थ आपको प्रिय लगेंगे तथा धर्म की उन्नति के लिए सर्वदा अपना योगदान प्रदान करते रहेंगे।

VISHAKHA GARG

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में सिंह राशि उदित हुई है जिसका स्वामी सूर्य है। अतः इसके प्रभाव से आप कम बोलना पसंद करेंगी तथा सामान्यतया शान्त रहना ही आपको अच्छा लगेगा। आप आवश्यकता एवं अवसरानुकूल ही सार्थक वार्तालाप करेंगी। जीवन में वैभव शाली पदार्थों की प्राप्ति तथा शुभ एवं मांगलिक कार्यो को सम्पन्न करने में सर्वदा तत्पर रहेगी। आपकी प्रवृति शीघ्र क्रोधित होने की रहेगी परन्तु शीघ्र क्रोधित होकर शीघ्र शान्त भी हो जाएंगी। परिवार की शान्ति तथा खुशहाली के लिए आप हमेशा प्रयत्नशील रहेंगी तथा यत्नपूर्वक पारिवारिक जनों को सुख सुविधाएं प्रदान करेंगी। आपको पैतृक सम्पति की भी प्राप्ति होगी तथा अन्य मूल्यवान धातु एवं द्रव्यों से भी युक्त रहेंगी।

जमीन जायदाद संबंधी लाभ भी आप समय समय पर प्राप्त करती रहेंगी। साथ ही गृह एवं वाहन आदि का स्वामित्व भी आपको प्राप्त होगा। आपकी वाणी स्पष्ट रहेगी तथा अन्य जन आपकी मृदुवाणी से प्रभावित तथा आकर्षित रहेंगे। आपके ठोस तर्को से सभी लोग आपसे सामान्यतया सहमत रहेंगे। परिवार की सुख शान्ति पर आप यथोचित व्यय करेंगी। साथ ही धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव रहेगा तथा धार्मिक कार्य कलापों का भी समय समय पर आयोजन करती रहेंगी। परिवार के अतिरिक्त अन्य जनों का पालन करने में भी समर्थ रहेंगी।

इस प्रकार आप तथा भाग्यशाली, परोपकारी, धार्मिक प्रवृति से युक्त तथा समाज में सम्मान जनक स्थान प्राप्त करने में समर्थ रहेंगी।

AMAN MITTAL

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिजीवी प्राणी होंगे तथा आपकी स्मरण शक्ति भी अच्छी रहेगी एवं किसी भी विषय का ज्ञान आसानी से प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। भाई बहिनों से आप युक्त रहेंगे तथा उनका आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही आपके लिए वे कर्तव्य परायण तथा आज्ञाकारी होंगे तथा आपका भी उनके प्रति गहरा लगाव रहेगा। पारिवारिक शान्ति एवं खुशहाली के लिए आप एक दूसरे की कमियों की उपेक्षा करेंगे।

आप एक पराक्रमी तथा साहसी पुरूष होंगे तथा परिश्रमशील कार्यो को करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही आप नीति के भी ज्ञाता होंगे एवं मंत्रणा या सलाह संबंधी कार्य आसानी से सम्पन्न करेंगे। सांसारिक परेशानियों एवं समस्याओं का समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे तथा किसी भी कार्य को तब तक सम्पन्न करेंगे जब तक कि उसमें सफलता प्राप्त न कर लें। जीवन में संचार साधनों यथा दूरभाष, दूरदर्शन या वाहन संबंधी सुविधाएं अर्जित करेंगे तथा इनका उपभोग करते समय स्वयं को अन्य जनों से श्रेष्ठ अनुभूति करेंगे। संगीत के प्रति भी आपकी गहरी रूचि रहेगी। समस्त भौतिक सुखों का भी उपभोग करेंगे। आपकी समय समय पर दूर समीप की यात्राएं सम्पन्न होती रहेंगी तथा इनसे आप इच्छित लाभ एवं धन अर्जित करेंगे। साथ ही इनसे आपको ख्याति प्राप्त होगी तथा सामाजिक सम्मान में भी वृद्धि होगी। समाचार पत्र तथा अन्य सूचना संबंधी लेखों को आप चाव से पढ़ेंगे तथा रिक्त समय में आप इसका पूर्ण सदुपयोग करेंगे। इसके अतिरिक्त आप बातचीत एवं विचार से शांत प्रकृति, पुत्र.पौत्र से युक्त, गुरू तथा मित्र प्रेमी, धनवान तथा अपने क्षेत्र में प्रसिद्ध रहेंगे।

VISHAKHA GARG

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आपकी स्मरण शक्ति तीव्र रहेगी। साथ ही आप एक बुद्धिमती महिला होंगी तथा दार्शनिक या बौद्धिक कार्यो को करने में प्रवृत रहेंगी। भाई बहिनों से आप युक्त रहेंगी तथा जीवन में उनसे आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग मिलेगा। साथ ही अवसरानुकूल उनकी भलाई के कार्यो को सम्पन्न करती रहेंगी। पारिवारिक शान्ति तथा समृद्धि के लिए परस्पर एक दूसरे की गलतियों की उपेक्षा करेंगे तथा यदा कदा अधिक वार्तालाप भी करेंगी। आपको अपने क्षेत्र में श्रेष्ठता या नेतृत्व प्राप्त होगा तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। साथ ही आप एक कुशल वक्ता होंगी तथा भाषा पर भी पूर्ण अधिकार रहेगा।

आधुनिक संचार की सुख सुविधाओं से आप युक्त रहेंगी तथा सुख पूर्वक टेलीफोन, दूरदर्शन या वाहन आदि का उपभोग करेंगी। आप संगीत प्रिय होंगी तथा कला के प्रति भी आपके मन में आकर्षण रहेगा आपका कंठ मधुर रहेगा फलतः अन्य लोग आपकी मधुर आवाज से प्रभावित रहेंगे। लेकिन सर्वप्रथम अपने सांसारिक कार्यो को पूर्ण करेंगी उसके बाद ही संगीत

संबंधी कार्य सम्पन्न करेंगी। समय समय पर आपकी समीपस्थ यात्राएं होती रहेगी तथा इनसे आपको ख्याति तथा लाभ अर्जित होगा तथा पड़ोसियों से भी आप अच्छे संबंध स्थापित करेंगी । नीति की भी आप ज्ञाता होंगी तथा आम चुनाव, लेख लिखने या पुस्तक प्रकाशन आदि से लाभ तथा ख्याति प्राप्त करेंगी। इसके अतिरिक्त आप शस्त्र विद्या की ज्ञाता, अच्छे शील स्वभाव एवं मित्रों से युक्त, सामाजिक तथा धार्मिक प्रवृति की महिला होंगी।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

AMAN MITTAL

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में कुम्भराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है तथा बृहस्पति भी चतुर्थ भाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आपको समस्त सांसारिक सुख एवं वैभव की प्राप्ति होगी तथा आधुनिक सुख-संसाधनों एवं भौतिक उपकरणों से युक्त होकर आनन्दपूर्वक इनका उपभोग करने में समर्थ होंगे। समाज में भी आपका उच्चस्तर बना रहेगा एवं सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करके यथोचित मान-सम्मान प्रदान करेंगे।

आप एक भाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति से युक्त होकर उसका स्वामित्व प्राप्त करेंगे। किसी श्रेष्ठ एवं वृद्ध व्यक्ति भी से आपको न्यूनाधिक मात्रा में चल या अचल सम्पत्ति की प्राप्ति हो सकती है। आप अपनी बुद्धिमता, योग्यता एवं परिश्रम से भी वांछित धन-सम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगे। आपके अचल सम्पत्ति की अपेक्षा चल सम्पत्ति से शीघ्र एवं अधिक लाभ के भी योग बनते हैं।

आपका आवास सुन्दर, विस्तृत एवं आधुनिक सुख-सुविधाओं से युक्त होगा तथा भौतिक उपकरणों की इसमें अधिकता होगी। साथ ही इसका आकर्षण एवं सुन्दरता बनाए रखने के लिए आप तत्पर रहेंगे। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा तथा आपके पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे तथा संबंधों में भी अनुकूलता रहेगी। इसके अतिरिक्त युवावस्था से ही आप उत्तम वाहन की प्राप्ति करके इसका उपभोग करेंगे।

आपकी माताजी बुद्धिमती, तेजस्वी, शिक्षित एवं सरल स्वभाव की महिला होंगी तथा अपनी कर्तव्य परायणता से सभी जनों को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रखेंगी। वह व्यवहार कुशल महिला भी होंगी एवं परिवार पर उनका पूर्ण नियंत्रण होगा। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह का भाव होगा एवं समय समय पर वांछित नैतिक तथा आर्थिक सहयोग प्रदान करेंगी। इसके अतिरिक्त आपकी उन्नति में उनका प्रमुख योगदान रहेगा। आप भी माताजी के आज्ञाकारी होंगे तथा उनकी सलाह एवं सहयोग से ही अधिकांश कार्यो को सम्पन्न करेंगे। आपके संबंधों में भी मधुरता रहेगी तथा सुख-दुख में एक दूसरे का पूर्ण ध्यान रखेंगे।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आप रूचिशील रहेंगे तथा अपनी बुद्धिमता एवं योग्यता से छोटी कक्षाओं से ही अच्छे अंको से परीक्षाएं उतीर्ण करेंगे। इसी परिपेक्ष्य में स्नातक परीक्षा आप ससम्मान उतीर्ण करेंगे तथा इससे आपके आत्म विश्वास के भाव में वृद्धि होगी तथा समाज में भी प्रभाव बढ़ेगा। जिससे स्वजन एवं मित्र वर्ग आपको पूर्ण प्रोत्साहन देंगे।

शनि की राशि में चतुर्थ भाव में बृहस्पति के प्रभाव से वृद्धावस्था में आप न्यूनाधिक मात्रा में रक्तचाप या हृदय संबंधी परेशानी प्राप्त कर सकते है। अतः यदि युवावस्था से ही खान-पान पर विशेष ध्यान दिया जाय तो ऐसी समस्याओं में कमी आएगी तथा आपका सामान्य समय प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।

VISHAKHA GARG

आपके जन्मसमय में चतुर्थ भाव में तुलाराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है तथा मंगल भी चतुर्थ भाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से आप जीवन में भौतिक सुख संसाधनों की प्राप्ति करेंगी एवं आधुनिक उपकरणों से भी युक्त होंगी। धनेश्वर्य एवं वैभव भी अपनी योग्यता एवं बुद्धिमता से अर्जित करेंगी तथा समाज में अपना उच्च स्तर पर बनाए रखने में समर्थ होंगी। जीवन में आपको सामान्यतया सांसारिक सुखों की पूर्ण उपलब्धि होगी तथा इससे समाज में आप आदरणीय तथा प्रभावशाली महिला मानी जाऐंगी।

जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को भी आप अवश्य प्राप्त करेंगी तथापि इसको अर्जित करने में आपको विशेष परिश्रम कम ही करना पड़ेगा। आपको भाइयों के सहयोग से चल या अचल संपत्ति की प्राप्ति होगी। जिससे आपके वैभव में वृद्धि होगी। लेकिन पूर्ण धन सम्पत्ति का अर्जन युवावस्था के बाद ही संभव होगा। अतः परिश्रम पूर्वक अपने कार्य कलापों को करने में तत्पर रहें।

आपको उत्तम गृह की भी प्राप्ति होगी तथा यह अच्छे स्थान में होगा। आपका घर आधुनिक साज सज्जा के उपकरणों से सुसज्जित रहेगा तथा इसके आकर्षण एवं सुन्दरता बनाये रखने में आप व्यक्तिगत रूचि लेंगी। आपका घर किसी मध्यम कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे तथा संबंधों में भी मधुरता होगी। इसके अतिरिक्त वाहन सुख भी आपको मिलेगा एवं युवावस्था के बाद आनंदपूर्वक इसका उपभोग करेंगी।

आपकी माता जी सुन्दर बुद्धिमान एवं तेजस्वी महिला होंगी तथा अपने कुशल व्यवहार एवं कार्य कलापों से अन्य पारिवरिक जनों को पूर्ण संतुष्ट एवं प्रभावित रखेंगी। आपके प्रति उनके में में प्रबल वात्सल्य एवं स्नेह का भाव होगा एवं अवसरानुकूल उनसे आपको वांछित आर्थिक एवं नैतिक सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। आप भी उनको अपनी ओर से पूर्ण सुख प्रदान करेंगी एवं किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगी। इससे आपसी संबंधों में मधुरता बनी रहेगी एवं परस्पर सद्भाव एवं विश्वास का भाव बना रहेगा।

आपकी प्रवृति बचपन से ही अध्ययनशील होगी तथा छोटी कक्षाओं से ही अच्छे अंक अर्जित करेंगी। आप एक बुद्धिमान एवं परिश्रमी स्वभाव की महिला होंगी। अतः अपने इन्हीं गुणों से स्नातक परीक्षा आसानी से उतीर्ण करने में समर्थ होंगी। इसमें आपको अच्छे अंको से सफलता मिलेगी जिससे आत्मविश्वास के भाव में वृद्धि होगी तथा उज्ज्वल भविष्य के निर्माण में आप दुगने उत्साह एवं शक्ति से कार्य करेंगी। इसके अतिरिक्त मित्रों एवं स्वजनों से भी आपको यथोचित आदर एवं सम्मान की प्राप्ति होगी।

चतुर्थ भाव में नैसर्गिक पाप ग्रह मंगल के प्रभाव से मध्यवस्था के बाद आपको किंचित रूप से रक्तचाप या हृदय संबंधी परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। अतः यदि आप युवावस्था से ही खान पान पर उचित नियंत्रण रखें तो ऐसी समस्याओं से सुरक्षित रहेंगी तथा सुख पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगी।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

AMAN MITTAL

आपके जन्म समय में पंचम भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा अपने सम्स्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को बुद्धिमता से ही सम्पन्न करेंगे। आप में शीघ्र एवं सकारात्मक निर्णय लेने की भी क्षमता विद्यमान होगी जिससे आपको वांछित सफलता एवं लाभ की प्राप्ति होगी तथा आपके इस गुण से अन्य जन भी आपसे प्रभावित होंगे। आप अपनी तीव्र बुद्धि से कठिन से कठिन समस्याओं का भी उचित समय पर समाधान करने में समर्थ होंगे। वैदिक साहित्य धर्म एवं दर्शन में आपकी रूचि कम ही होगी लेकिन आधुनिक विज्ञान, आयुर्विज्ञान या तकनीकी क्षेत्र में आप पूर्ण रूचि का प्रदर्शन करेंगे तथा परिश्रम पूर्वक इनके ज्ञानार्जन में तत्पर होंगे। इन क्षेत्रों में आप कोई शोध कार्य या नवीन सिद्धांत के प्रतिपादन में भी समर्थ हो सकते है। इस प्रकार अपनी विद्वता से आप समाज में सम्मान जनक स्तर अर्जित करने में समर्थ होंगे।

पंचमभाव में मीन राशि की स्थिति के प्रभाव से प्रेम प्रसंगों में यद्यपि आपकी रूचि कम होगी परन्तु आपका प्रेम भावुकता से हीन होगा तथा इससे आदर्शवादिता, नैतिकता एवं यथार्थवादी दृष्टि कोण होगा एवं भावनात्मक आकर्षण की ही प्रबलता होगी। अतः आप प्रेम- प्रसंग में सफल भी हो सकते है।

जीवन में आपको यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा पुत्र संतति की अधिकता होगी। आपकी संतति पराक्रमी, तेजस्वी एवं बुद्धिमान होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से वे जीवन में उन्नति के मार्ग प्रशस्त करने में समर्थ होंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण सम्मान एवं आदर का भाव होगा तथा उनकी आज्ञापालन में भी समान्यतया वे तत्पर होंगे परन्तु वे स्वतन्त्र प्रवृति के होंगे अतः यदा-कदा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को बिना माता-पिता की सलाह लिए भी सम्पन्न कर सकते है। लेकिन इसकी आपको चिन्ता नहीं करनी चपहिए तथा उन्हें स्वतन्त्र निर्णय लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। इससे परस्पर सदभाव एवं विश्वास बना रहेगा। वृद्धावस्था में बच्चों से आपको प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सेवा एवं सहयोग भी मिलता रहेगा जिससे आप वृद्धावस्था में सुख की अनुभूति करेंगे।

शिक्षा के क्षेत्र में आपके बच्चे बुद्धिमान, प्रतिभाशाली एवं परिश्रमी सिद्ध होंगे तथा प्रारम्भ से ही इस क्षेत्र में विशेष उन्नति का प्रदर्शन करेंगे। आप भी उनकी शिक्षा दीक्षा का आधुनिक परिवेश में प्रबन्ध करेंगे तथा किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगे जिससे वे जीवन में अच्छी उन्नति एवं सफलताएं अर्जित करके आपकी आकाक्षांओं को पूर्ण करेंगे। इसके अतिरिक्त वे अपने कार्यो में निपुण एवं व्यवहार कुशल होंगे तथा अन्य सामाजिक जनों को प्रसन्न तथा प्रभावित करने में समर्थ होंगे तथा वे भी उन्हें वांछित स्नेह एवं सम्मान प्रदान करेंगे। इस प्रकार बच्चों के संदर्भ में आप भाग्यशाली समझे जायेंगे।

VISHAKHA GARG

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान महिला होंगी तथा बुद्धिमता पूर्वक अपने सांसारिक महत्व के कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगी परन्तु बुद्धि में तीक्ष्णता के भाव की न्यूनता होगी जिससे समस्याओं के समाधान में किंचित विलम्ब हो सकता है। अतः आपको सोच समझकर निर्णय लेना चाहिए तथा शीघ्रता नहीं करनी चाहिए। नीचस्थ चन्द्र के प्रभाव से वैदिक एवं धर्मशास्त्रों में आपकी रूचि अल्प मात्रा में होगी परन्तु आधुनिक विज्ञान एवं भौतिक शास्त्र में आपकी पूर्ण रूचि होगी एवं इस क्षेत्र में अत्यधिक परिश्रम से वांछित ज्ञान अर्जित करने में समर्थ होंगी। आप कोई शोध कार्य भी आप सम्पन्न कर सकती हैं। इससे आपकी सामाजिक मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोग एक विदुषी के रूप में आपके प्रभुत्व को स्वीकार करेंगे।

पंचमभाव में वृश्चिक राशि के प्रभाव से प्रेम प्रसंगो में आप की काफी रूचि होगी तथा मनोरंजन एवं दिल बहलाने का आप इसे साधन समझेंगे। इसमें मर्यादा एवं आदर्श की भावना भी कम ही होगी जिससे आपको समय समय पर अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। उसके अतिरिक्त भावात्मक लगाव की अपेक्षा शारीरिक लगाव अधिक होगा। अतः ऐसी स्थितियों की आपको यत्न पूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

जीवन में आपको यथोचित समय पर सन्तति की प्राप्ति होगी तथा कन्या सन्तति अधिक होगी। आपकी सन्तति बुद्धिमान, योग्य एवं तेजस्वी प्रवृति के होंगे तथा अपने इन गुणों से जीवन में वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे वे माता-पिता की आज्ञा का पालन करेंगे परंतु रदा कदा अपनी मर्जी के कार्य भी करेंगे। वे शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में माता-पिता की सलाह लेंगे वे व्यावहारिक बुद्धि के होंगे अतः आपको उन्हें स्वतन्त्र रूप से कार्य करने देने चाहिए तथा उन पर किसी भी प्रकार का दबाव नहीं डालना चालिए। इससे आपके सम्बन्धों में अनुकूलता बनी रहेगी।

अध्ययन के क्षेत्र में आपकी सन्तति काफी परिश्रम एवं पराक्रम से ही सन्तोषजनक उन्नति करने में समर्थ होगे। यद्यपि आप उनकी शिक्षा का समुचित प्रबन्ध करेंगी लेकिन वे इसका पूर्ण लाभ उठाने में समर्थ होंगी परन्तु वे व्यावहारिक प्रवृति के होंगे तथा अपनी चतुराई से आजीविका अर्जन में समर्थ रहेंगे तथा आनन्द पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे। इसके अतिरिक्त तेजस्वी प्रवृति होने के कारण यदा-कदा अन्य सामाजिक जनों से उनका विवाद भी हो सकता है लेकिन सामान्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

AMAN MITTAL

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आपके विरोधी या शत्रु कोई उच्चाधिकारी या उच्च व्यक्ति होंगे। साथ ही आपके शत्रुओं की संख्या भी अधिक रहेगी तथा समाज में प्रत्येक क्षेत्र में आपके विरोधी उत्पन्न होंगे। यद्यपि आपके सेवक सभी अच्छे एवं ईमानदार होंगे परन्तु यदा कदा उनकी चोरी की आदत से आप किंचित परेशानी की अनुभूति कर सकते हैं। साथ ही आपके गुप्त रहस्यों के बारे में भी वे जानकारी रखेंगे तथा अवसरानुकूल अन्य जनों के समक्ष आपके रहस्यों को उजागर करेंगे जिससे मान सम्मान में न्यूनता आएगी। आप अत्यधिक व्ययशील प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे तथा उन्मुक्त रूप से धन व्यय करेंगे इससे यदा कदा आपको आर्थिक परेशानी का सामना करना पड़ेगा तथा कर्ज आदि भी लेना पड़ेगा। साथ ही ऋणदाता आप पर कोई मुकद्दमा भी दायर कर सकते है क्योंकि आप आसानी से ऋण वापस नहीं कर पाएंगे। अतः ऋण लेने की प्रवृति की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए। साथ ही अन्य फौजदारी मामलों में भी आपको आर्थिक नुकसान हो सकता है लेकिन अत्यधिक परिश्रम एवं समय के बाद आपको इसमें सफलता अवश्य मिलेगी।

आपके मामा और मामियों का स्वभाव अच्छा रहेगा तथा समाज में वे सम्मानीय रहेंगे। लेकिन वे अल्पमात्रा में कंजूस प्रवृत्ति के होंगे अतः जितना अपनत्व या लगाव प्रदर्शित करेंगे उसके विपरीत अल्प मात्रा में ही सहयोग प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त कार्य प्रारंभ में सहयोग न करके अन्त में सहयोग करेंगे। साथ ही आपके मुकद्दमे भी सामान्य रूप से चलते रहेंगे। इस प्रकार न्यूनधिक रूप से आप मुकद्दमे से संबध रखेंगे तथा अन्त में आपको इनमें सफलता प्राप्त होगी तथा मान सम्मान में भी वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त खान पान में भी आपको यथोचित परहेज रखना चाहिए अन्यथा रक्त विकार संबन्धी परेशानियां हो सकती है।

VISHAKHA GARG

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप एक विदुषी तथा बुद्धिमती महिला होंगी तथा शत्रुता के भाव की सामान्यतया उपेक्षा ही करेंगी। यद्यपि आप शान्ति पूर्वक समय व्यतीत करने की इच्छुक रहेंगी परन्तु आपके शत्रु एवं विरोधी लोग इसमें व्यवधान उत्पन्न करेंगे तथा आपके सम्मान में न्यूनता एवं सामाजिक स्तर पर उपेक्षा करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगे। अतः उनकी ऐसी प्रवृत्तियों पर अंकुश लगाने के लिए कोर्ट में मुकद्दमे दायर कर सकती हैं। इस प्रकार आप दृढ़ता तथा बहादुरी से शत्रु वर्ग का सामना करेंगी तथा उनको पराजित करने में समर्थ रहेंगी। इस कार्य में आपकी बुद्धिमता तथा सहमित्रों का मंडल भी सहयोग प्रदान करेगा। यदा कदा परिवार या बन्धु वर्ग से भी आपको विरोध का सामना करना पड़ सकता है परन्तु अन्ततोगत्वा इसमें आपको ही सफलता प्राप्त होगी। आप नैतिकता का अनुपालन करेंगी अतः शत्रु पक्ष का

दमन करने के लिए नकारात्मक साधनों का कभी भी प्रयोग नहीं करेंगी। साथ ही पारिवारिक सुख शान्ति बनाने के लिए सर्वत्र यत्नशील रहेंगी।

आपका सेवक वर्ग भी आज्ञाकारी रहेगा तथा आपको पूर्ण सम्मान प्रदान करेगा। अपने सेवकों तथा सहायकों के प्रति आपका दृष्टिकोण सकारात्मक तथा अपनत्व का रहेगा। जीवन में ऐसे अवसर अल्प मात्रा में ही आएंगे जबकि आपको ऋण की आवश्यकता पड़ेगी यदि आ भी गई तो आप ऋण से शीघ्र ही मुक्ति पा जाएंगी। आपको अपने मामा मामियों से अच्छे संबंध रखने चाहिए क्योंकि मामा से जीवन में आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी लेकिन मामियों के स्वभाव में भिन्नता के कारण यदा कदा इसमें न्यूनता आएगी तथा वे आपको अल्प मात्रा में ही सहयोग प्रदान करेंगी।

यदा कदा जीवन में आपको मुकद्दमों आदि का भी सामना करना पड़ेगा परन्तु अंत में विजय आपको ही होगी। इस प्रकार आप समाज में एक आदरणीय तथा सम्मानीय समझी जाएंगी तथा अपने अच्छे संबंधों से अन्य जनों से उचित सहयोग एवं आदर प्राप्त करेंगी।

AMAN MITTAL

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है सामान्यतया सप्तम भाव में वृष राशि की स्थिति से जातक का सहयोगी सुशील परिश्रमी धनाढ्य एवं बुद्धिमान होता है। वह पराक्रमी साहसी तथा व्यावहारिक होता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी सुशील स्वभाव की होंगी परन्तु तेजस्विता का भाव भी उनमें विद्यमान होगा। सांसारिक कार्य कलापों को वह व्यावहारिकता एवं बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगी। नैतिकता के प्रति भी उनकी रूचि होगी जिससे सुख संसाधनों के प्रति भी लालयित होगी। अपने महत्वपूर्ण कार्यो को बुद्धिमता एवं विधिपूर्वक सम्पन्न करेंगी। कर्तव्य परायणता का भाव भी उनमें विद्यमान होगा तथा परिवार एवं समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करेंगी।

आपकी पत्नी देखने में सुंदर एवं लालिमा लिए गौरवर्ण की होंगी तथा उनका कद भी मध्यम होगा शारीरिक संरचना की दृष्टि से उनका सौन्दर्य आकर्षण होगा एवं अन्य अंग प्रत्यंग भी पुष्टता एवं सुडौलता से युक्त होंगे जिससे उनके सौन्दर्य एवं व्यक्तित्व के आकर्षण में वृद्धि होगी। शारीरिक स्वस्थता बनाए रखने के लिए समयानुसार व्यायाम या योग क्रियाएं भी सम्पन्न करेंगी। वृष राशि के प्रभाव से संगीत एवं कला में भी रूचिशील होगी तथा सुंदर एवं कलात्मक वस्तुओं का संग्रह करेंगी।

सप्तम भाव में वृष राशि के प्रभाव से आपका विवाह यथोचित समय पर होगा। आपका विवाह बंधु या संबन्धियों के माध्यम से होगा। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा तथा एक दूसरे के प्रति प्रेम एवं समर्पण का भाव रहेगा। साथ ही अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यो को एक दूसरे की सहयोग तथा सहमति से सम्पन्न करेंगे।

आपका विवाह किसी समृद्ध परिवार से होगा एवं आर्थिक एवं सामाजिक रूप से वे समृद्ध होंगे। विवाह में आपको प्रचुर मात्रा में दहेज के रूप में धन सम्पति की प्राप्ति होगी। विवाह के बाद सास ससुर से आपके सामान्य संबंध होंगे तथा भविष्य में भी उनसे नैतिक तथा आर्थिक सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का सेवा भाव रहेगा तथा सुख दुख में उनकी यथोचित सेवा करेंगी। देवर एवं ननद भी उनके सद्व्यवहार से प्रसन्न होंगे तथा उन्हें यथोचित मान सम्मान एवं सहयोग प्रदान करेंगे ।

व्यापार या अन्य महत्वपूर्ण कार्यो में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल होगी तथा इससे लाभ एवं उन्नति होगी।

VISHAKHA GARG

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है तथा केतु भी सप्तम भाव को प्रभावित कर रहा है। सामान्यतया सप्तम भाव में मकर राशि की स्थिति से जातक का सहयोगी, चंचल वात प्रवृति एवं धनवान होता है। केतु के प्रभाव से उसमें तेजस्विता पराक्रम एवं साहस का भाव भी विद्यमान रहता है एवं उसकी इच्छाएं अधिक होती है।

अतः इसके प्रभाव से आपके पति तेजस्वी स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा चंचलता का भाव भी उनमें विद्यमान रहेगा। सांसारिक कार्य कलापों को करने में वह चतुर होंगे तथा अपने साहसिक कार्य कलापों से अन्य जनों को प्रभावित करेंगे। आधुनिकता के प्रति उनके मन में आकर्षण रहेगा इसी परिपेक्ष्य में वे पाश्चत्य साहित्य या संस्कृति का अनुकरण कर सकते है। केतु के प्रभाव से उनमें कर्तव्य परायणता की भावना की कमी होगी।

आपके पति किंचित लालिमा लिए गौर वर्ण के व्यक्ति होंगे तथा उनका कद भी मध्यम रहेगा। शारीरिक संरचना भी उनकी दर्शनीय रहेगी तथा शरीर में पुष्टता तथा सुडौलता बनी रहेगी जिससे उनके व्यक्तित्व में निखार आएगा। आधुनिकता के प्रति उनका आकर्षण रहेगा तथा पाश्चात्य संगीत एवं संस्कृति में रूचिशील होंगे। इसके अतिरिक्त कलात्मक वस्तुओं का संग्रह करने में भी तत्पर रहेंगे।

सप्तम भाव में केतु के प्रभाव से आपके विवाह में विलम्ब होगा। आपका विवाह किसी संबंधी के माध्यम से सम्पन्न होगा तथा मकर राशि में केतु की स्थिति के प्रभाव से आप स्वेच्छा से प्रेम या अंतर्जातीय विवाह भी कर सकती है। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा एवं एक दूसरे के प्रति प्रेम एवं आकर्षण होगा। लेकिन पति के तेजस्वी वाणी एवं उग्रस्वभाव से यदा कदा कुछ परेशानियां भी हो सकती है लेकिन आप जीवन में सामंजस्य स्थापित करने में समर्थ होंगी।

आपका ससुराल किसी मध्यम परिवार से होगा तथा सामाजिक एवं आर्थिक रूप से वे सामान्य होंगे। अतः विवाह में मायके से आपको दहेज के रूप में विशेष धन सम्पति की प्राप्ति नहीं होगी एवं बहुमूल्य उपहारों की भी न्यूनता रहेगी सास ससुर से आपके संबंध औपचारिक रहेंगे तथा वे आपको सामान्य स्नेह प्रदान करेंगे।

सास ससुर के प्रति आपके पति का विशेष सेवा भाव नहीं रहेगा तथा सुख दुख में उनका यथोचित ध्यान नहीं रखेंगे। साथ ही साले एवं सालियों को भी अपने व्यवहार से असन्तुष्ट रखेंगे।

व्यापार या किसी महत्वपूर्ण कार्य में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल नहीं रहेगी तथा इनसे लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। अतः यत्नपूर्वक साझेदारी की उपेक्षा ही करनी चाहिए।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

AMAN MITTAL

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप अध्यात्म विज्ञान में अत्यधिक रूचिशील रहेंगे। साथ ही ज्यौतिष एवं तंत्र मंत्र आदि में भी श्रद्धा रहेगी तथा अवसरानुकूल इस क्षेत्र में कार्य करने के लिए तत्पर होंगे। आपकी पूर्वाभास शक्ति उत्तम रहेगी तथा अन्तर्प्रज्ञा के द्वारा भविष्यवाणी करने में समर्थ होंगे। वास्तव में संसार की असमान्य बातों में आपकी प्रगाढ़ रूचि रहेगी तथा इन विषयों पर समय समय पर कार्य करते रहेंगे। इसके साथ ही ज्यौतिष या आध्यात्मिक क्षेत्र में आपको विशिष्ट ख्याति तथा सम्मान भी मिल सकता है।

आपको अपने वृद्धजनों से पैतृक सम्पत्ति में जमीन जायदाद की प्राप्ति होगी तथा काफी चल एवं अचल सम्पत्ति आपके नाम रहेगी जिससे आप पूर्ण सन्तुष्ट एवं प्रसन्न रहेंगे। आपात्काल में बिना किसी कार्य को किए हुए अपनी जायदाद को बेचकर आर्थिक सुदृढ़ता भी प्राप्त कर सकते है। साथ ही आपका जीवन भी आराम से व्यतीत होगा तथा समस्त सुख सुविधाओं से युक्त रहेंगे। शादी आदि के अवसर पर आपको काफी मात्रा में आपकी मांग पर दहेज की प्राप्ति होगी। इसमें धन आभूषण वाहन तथा अन्य आधुनिक उपहार होंगे। बीमे आदि से भी आपको लाभ होगा तथा इसकी एजेंसी के द्वारा आप अतिरिक्त आय अर्जित कर सकते हैं। आपके जीवन में चोरी डकैती या अन्य दुर्घटनाएं अल्प मात्रा में होंगी तथा इससे आपको कोई विशेष हानि या परेशानी नहीं होगी। इसके अतिरिक्त आपकी आयु उत्तम रहेगी तथा जीवन को सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करने में समर्थ रहेंगे।

VISHAKHA GARG

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप अध्यात्म, ज्यौतिष अथवा तंत्र मंत्र आदि पर विश्वास कम ही करेंगी क्योंकि आप एक व्यावहारिक महिला तथा अनावश्यक समय बर्बाद करना या स्वप्न देखना आपको उचित नहीं लगता तथा अपने पराक्रम एवं कार्य पर आपका पूर्ण विश्वास रहेगा। पैतृक सम्पत्ति की आपको प्राप्ति होगी लेकिन यह अल्प मात्रा में ही होगी परन्तु इसका आप पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा क्योंकि आपके पास पहले ही प्रचुर मात्रा में धनऐश्वर्य रहेगा तथा आवश्यक सुख संसाधनों से भी युक्त रहेंगी। आप एक सिद्धांतवादी महिला होगी तथा दाम्पत्य जीवन भी अच्छा रहेगा।

जीवन में आपकी कुंडली के अनुसार आपके घर में चोरी आदि की भी संभावना रहेगी लेकिन इससे कोई विशेष हानि नहीं होगी क्योंकि पुलिस या अन्य सूत्रों से आपको अपना सामान सही सलामत वापस मिल जाएगा। बीमा आदि करने से भी आपको कोई विशेष लाभ नहीं होगा। अतः इस क्षेत्र में अनावश्यक पूंजी निवेश न करें तथा अन्यत्र उसका सदुपयोग करें।

शारीरिक सुरक्षा के प्रति आपको हमेशा सतर्क रहना चाहिए तथा यत्नपूर्वक दुर्घटना आदि की उपेक्षा करनी चाहिए तथा इससे बचने के लिए आवश्यक रूप से तैयार रहना चाहिए। इसके अतिरिक्त आपकी आयु उत्तम रहेगी तथा सम्पूर्ण सांसारिक सुखों का उपभोग करते हुए अपना जीवन व्यतीत करेंगी।

AMAN MITTAL

आपके जन्म समय में नवम भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है। अतः इसके प्रभाव से आप एक भाग्यवादी पुरूष होंगे। आप अपने को अन्य जनों के समक्ष आवश्यकता से अधिक धार्मिक प्रदर्शित करने की कोशिश करेंगे तथा पारिवारिक परम्परानुसार धर्म का अनुपालन करेंगे। साथ ही भगवान के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा दैनिक पूजा या अन्य प्रकार से आत्मिक सन्तुष्टि प्राप्त कर सकते हैं लेकिन यदा कदा इसमें उदासीनता का भाव भी रखेंगे। अतः दैनिक पूजन कार्यक्रम में व्यवधान रहेगा।

आप उच्चशिक्षा प्राप्त करने के उत्सुक रहेंगे तथा इसी परिपेक्ष्य में आप अध्यात्मिक, तंत्र मंत्र एवं ज्यौतिष आदि का अध्ययन भी कर सकते हैं। साथ ही सन्तवाणी का भी ध्यान से श्रवण करेंगे। आपकी प्रवृति परिवर्तनीय होगी। अतः आप समयानुसार अपने शब्दों या वादों को परिवर्तन करेंगे। आप कई तीर्थ स्थानों की यात्राएं भी सम्पन्न कर सकते है तथा अपने धर्म के समस्त पवित्र ग्रंथों का श्रद्धा पूर्वक अध्ययन करेंगे। जीवन में समय समय पर लम्बी यात्राएं सम्पन्न करते रहेंगे तथा इनसे आपको इच्छित धनार्जन भी होगा परन्तु अपनी प्रवृति एवं आर्थिक मामलों में संकीर्णता के कारण यदा कदा आपके मान सम्मान में न्यूनता भी आएगी।

आप एक आदर्श तथा प्रसिद्धि व्यक्ति होंगे। यद्यपि आप कई बार धमार्थ कुछ दान देने की सोचेंगे परन्तु वास्तव में यह दिखावा होगा तथा आप किसी ऐसे कार्य को करना पसंद नहीं करेंगे जिसमें धन का व्यय होता हो परन्तु अपने पर आप आवश्यकताओं से अधिक व्यय करेंगे लेकिन अन्य जनों की सेवा या सहायता के लिए कुछ भी नहीं करेंगे। पौत्रों से आपको सुख एवं आनन्द प्राप्त होगा वास्तव में आप पूर्वजन्मों के पुण्यों से ही इस जीवन में सुख ऐश्वर्य की अनुभूति कर रहें है लेकिन अगले जीवन के लिए भी आपको कुछ करने की ओर प्रवृत होना चाहिए। इसके अतिरिक्त आप धार्मिक प्रवृति से युक्त उपवासकर्ता, तीर्थ स्थलों की यात्रा करने वाले तथा धर्म के प्रति श्रद्धालु रहेंगे।

VISHAKHA GARG

आपके जन्म समय में नवम भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से धर्म के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित रहेंगी तथा इसके प्रति आपके मन में पूर्ण आस्था रहेगी। साथ ही ध्यान या समाधि आदि में भी रूचिशील रहेंगी तथा अन्तदृष्टि भी प्रबल रहेंगी। ज्योतिष या तंत्र मंत्र के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा इसका न्यूनाधिक ज्ञान भी रहेगा। आप नियमित रूप से पूजा अर्चना करेंगी तथा आध्यात्मिक विषयों का पूर्ण ज्ञान रहेगा तथा इन पर धारा प्रवाह भाषण करने में भी समर्थ रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप किसी धार्मिक संस्था से सम्बन्धित हो सकती है तथा उसमें कोई उच्च या सम्मान्नीय पद भी प्राप्त कर सकती हैं ।

अपने व्यवसाय में आप कुशल रहेंगी तथा इससे समाज में इच्छित मान सम्मान एवं ख्याति अर्जित करेंगी तथा लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। साथ ही परिश्रम एवं लगन के द्वारा उच्च शिक्षा प्राप्त करने में भी सफल रहेंगी तथा धार्मिक विषयों का व्यक्तिगत रूप से ज्ञान प्राप्त करेंगी। दैनिक पूजन सम्पन्न करने से आपकी अर्न्तप्रज्ञा शक्ति विकसित होगी तथा आपके पूर्वाभास तथा भविष्य वाणियां सही सिद्ध होंगी।

लम्बी दूरी की यात्राओं से आपको लाभ ऐश्वर्य एवं ख्याति प्राप्त होगी। साथ ही आप किसी दूसरे शहर या देश में किसी धार्मिक संस्था की स्थापना भी कर सकती हैं। आप परोपकार तथा सामाजिक जनों के हित कार्यो को करने में भी हमेशा तत्पर रहेंगी। पौत्रों से आपको इच्छित सहयोग प्राप्त होगा तथा अपने पूर्व जन्म के पुण्यों से इस जीवन में सुख ऐश्वर्य को अर्जित करेंगी। इसके अतिरिक्त आप धार्मिक सन्तों के प्रति श्रद्धालु , मन्दिर, तालाब आदि परोपकार के कार्य करने वाली तथा आर्थिक रूप से समृद्ध रहकर अपना जीवन यापन करेंगी।

AMAN MITTAL

आपके जन्म समय में दशमभाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। साथ ही मंगल भी मित्र राशि में दशमभाव में ही स्थित है। सिंह राशि एवं मंगल दोनों ही अग्नितत्व प्रधान है अतः इनके प्रभाव से आपका कार्य क्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया से युक्त होगा तथा श्रमसाध्य के भाव की इसमें अल्पता होगी। साथ ही कार्य क्षेत्र में आप सतत उन्नतिशील होंगे तथा स्वतंत्र कार्य या व्यवसाय के प्रति आपकी विशेष रूचि रहेगी तथा इसमें आपको सफलता की भी प्राप्ति होगी।

दशमभाव में सिंह राशिस्थ मंगल के प्रभाव से आपको डाक्टर, इंजीनियर, कम्प्यूटर विज्ञान, होटल प्रबंधक, सेना, पुलिस, एवं जेल आदि पराक्रमी विभाग में, अग्निशमन विभाग, औषधि विज्ञान, ऊर्जा एवं शक्ति विभाग आदि विभागों एवं क्षेत्रों में कार्य करने से वांछित उन्नति एवं सफलता प्राप्त होगी तथा इसमें अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा अतः आपको यत्नपूर्वक इन्हीं क्षेत्रों में अपनी आजीविका को प्रारंभ करना चाहिए।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए सोना चांदी आदि धातुओं का व्यापार, विद्युत उपकरणों का उत्पादन या विक्रय कार्य, औषधि विक्रय, होटल, अग्निशमन यंत्रों के निर्माण या विक्रय, शस्त्र विक्रय या निर्माण अथवा सैनिकों के वस्त्र आदि से वांछित लाभ एवं धन की प्राप्ति होगी साथ ही इन क्षेत्रों में आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे तथा अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा अतः आपको यत्नपूर्वक उपरोक्त क्षेत्रों या कार्यो में ही अपना व्यवसाय प्रारंभ करना चाहिए। साथ ही कम्प्यूटर से संबधित कम्पनी आदि का भी आप संचालन कर सकते है।

दशमभाव में मंगल की सिंह राशि में स्थिति के प्रभाव से जीवन में आपको वांछित मान प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी तथा किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को भी आप स्वपरिश्रम एवं योग्यता से अर्जित करेंगे जिससे समाज में आप का प्रभाव स्थापित होगा तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। साथ ही किसी सम्मानित या आधिकारिक संस्था में सम्मानित सदस्य या पदाधिकारी के रूप में कार्यरत हो सकते हैं। इससे समाज में आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा प्रसिद्धि भी दूर दूर तक व्याप्त होगी जिससे आपको मानसिक सन्तुष्टि की प्राप्ति होगी।

आपके पिता पराक्रमी तेजस्वी एवं बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। साथ ही सभी लोग उनके प्रभाव को स्वीकार करेंगे एवं उन्हें वांछित सम्मान देंगे। वे भी सामाजिक जनों की भलाई के कार्यो में तत्पर होंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह का भाव होगा तथा आपकी उच्च शिक्षा का यथोचित प्रबंध करके आपको योग्य नागरिक बनाएंगे। आपकी कार्यक्षेत्र की उन्नति एवं सफलता में भी उनका विशेष योगदान होगा तथा

उनके प्रभाव से आपको प्रचुर मात्रा में मान सम्मान की प्राप्ति होगी। आप भी अपने उत्तम कार्य कलापों से पिता के मान सम्मान में वृद्धि करेंगे तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को उनकी सलाह से सम्पन्न करेंगे। अपनी इस आज्ञाकारिता के भाव से पिता के आप प्रिय होंगे। आपके वैचारिक एवं सैद्धान्तिक विचारों में भी समानता होगी जिससे आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी।

VISHAKHA GARG

आपके जन्म समय में दशमभाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। साथ ही बृहस्पति भी नवमेश होकर दशमभाव में मित्रराशि में स्थित है। मेष राशि अग्नितत्व एवं बृहस्पति वायुतत्व ग्रह है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक क्रिया प्रधान होगा तथा इसमें सतत उन्नति के मार्ग पर आप अग्रसर होंगी। साथ ही कार्यक्षेत्र से आप शांति एवं सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगी।

मित्रराशिस्थ बृहस्पति की दशम भाव में स्थिति के प्रभाव से आपके लिए आजीविका की दृष्टि से शिक्षा विभाग, धर्मोपदेशक, प्रोफेसर, न्यायाधीश, वकील, वैरिस्टर, सचिव, सलाहकार, बैंक क्षेत्र, शेयर विभाग, व्यवस्थापक, प्रबंधक, कार्मिक विभाग या राजनीति के क्षेत्र में इच्छित उन्नति एवं मान सम्मान की प्राप्ति होगी। अतः आप अपने उज्ज्वल भविष्य के लिए उपरोक्त क्षेत्रों एवं विभागों में ही कार्यरत होना चाहिए। इससे आप सतत उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगी तथा उन्नति के क्षेत्र में अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा।

व्यापारिक क्षेत्र में आप बृहस्पति की शुभस्थिति से वांछित लाभ एवं धन अर्जित करने में समर्थ होंगी। आपको सुवर्ण आदि धातु का व्यापार, शेयर का क्रय विक्रय या शेयर ब्रोकर, वित्तकम्पनियों में पूंजी निवेश या सरकारी क्षेत्र के व्यापार या ठेके आदि से वांछित लाभ एवं उन्नति प्राप्त होगी। यदि आप व्यापार के इच्छुक है तो आपको उपरोक्त क्षेत्रों में ही व्यापार का शुभारंभ करना चाहिए। इससे आप सतत उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगी तथा अन्य समस्याओं से सुरक्षित रखेंगी।

दशमभाव में बृहस्पति की केन्द्र में स्थिति के प्रभाव से जीवन में आपको वांछित मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी तथा किसी उच्च पद को भी प्राप्त करेंगी। साथ ही सामाजिक धार्मिक एवं अन्य संस्थाओं के भी आप पदाधिकारी हो सकती है। समाज में आप एक प्रभावशाली एवं अधिकार प्राप्त महिला होंगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। अतः आपको निष्ठा एवं परिश्रम से अपने कार्यो को सम्पन्न करना चाहिए जिससे यथोचित समय पर आप मान सम्मान एवं अधिकारों की प्राप्ति कर सकें।

आपके पिता प्रभावशाली शिक्षित एवं बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा समाज में उनका पूर्ण आदर तथा सम्मान रहेगा। साथ ही उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य तथा स्नेह का भाव होगा तथा आपके कार्यक्षेत्र में उनसे पूर्ण सहयोग की प्राप्ति होगी तथा उनके प्रभाव से आप इच्छित उन्नति सफलता एवं यश अर्जित करेंगी। साथ ही आप भी पिता के सम्मान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि करेंगी। आप दोनों के परस्पर संबंधों में भी

मधुरता रहेगी तथा वैचारिक एवं सैद्धान्तिक समानता बनी रहेगी। इसके अतिरिक्त आप एक आज्ञाकारी पुत्री होंगी तथा पिता की सलाह एवं सहयोग से ही अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करेंगी।

AMAN MITTAL

आपके जन्म समय में एकादश भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप एक महत्वाकांक्षी पुरूष होंगे तथा मन में विभिन्न प्रकार की इच्छाएं तथा उमंगें विद्यमान रहेंगी। चूंकि आप एक पराक्रमी तथा परिश्रमी पुरूष होंगे अतः जीवन में आपकी अधिकाशं आकांक्षाएं पूर्ण हो जाएंगी। आपकी कुंडली में आर्थिक महत्वाकांक्षा की प्रबलता रहेगी साथ ही विभिन्न प्रकार से धन अर्जित करने में भी समर्थ रहेंगे अतः आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेंगी। आप लेखन कार्य, ज्यौतिष, कमीशन एजेंट, गणित या शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत हो सकते है अथवा इनसे आपको प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ की प्राप्ति हो सकती है। साथ ही व्यापार के द्वारा भी आपके आय स्रोतों में वृद्धि होगी।

आपको बड़े भाइयों की अपेक्षा बहिनों से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा साथ ही उनकी आपके प्रति स्नेह एवं पूर्ण अपनत्व का भाव रहेगा एवं आपको सुख दुख में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी तथा अवसरनुकूल माता की तरह आपका पालन पोषण तथा मार्ग निर्देशन करेंगी।

आप मित्र मंडली के मध्य अत्यन्त ही प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे तथा आपके सभी मित्र चतुर चालाक एवं शिक्षित होंगे। अवस्था के साथ साथ मित्रों के आप पथ प्रदर्शन भी करेंगे तथा वे आपसे हमेशा सलाह लेते रहेंगे। आपका सामाजिक स्तर भी सामान्यतया उच्च रहेगा तथा अपने समाज के मध्य प्रतिष्ठित एवं आदरणीय समझे जाएंगे। साथ ही अन्य जनों की सेवा एवं परोपकार संबंधी कार्यो को भी समय समय पर सम्पन्न करेंगे। इसके अतिरिक्त आप अन्य क्षेत्रों में भी उन्नतिशील रहेंगे तथा धन ऐश्वर्य से सुसम्पन्न रहकर अपना समय व्यतीत करेंगे।

VISHAKHA GARG

आपकी जन्म कुंडली में एकादश भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आपके मन में विभिन्न प्रकार की सांसारिक इच्छाएं विद्यमान रहेंगी तथा महत्वाकांक्षा के भाव की भी प्रबलता दृष्टिगोचर होगी। जीवन में अपनी इच्छाओं तथा महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति परिश्रम एवं पराक्रम से करने में सफल रहेंगी। आपका धनार्जन उत्तम रहेगा तथा आय स्रोतों की भी अधिकता रहेगी। यद्यपि आपका धनार्जन उत्तम रहेगा लेकिन बचत की प्रवृत्ति भी आप में रहेगी। अतः आर्थिक रूप से आपको कभी कोई परेशानी नहीं होगी। आपको ज्येष्ठ भाइयों की अपेक्षा बहिनों से इच्छित लाभ सहयोग एवं स्नेह प्राप्त होगा तथा आप भी उनको इच्छित मान सम्मान प्रदान करती रहेंगी।

आप सक्रिय प्रवृत्ति के लोगों को मित्र बनाने की इच्छुक रहेंगी तथा वे आपके लिए विश्वसनीय भी रहेंगे। मित्र मंडल में आपकी लोकप्रियता रहेगी तथा अपने कलात्मक कार्य

कलापों से आप उनका मनोंरजन करने में तत्पर रहेंगी। आपकी मित्रता का क्षेत्र कला संगीत या नाटक आदि के ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों से अधिक होगा तथा इन्हीं क्षेत्रों से जीवन में आपको इच्छित धनार्जन एवं लाभ भी होगा। इस प्रकार मित्रों से युक्त होकर प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

आपका सामाजिक स्तर उच्च रहेगा तथा समाज में आदरणीया तथा प्रतिष्ठित महिला समझी जाएंगी। अन्य सामाजिक जनों की सेवा तथा सहायता करना आप अपना परमप्रिय कर्तव्य समझेंगी तथा इसी परिपेक्ष्य में किसी विशिष्ट सम्मान की प्राप्ति भी होने की संभावना रहेगी। आप कभी कभी स्वयं ही एकाकीपन की अनुभूति करेंगी लेकिन आपका सामान्य जीवन भौतिक सुख संसाधनों से तथा अन्य वैभव से युक्त रहकर आनन्द पूर्वक व्यतीत होगा।

AMAN MITTAL

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप आर्थिक क्षेत्र में सुदृढ़, धन ,वाहन एवं व्यापार आदि से उच्च स्थिति में रहेंगे। साथ ही आप एक अधिकारी स्तर के व्यक्ति होंगे तथा सुदंर घर से भी युक्त रहेंगे आपकी आय निरन्तर होती रहेगी क्योंकि आपको धनार्जन करना अच्छी तरह आता है। आपके सरकारी या अर्धसरकारी बांडो या संस्थाओं में पूंजीनिवेश रहेगा जिससे समय समय पर पूर्ण लाभ होगा। साथ ही आप एक ईमानदार उद्योगपति भी हो सकते है। आप आजीवन आर्थिक रूप से सुरक्षित रहेंगे तथा प्रचुर मात्रा में आय स्रोत भी प्रशस्त होंगे। आपकी बचत उत्तम रहेगी तथा अपने कुशलता से धनार्जन करके बचत भी करेंगे।

आपका रहन सहन तथा खान पान उच्च स्तर का रहेगा तथा इसी स्तर को हमेशा बनाएं रखेंगे लेकिन आपको इसमें अत्यधिक व्यय करना पड़ेगा। आपको स्वादिष्ट एवं महंगा भोजन करना भी पसन्द रहेगा जिसके लिए आप अच्छे होटलों में भी जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त मित्रों आदि पर भी आप मुक्त भाव से व्यय करेंगे।

आपकी यात्राएं भी सामान्यतया होती रहेंगी तथा इनसे आपको लाभ एवं सम्मान प्राप्त होगा। आपकी देश के साथ साथ विदेश संबंधी यात्राएं भी होगी ये यात्राएं कार्य वश या भ्रमण के लिए होंगी क्योंकि आपको अच्छे स्थानों की सैर करना तथा अच्छे दृश्य देखना अच्छा लगता है। इस प्रकार आप प्रसन्नता पूर्वक धनार्जन करके अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

VISHAKHA GARG

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप सादा जीवन उच्च विचार के सिद्धांत का अनुपालन करने वाली महिला होंगी तथा जीवन में इसका अनुकरण करेंगी। आर्थिक क्षेत्र में आपकी सतर्कता बनी रहेगी। साथ ही ईमानदार होगी अतः बेईमानी करने वालों से आपको घृणा रहेगी। आपका धनार्जन स्वयं की योग्यता तथा परिश्रम से ही अर्जित होगा। इस प्रकार आर्थिक दृष्टि से भाग्यशाली महिला होंगी।

जीवन में आपको आर्थिक कष्ट की अनुभूति अल्प मात्रा में ही होगी वास्तव में आपकी आवश्यकताएं सीधी सादी एवं सीमित मात्रा में रहेंगी तथा भौतिकता पर आपका विशेष आकर्षण नहीं रहेगा। इससे आपका व्यय सीमित तथा नियंत्रित रहेगा। आप शीघ्र लाभ अर्जित की अपेक्षा दीर्घावधि लाभ की अधिक इच्छुक रहेंगी। धन संग्रह के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी तथा व्यय के साथ बचत भी अवश्य करेंगी। इस प्रकार आपके समस्त पारिवारिक तथा अन्य व्यय आवश्यकता के अनुसार ही रहेंगे एवं इनमें अनावश्यक व्यय नहीं होगा जिससे आर्थिक सुदृढ़ता प्रायः बनी रहेगी साथ ही अपनी समृद्धि के द्वारा भविष्य के लिए

कल्याणकारी योजनाओं पर भी व्यय करेंगी। इस प्रकार आप अपना धन बड़ी बड़ी कंपनियों पर लगाएंगी जहां से उचित लाभ प्राप्त होगा।

आपकी दूर समीप की यात्राएं समय समय पर होती रहेंगी जिनसे प्रारंभ में व्यय होकर भविष्य में लाभ एवं सम्मान की प्राप्ति होगी। इसके साथ ही आपकी विदेश संबंधी कोई लाभदायक एवं उन्नतिकारक यात्रा भी सम्पन्न होगी। इस प्रकार आप धन-वैभव से युक्त होकर अपना समय व्यतीत करेंगी।

AMAN MITTAL

महादशा :- शनि
(10/04/2010 - 10/04/2029)

शनि की महादशा आपकी कुण्डली में 10/04/2010 को आरम्भ और 10/04/2029 को समाप्त होगी। इसकी अवधि उन्नीस वर्ष है। आपकी जन्म कुण्डली में शनि षष्ठम भाव में अवस्थित है। इसे एक खतरनाक ग्रह माना जाता है। यह निश्चित रूप से एक अशुभ ग्रह है और परिश्रम के फल की प्राप्ति में विलम्ब करता है, किन्तु उससे वंचित नहीं करता। यह जातक के धर्य की परीक्षा लेने के लिए विभिन्न बाधाएं उत्पन्न करता है और उसे लक्ष्य प्राप्त करने के लिए कठिन परिश्रम करने को प्रेरित करता है। आपकी जन्मकुण्डली में षष्ठम भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि अष्टम, द्वादश और तृतीय भाव पर है और यह इन ग्रहों के कार्य को प्रभावित कर रहा है। षष्ठम भाव बीमारी, रोग, भोजन, रोजगार, सहायकों या नौकरों, ऋण, शत्रु, मामा, कंजूसी और तीव्र दुःख का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

षष्ठम भाव में अपनी ही राशि में स्थित महादशा स्वामी शनि भाव को शक्ति प्रदान कर रहा है। इसलिए आप लापरवाही के कारण बीमार हो सकते हैं। लापरवाही के कारण रोग जटिल हो सकते हैं और गंभीरता की सम्भावना है। स्थिति अन्ततः असाध्य हो सकती है।

अर्थ और सम्पत्ति :

शनि की षष्ठम भाव में स्थिति अर्थ तथा सम्पत्ति में वृद्धि के लिए अनुकूल योग नहीं है। आपकी अपने सगे-संबंधियों के साथ-साथ अनेक लोगों से शत्रुता हो सकती है और आप लोगों के मातहत रहेंगे जो आपकी अर्थ तथा सम्पत्ति में वृद्धि के लिए शुभ नहीं है।

व्यवसाय :

व्यवसाय में आप दूसरों के अधीनस्थ होंगे। किन्तु ठेकेदारी, खनन, राजगीरी आदि में लाभ की सम्भावना है। आप इन क्षेत्रों में साहसी होंगे किन्तु झगड़ालू भी होंगे जो आपको हठी और अतिभोजी बनाएगा।

पारिवारिक जीवन :

आपका विवाह आपके जान पहचान के जातक से हो सकता है। पारिवारिक जीवन ईर्ष्या और विवाद से भरा रहेगा क्योंकि आपके जीवन साथी आपको कुछ विशेषाधिकार से वंचित रखेंगे और कर्त्तव्य पालन नहीं करेंगे। उनका यह आचरण आपके जीवन को प्रभावित और पारिवारिक जीवन को दुःखमय बनाएगा।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

उच्च शिक्षा या ज्ञान वर्द्धन अथवा बौद्धिक क्षमता में वृद्धि के लिए समय बहुत अनुकूल नहीं है।

VISHAKHA GARG

महादशा :- शनि
(02/06/2021 - 01/06/2040)

शनि की महादशा उन्नीस वर्ष की है। आपके जीवन में यह 02/06/2021 को आरम्भ और 01/06/2040 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में शनि दशम भाव में स्थित है। यह स्वभाव से एक अशुभ ग्रह है, किन्तु अत्यन्त शक्तिशाली है और शुभ-अशुभ दोनों का कार्य करता है। इसे बाधक ग्रह कहा जाता है जो जातक के धैर्य की परीक्षा लेता है। फल की प्राप्ति में यह विलम्ब करता है, पर उससे वंचित नहीं करता । यह जातक को लक्ष्य की पूर्ति के लिए कठिन परिश्रम करने को प्रेरित करता है। आपकी जन्मकुण्डली में दशम भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि 12 वें, 4 थे तथा 7 वें भाव पर है और यह इन भावों के कार्य को प्रभावित कर रहा है। दशम भाव, जिसमें यह स्थित है, प्रतिष्ठा, सामाजिक सम्मान, सफलता, आदर, ख्याति, उत्तरदायित्व, सांसारिक गतिविधि, पदोन्नति, प्रगति, उच्च पद, सरकार से सम्मान का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

इस महादशा के दौरान आपको स्वास्थ्य सम्बन्धी कोई गम्भीर समस्या नहीं होगी, न ही कोई गम्भीर बीमारी या दुर्घटना होगी और आप सामान्यतया कार्यों को पूरा करने की स्थिति में होंगे। किन्तु, आपको कुछ महत्वपूर्ण कदम उठाने के प्रति सतर्क तथा सावधान रहने की सलाह दी जाती है क्योंकि नीच का शनि मस्तिष्क को प्रभावित करता है।

धन सम्पत्ति :

दशम अर्थात् व्यवसाय व जीविका के भाव में स्थित शनि की 12वें भाव पर दृष्टि है। इसलिए आपको चल-अचल सम्पत्ति में वृद्धि के प्रति सतर्क रहना चाहिए क्योंकि कुछ हानि की सम्भावना है।

व्यवसाय :

शनि दशम भाव में स्थित है और उसे शक्ति प्रदान कर रहा है। आपको आधिकारिक पद की प्राप्ति की सम्भावना है। इस दशा के दौरान आप शासक हो सकते हैं-अथवा आपको मन्त्री पद की प्राप्ति हो सकती है। आप अपने प्रभुत्व तथा सेवा का प्रदर्शन करेंगे।

पारिवारिक जीवन :

दशम भाव से शनि की 12वें, 4थे तथा 7वें भावों अर्थात् शयन स्थान, 'शुभस्थान' और जीवनसाथी के भावों पर दृष्टि के फलस्वरूप आपको एक सुन्दर तथा सहायक जीवन साथी की प्राप्ति होगी, किन्तु, जीवन में विवाद हमेशा होते रहेंगे जिससे आपको मानसिक अशान्ति तथा निराशा बनी रहेगी।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

नकारात्मक विचार के कारण आप अपने मस्तिष्क को सीमित रखेंगे और तपस्वी

रहेंगे।

AMAN MITTAL

महादशा :- बुध
(10/04/2029 - 10/04/2046)

बुध की महादशा 10/04/2029 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 10/04/2046 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध बारहवें भाव में स्थित है। इसके पूर्व आपकी 19 वर्ष की शनि दशा थी। शनि के कारण आपका कुछ अप्रत्यशित परिवर्तन, साझेदारी में नुकसान तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी मामूली समस्या हुई होगी। बुध की वर्तमान दशा में आपका व्यय होगा, शत्रुओं पर विजय तथा विदेशी स्रोतों से लाभ मिलेगा।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। बुध की अपनी ही राशि में स्थिति के कारण आपको कोई गंभीर या बड़ी बीमारी नहीं होगी। किन्तु, विषाणुजन्य बुखार, संक्रामक बीमारी, आँखों तथा पैरों में पीड़ा, चर्मरोग तथा स्नायविक दुर्बलता आदि मौसमी बीमारियाँ हो सकती हैं। इन मामूली बीमारियों को छोड़ आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

आपको दूर स्थानों से लाभ होगा, किन्तु व्यय भी होगा। इसलिए अर्थ की उचित व्यवस्था आवश्यक है। आपको अपनी माता से कुछ लाभ हो सकता हैं। जीविका तथा व्यवसाय के लिए लेखा, पत्रकारिता, अन्तरिक्ष अनुसन्धान, अस्पताल का कार्य या अन्य दातव्य संस्थाओं, विमान-विज्ञान तथा सभी बौद्धिक कार्यों का चयन कर सकते हैं। सूती कपड़ा, रत्न, पुस्तक, लेखन-सामग्री, कम्प्यूटर, हाथ के बने सामान यादि का व्यवसाय लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों की यात्रा, व्यवसाय-व्यापार में सफलता तथा सहयोगियों से सहयोग मिलेगा। आपके सम्मान में उन्नति होगी और आपको उच्च पद की प्राप्ति होगी। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों की यात्रा, धन तथा कठिन श्रम से लक्ष्य की प्राप्ति होगी। विदेश से कारोबार, विरोधियों पर विजय तथा व्यापार की उन्नति होगी।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

शुक्र की अन्तर्दशा के दौरान आपको सुख तथा वाहन की प्राप्ति होगी। सम्पत्ति का लेन-देन भी हो सकता है। आप जमीन-जायदाद खरीद या बेच सकते हैं। किन्तु बुध की अन्तर्दशा में सावधानी बरतें, अन्यथा नुकसान हो सकता है। बुध की अन्तर्दशा में आपकी छोटी और दूर की यात्राएं हो सकती हैं।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। शिक्षा के क्षेत्र में कुछ शुभ परिवर्तन हो सकता है। इस दशा के दौरान आप कुछ शोध-परियोजनाएं आरम्म कर सकते हैं। विज्ञान, लेखा, वाणिज्य, साहित्य, व्यवसाय और अन्तरराष्ट्रीय व्यापार से संबंधित विषयों में आपकी

रुचि हो सकती है। आप प्रतिभाशाली, कूटनीतिक तथा बहुमुखी हैं और विभिन्न विषयों में आपकी रुचि है।

परिवार :

आपका परिवार के साथ संबंध मधुर रहेगा। आपके बच्चों के कार्य-क्षेत्र में परिवर्तन होगा और उन्हें आपकी सहायता की आवश्यकता होगी। आपके जीवन साथी को स्वास्थ्य संबंधी कुछ मामूली समस्याएं, शत्रुओं पर विजय तथा कार्य-स्थान में स्थिति अनुकूल हो सकती है। जीवन साथी के साथ संबंध उत्तम रहेगा। आपकी माता को समृद्धि तथा पिजा को अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों की जीवन वृत्ति सफल होगी जबकि बड़े भाई-बहनों को हर प्रकार का लाभ मिलेगा। आपकी अध्यात्म में रुचि होगी और दान-पुण्य तथा शुभ कार्यो पर व्यय करेंगे।

अन्तर्दशा :

बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप व्यय और यात्रा होगी और रोजगार के अवसर मिलेंगे। केतु कुछ समस्या उत्पन्न कर सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा में सुख तथा हर प्रकार का लाभ मिलेगा। सूर्य के कारण सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के दौरान यश, ख्याति, उत्तम स्वास्थ्य तथा आनन्द की प्राप्ति होगी जबकि योगकारक मंगल की अन्तर्दशा में शक्ति और अधिकार, जीविकापार्जन में सफलता तथा बच्चों से सुख मिलेगा। राहु की अन्तर्दशा में कुछ समस्या उत्पन्न हो सकती है। गुरु की अन्तर्दशा में समृद्धि तथा सम्पत्ति की प्राप्ति और यात्रा होगी जबकि शनि की अन्तर्दशा में कुछ नुकसान तथा मामूली स्वास्थ्य समस्याएं होंगी।

VISHAKHA GARG

महादशा :- बुध
(01/06/2040 - 02/06/2057)

बुध की महादशा 01/06/2040 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 02/06/2057 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध लग्न में स्थित है। बुध की दृष्टि सप्तम भाव पर है। इसके पहले आपकी 19 वर्ष की शनि की दशा चल रही थी। उस दशा के दौरान आपको समृद्धि की प्राप्ति, जीवन वृत्ति में प्रगति तथा यात्रा हुई होगी। बुध की इस दशा के दौरान जीवन का सुख, माता से लाभ, सुखमय वैवाहिक जीवन तथा जीवन में प्रगति होगी।

स्वास्थ्य :

बुध के अपनी ही राशि में होने के कारण आपको उत्तम स्वास्थ्य तथा जीवनी शक्ति की प्राप्ति होगी। आप में शक्ति तथा उत्साह होगा तथा आप अशावादी और प्रसन्न होंगे। आपका व्यक्तित्व व रंगरूप आकर्षक होगा। अधिक परिश्रम तथा थकावट के कारण कोई संक्रामक बीमारी, बुखार अथवा स्नायविक दुर्बलता आदि मौसमी बीमारी हो सकती है।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आप स्वयं धनोपार्जन करेंगे। आपको सम्पत्ति तथा समृद्धि की

प्राप्ति होगी। जीविका तथा व्यवसाय के लिये लेखा, पत्रकारिता, शिक्षण, अन्तरिक्ष अनुसन्धान, वैभानिकी तथा मस्तिष्क से संबद्ध सभी बौद्धिक कार्यों का चयन कर सकते हैं। सूती कपड़ा, रत्न, पुस्तक, लेखन-सामग्री, कम्प्यूटर और हस्तनिर्मित वस्तुओं का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को अचानक लाभ होगा, कार्य-स्थान में स्थिति अनुकूल होगी और उच्च पद तथा अधिकार की प्राप्ति होगी। आपको उच्चाधिकारियों का सद्भाव तथा अधीनस्थ कर्मचारियों से सहयोग मिलेगा। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों की आय तथा लाभ में वृद्धि होगी। इस दशा के दौरान आपको कठिन परिश्रम करना होगा। व्यापारी वाणिज्य व्यापार में कुशल होंगे और उन्हें अच्छा लाभ मिलेगा। आर्थिक-समृद्धि तथा जीवन-वृत्ति में उन्नति के लिये यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन जायदाद :

बुध की अन्तर्दशा में जीवन तथा वाहन का सुख मिलेगा। बुध की दशा के दौरान आपको सभी सुख, माता से लाभ तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी और आपकी जमीन-जायदाद में भी वृद्धि होगी। सम्पत्ति के सभी लेन-देन लाभदायक होंगे। सूर्य की अन्तर्दशा में छोटी तथा शुक्र की अन्तर्दशा में लम्बी यात्राएं होंगी।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप अपनी परीक्षा में सफल होंगे। आप विज्ञान, गणित तथा व्यापार में प्रवीण होंगे। आप तेज हैं और अपनी वाक्पटुता के कारण जाने जाएंगे। लेखा, वाणिज्य, साहित्य तथा ललितकला में भी आपकी रुची होगी। आप तेज, कूटनीतिज्ञ, व्यवहार कुशल, सर्वतोमुखी हैं और विविध विषयों में रुचि रखते हैं।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध बहुत अच्छा रहेगा। आपके बच्चे बहुत अच्छा करेंगे और उन्हें समृद्धि की प्राप्ति होगी, उनकी शिक्षा उत्तम होगी और वे उच्च शिक्षा प्राप्त करेंगे। उनके साथ आपका संबंध बहुत सुन्दर रहेगा। आपके जीवनसाथी की यात्रा होगी और उन्हें सम्पत्ति तथा साझेदारी में लाभ की प्राप्ति होगी। जीवनसाथी के साथ आपका संबंध अत्यना मधुर रहेगा। आपकी माता का जीवन अत्यन्त सफल रहेगा और उन्हें सम्पत्ति, यश और ख्याति की प्राप्ति होगी। आपके पिता का सट्टे तथा ऊँचे कारोबार में निवेश सफल रहेगा। आपके छोटे भाई-बहनों को विभिन्न स्रोतों से लाभ, उनकी मनोकामनाओं की पूर्ति तथा उनके मित्र प्रभावशाली होंगे। आपके बड़े भाई-बहनों की शिक्षा उत्तम होगी, उनके अनेक मित्र होंगे और उन्हें सम्पत्ति तथा माता से लाभ की प्राप्ति होगी। उनके साथ आपके सम्बन्ध अत्यन्त मधुर होंगे।

अन्तर्दशा :

बुध की मुख्य दशा में बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और आपको सम्पत्ति तथा सुख की प्राप्ति होगी। आगे केतु की अन्तर्दशा आपके लिए कुछ समस्याएं खड़ी कर सकती है। शुक्र के कारण आपको बच्चों से सुख तथा सट्टे में लाभ मिलेगा। सूर्य के कारण आपकी छोटी यात्राएं होंगी जबकि उसके बाद आनेवाली चन्द्रदशा के फलस्वरूप

आपको हर प्रकार का लाभ मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा में लाभ तथा विरोधियों पर विजय मिलेगी जबकि राहु की अन्तर्दशा के कारण कुछ समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। गुरू के फलस्वरूप आपको साझेदारों से लाभ तथा जीवन-वृत्ति में प्रगति होगी। शनि की अन्तर्दशा के दौरान कुछ परिवर्तन होगा और धन तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी।

AMAN MITTAL

महादशा :- केतु
(10/04/2046 - 10/04/2053)

केतु की महादशा 10/04/2046 को आरम्भ और 10/04/2053 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में केतु चतुर्थ भाव में स्थित है। केतु की दृष्टि दशम भाव पर है। इसके पहले आपकी बुध की दशा चल रही थी जिसकी अवधि 17 वर्ष थी। बुध के कारण आपकी यात्रा, व्यय, अवांछित परिवर्तन, और सगे संबंधियों की सहायता मिली होगी। केतु की वर्तमान दशा में आपको ख्याति, प्रगति तथा जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आप आशावादी होंगे और स्वयं को स्फूर्तिवान तथा सक्रिय महसूस करेंगे। मौसम में परिवर्तन के कारण आपको पित्तदोष, फोड़ा-फुन्सी, विषाणुजन्य संक्रामक रोग, छाती से संबंधित बीमारी, मूत्राशय की समस्या, वृक्कशोथ की बीमारी आदि हो सकती है। कुछ सतर्कता से इनसे बचाव किया जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी होगी। आपको माता पिता से लाभ हो सकता है। व्यवसाय-व्यापार में अच्छी आय होगी, विभिन्न स्रोतों से लाभ होगा और आप अपना लक्ष्य प्राप्त करने में सफल होंगे। जीविका के लिये विधि, कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी, सम्पर्क-कार्य, प्रबन्धन, ग्राफिक कला, ललित कला, विमान-विज्ञान, शिक्षण, परिष्कृत कला आदि का चयन कर सकते हैं। वस्त्र, चमड़े, रबड़, प्लास्टिक, मवेशी, अनाज, फल, सोने, चाँदी, कलाकृतियों आदि का व्यापार लाभदायक होगा। नौकरीपेशा लोगों को लाभ, आय में वृद्धि, सम्मान और लक्ष्य की प्राप्ति होगी तथा मनोकामना पूरी होगी। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों को साझेदारों से लाभ, कार्य-व्यवसाय से सम्बन्धित यात्रा और व्यापार में वृद्धि होगी। यह दशा आर्थिक और व्यावसायिक उन्नति के लिए उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

शुक्र की अन्तर्दशा के दौरान आपको जीवन का सुख मिलेगा। आप नयी गाड़ी खरीद सकते हैं। सम्पत्ति के मामले तूल पकड़ेंगे और जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी। बुध की अन्तर्दशा में आपकी छोटी-बड़ी यात्रा होगी।

शिक्षा :

आपकी बुनियादी शिक्षा उत्तम होगी। उच्च शिक्षा के लिए आप विद्यालय बदल सकते हैं। आप परीक्षाओं और प्रतियोगिताओं में अच्छा करेंगे। दवा, कम्प्यूटर विज्ञान, परिष्कृत कला, विधि, व्यापार प्रबंधन, बैंकिंग, होटल प्रबंधन आदि में आपकी रुचि होगी। आप संतुलित और समझदार हैं और अपनी शिक्षा में अच्छा करेंगे।

परिवार :

परिवार के सदस्यों के साथ आपका संबंध मधुर रहेगा। आपके बच्चों को आपकी सहायता और मार्ग दर्शन की आवश्यकता होगी। आपके जीवन साथी को यश और ख्याति प्राप्त होगी और जीवन-वृत्ति में प्रगति होगी। आपके पड़ोसी से आपका सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपकी माता को यश और ख्याति की प्राप्ति और उन्नति होगी। आपका उनके साथ कुछ मतान्तर हो सकता है। आपके पिता के जीवन में परिवर्तन और कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं होंगी। आपके छोटे भाई-बहनों को लाभ मिलेगा और उन्नति होगी जबकि बड़ों को विरोधियों पर विजय, ननिहाल से सहायता और प्रतिस्पर्धा में सफलता मिलेगी।

अन्तर्दशा :

केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के दौरान आपको गृह-सुख, उत्तम शिक्षा, यश और ख्याति मिलेगी। शुक्र के फलस्वरूप आपको आराम और सुख की प्राप्ति तथा यात्रा होगी। सूर्य के कारण आपकी छोटी यात्रा होगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और सगे संबंधियों से सहायता मिलेगी जबकि चन्द्र की दशा में लाभ और पारिवारिक आनन्द मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा के दौरान स्वास्थ्य के खराब होने, विरोध और सम्पत्ति-लाभ की सम्भावना है। राहु के कारण कुछ समस्याएं हो सकती हैं। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान आपका विवाह होगा, जीविका में प्रगति और साझेदारों से लाभ मिलेगा जबकि शनि की अन्तर्दशा में कुछ परिवर्तन, पिता से लाभ, यात्रा और अध्यात्म में रुचि होगी। बुध की अन्तर्दशा में यश, ख्याति, उत्तम स्वास्थ्य और समृद्धि की प्राप्ति होगी।

VISHAKHA GARG

महादशा :- केतु
(02/06/2057 - 01/06/2064)

केतु की महादशा 02/06/2057 को आरम्भ और 01/06/2064 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में केतु सप्तम भाव में है जहाँ से इसकी दृष्टि लग्न पर है। इसके पूर्व आपकी बुध की दशा चल रही थी जिसकी दशा 17 वर्ष थी। बुध के कारण आपको सम्पत्ति, समृद्धि, यश और ख्याति की प्राप्ति और लम्बी यात्रा हुई होगी। केतु की वर्तमान दशा में यात्रा, व्यापार में वृद्धि और साझेदारों से लाभ होगा।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप शक्ति शाली तथा स्फूर्तिवान होंगे। आपको विषाणुजन्य बुखार, चर्मरोग, छूत की बीमारी, फोड़ा, जनन तथा मूत्राशय संबंधी समस्या हो सकती है। कुछ उपायकर इनसे बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी होगी। आपको साझेदारों तथा व्यवसाय से लाभ होगा। सट्टे तथा निवेश में लाभ होगा। आपको कार्य में सफलता तथा यश और ख्याति मिलेगी। जीविका-व्यवसाय के लिए उद्योग, इंजीनियरिंग, कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी, धातु

अथवा खनिज प्रौद्योगिकी अथवा हाईवेयर निर्माण अथवा कृषि का चयन कर सकते हैं। रत्न, धातु, चमड़े, मशीनरी लोहा और इस्पात, हाईवेयर, खेल-सामग्री आदि का व्यापार लाभदायक होगा। नौकरीपेशा लोगों को लाभ, आय में वृद्धि तथा सम्मान की प्राप्ति होगी। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों को यश, ख्याति, आदर, सफलता तथा जीवन में प्रगति होगी। यह दशा व्यवसाय में उन्नति के लिए उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जायदाद :

शनि की अन्तर्दशा में आपको सभी सुख मिलेंगे। जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी। आप एक मकान खरीद सकते हैं। सम्पत्ति के लेन-देन के लिए यह दशा उत्तम है। गुरु की अन्तर्दशा में आपकी छोटी किन्तु, लाभदायक और बुध की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा होगी।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आपको अपना स्तर बनाए रखने के लिए कठिन परिश्रम करना होगा। गणित, इंजीनियरिंग, कम्प्यूटर विज्ञान, भाषा, मेकैनिकल इंजीनियरिंग, प्रशासन और योजना में आपकी रुचि हो सकती है। आप साहसी और आत्मविश्वासी हैं और खेल तथा शिक्षा, अन्य गतिविधियों में अच्छा करेंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका संबंध मधुर रहेगा। आपके बच्चों को कठिन परिश्रम करना होगा और उनकी छोटी यात्रा होगी। उन्हें आपकी सहायता और मार्गदर्शन की जरूरत होगी। आपके जीवन साथी को यश, ख्याति और धर्म में रुचि होगी। अपने जीवन साथी के साथ आपका संबंध उत्तम रहेगा। आपकी माता की जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी और सफलता मिलेगी जबकि पिता को लाभ, विभिन्न स्रोतों से आय और इच्छाओं की पूर्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को सट्टे में लाभ और शिक्षा उत्तम होगी। बड़ों की यात्रा होगी और धन तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी।

अन्तर्दशा :

केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के दौरान आपकी यात्रा और व्यापार में वृद्धि होगी और सफलता मिलेगी। शुक्र के कारण आपको लाभ मिलेगा और मनोकामनाओं की पूर्ति होगी जबकि चन्द्र की अन्तर्दशा में प्रगति होगी, व्यवसाय में सफलता और लाभ मिलेगा। राहु कुछ बाधा खड़ी कर सकता है। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान शत्रु के कारण कुछ समस्या, स्वास्थ्य संबंधी मामूली समस्या और छोटी यात्रा होगी जबकि योगकारक शनि के कारण बच्चों से सुख, सफलता और जीवन का आराम मिलेगा। बुध की अन्तर्दशा में सम्पत्ति और समृद्धि मिलेगी तथा लम्बी यात्रा होगी।

AMAN MITTAL

एस्ट्रोग्राफ – 2026

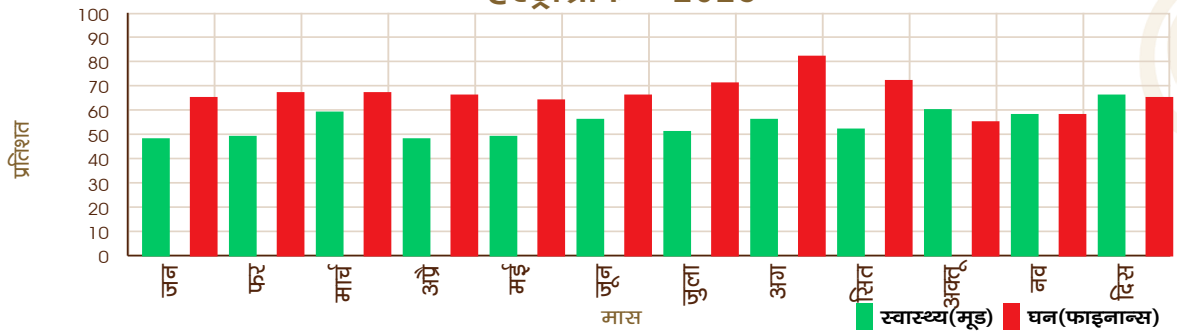

VISHAKHA GARG

एस्ट्रोग्राफ – 2026

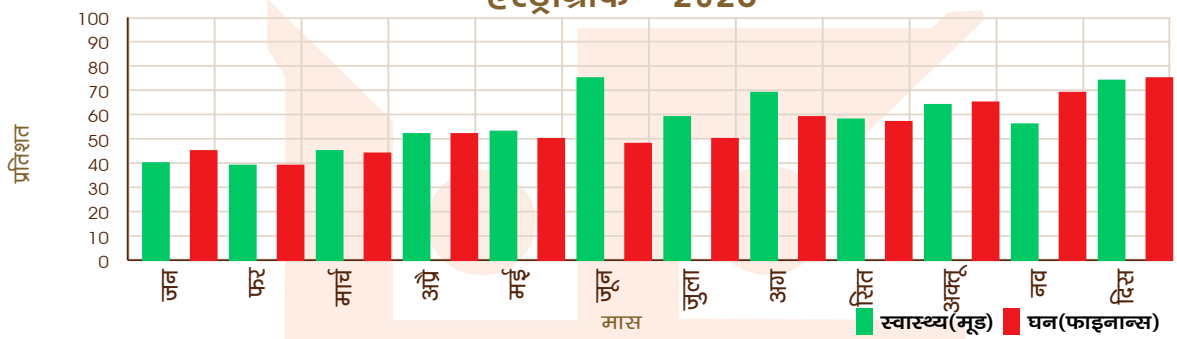

AMAN MITTAL

एस्ट्रोग्राफ – 2027

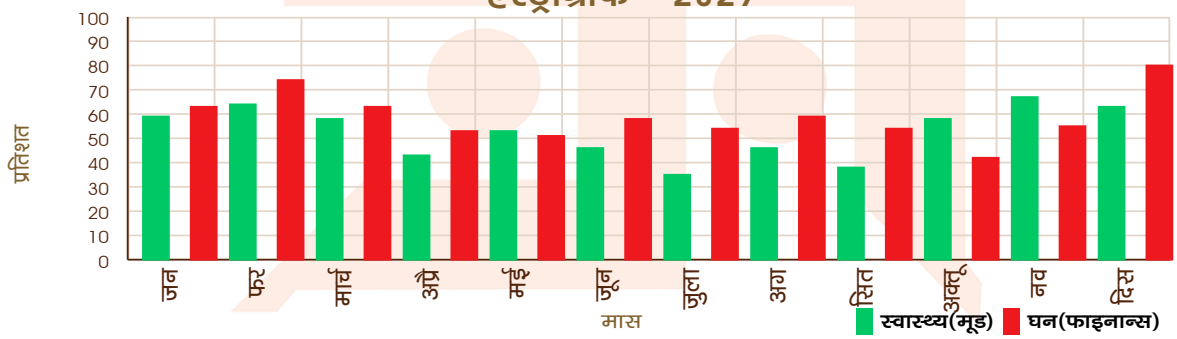

VISHAKHA GARG

एस्ट्रोग्राफ – 2027

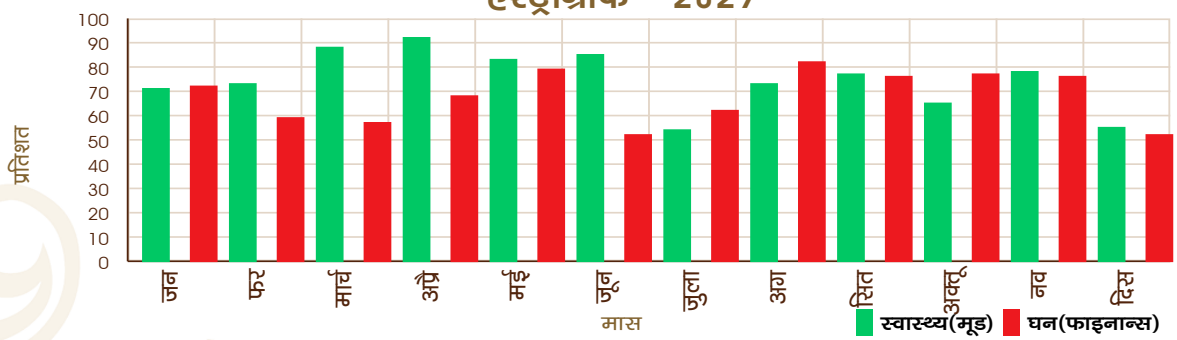

AMAN MITTAL

एस्ट्रोग्राफ – 2028

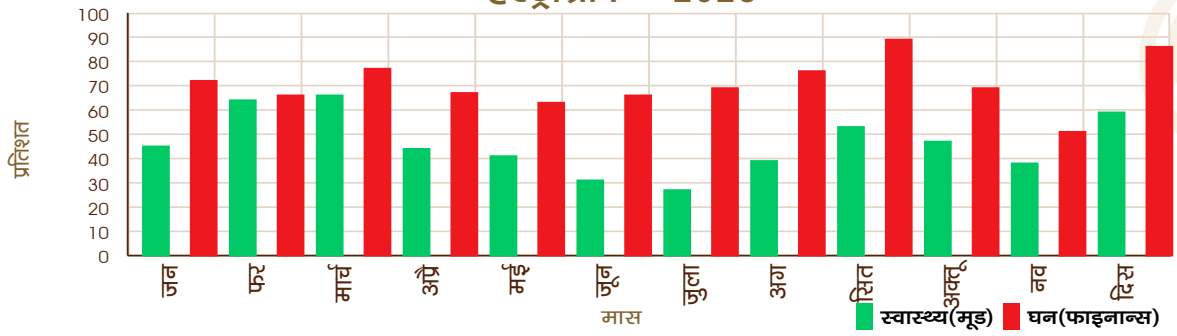

VISHAKHA GARG

एस्ट्रोग्राफ – 2028

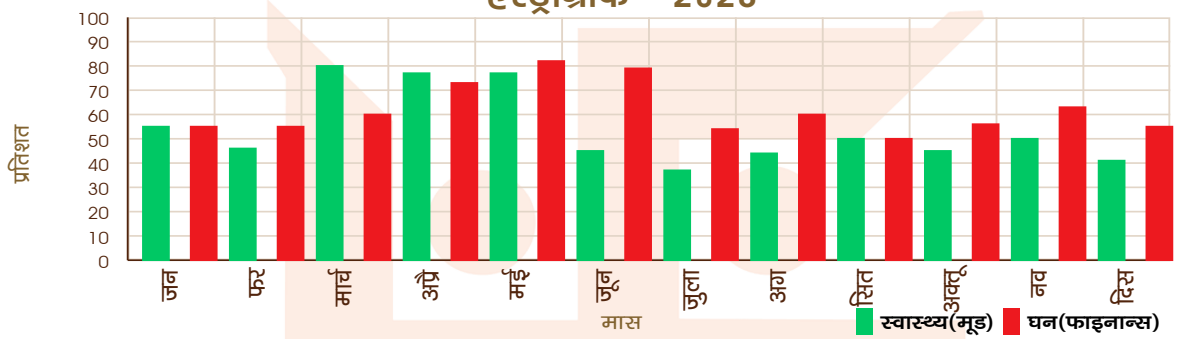

AMAN MITTAL

एस्ट्रोग्राफ – 2029

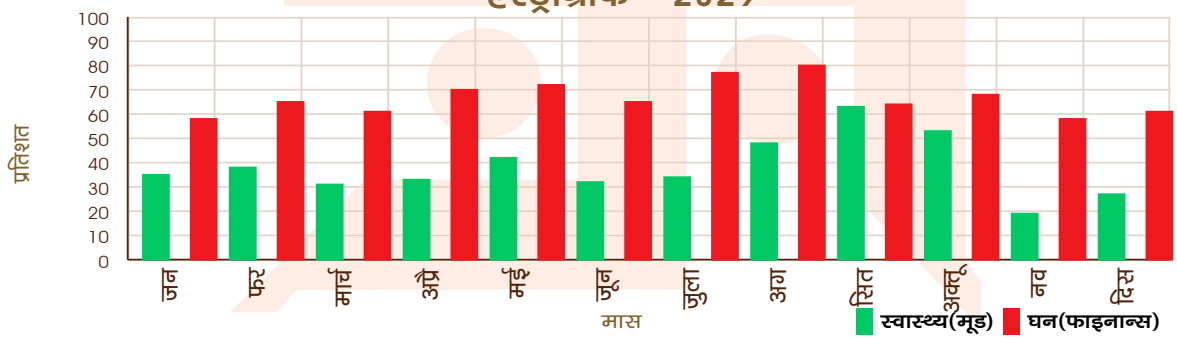

VISHAKHA GARG

एस्ट्रोग्राफ – 2029

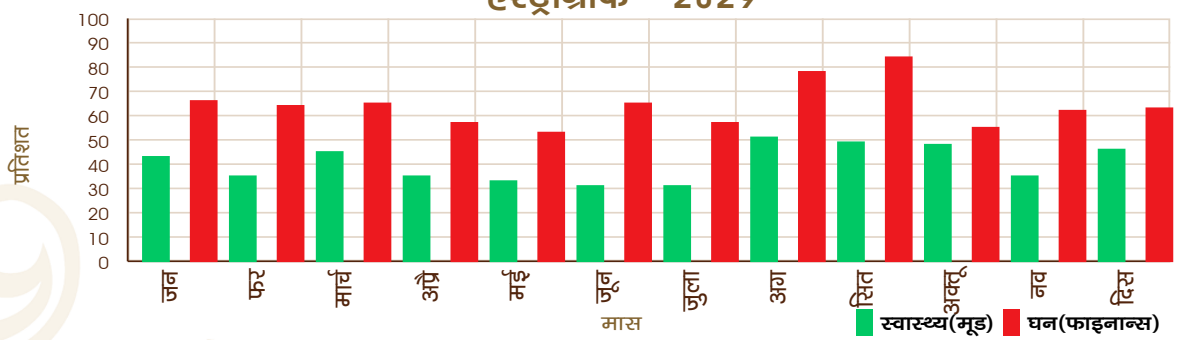

AMAN MITTAL

एस्ट्रोग्राफ – 2030

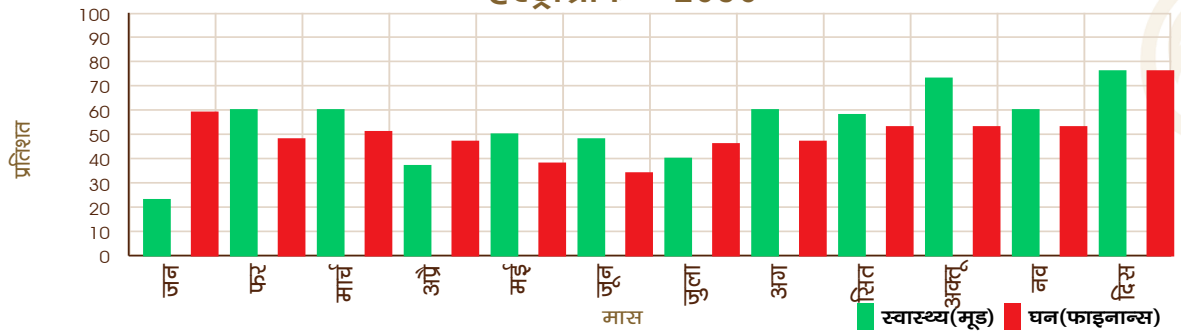

VISHAKHA GARG

एस्ट्रोग्राफ – 2030

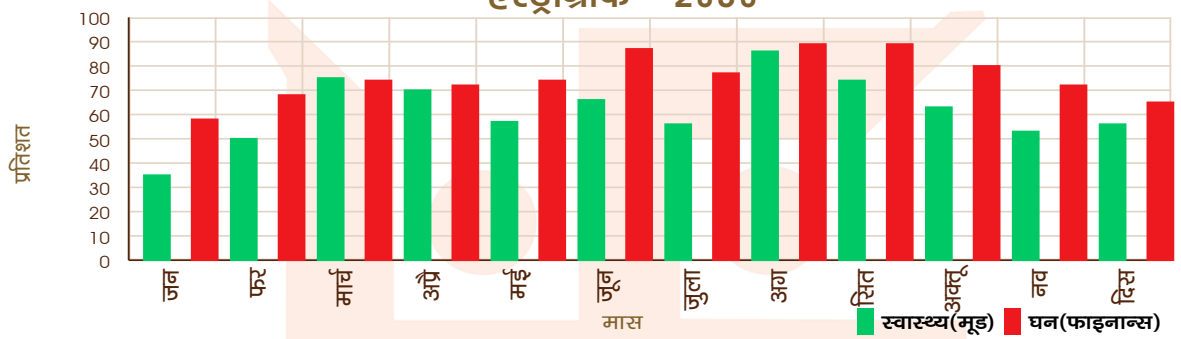

AMAN MITTAL

एस्ट्रोग्राफ – 2031

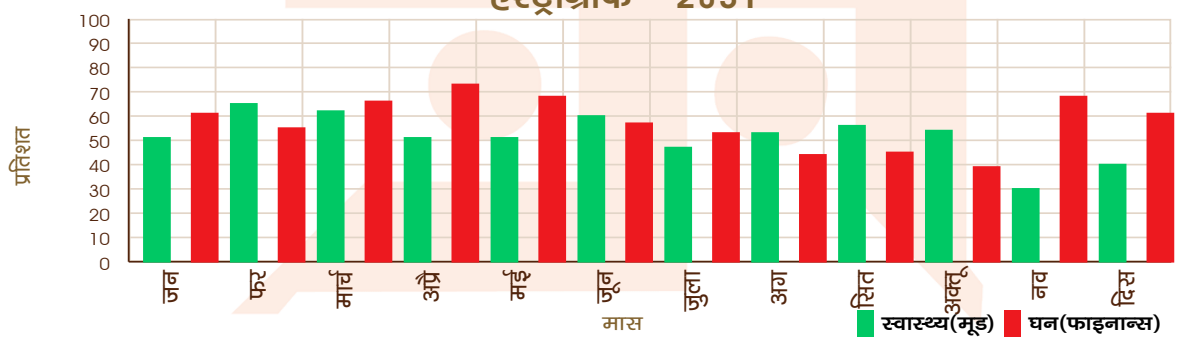

VISHAKHA GARG

एस्ट्रोग्राफ – 2031

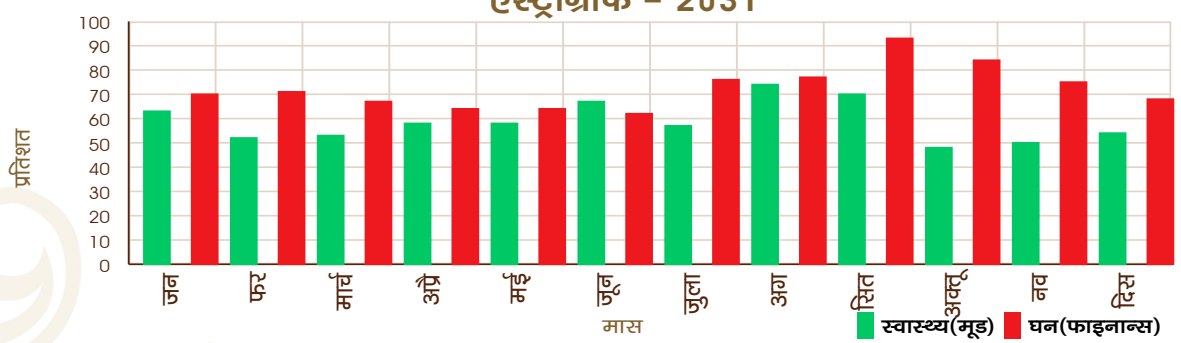

AMAN MITTAL

एस्ट्रोग्राफ – 2032

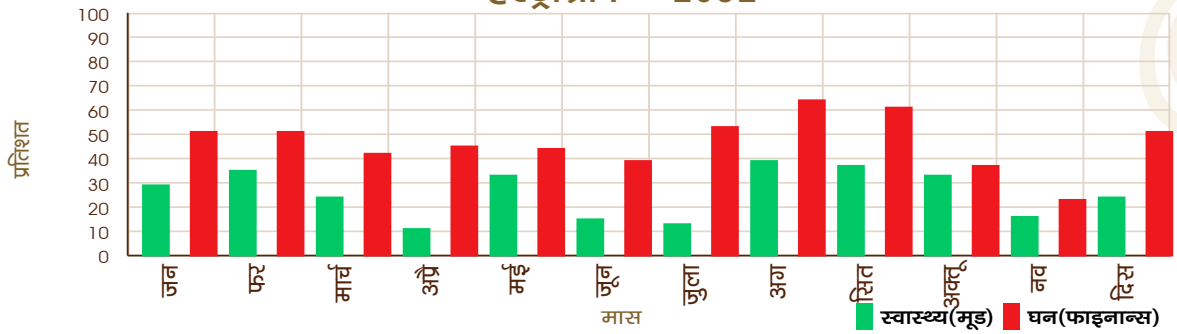

VISHAKHA GARG

एस्ट्रोग्राफ – 2032

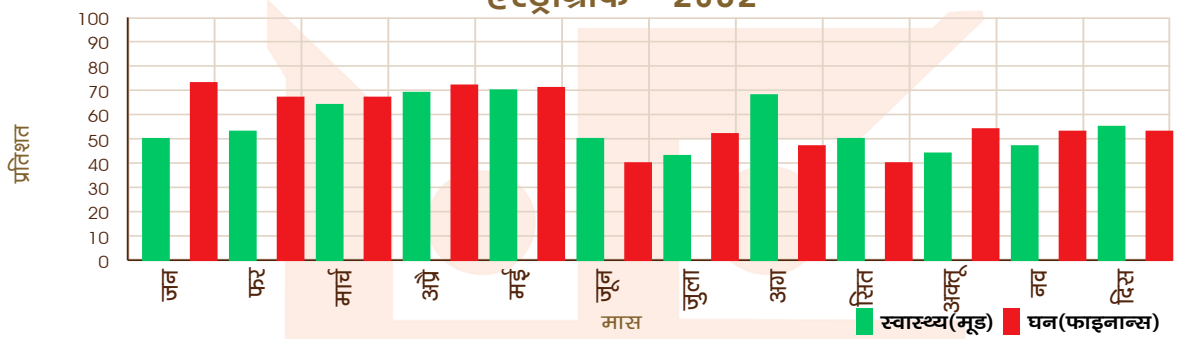

AMAN MITTAL

एस्ट्रोग्राफ – 2033

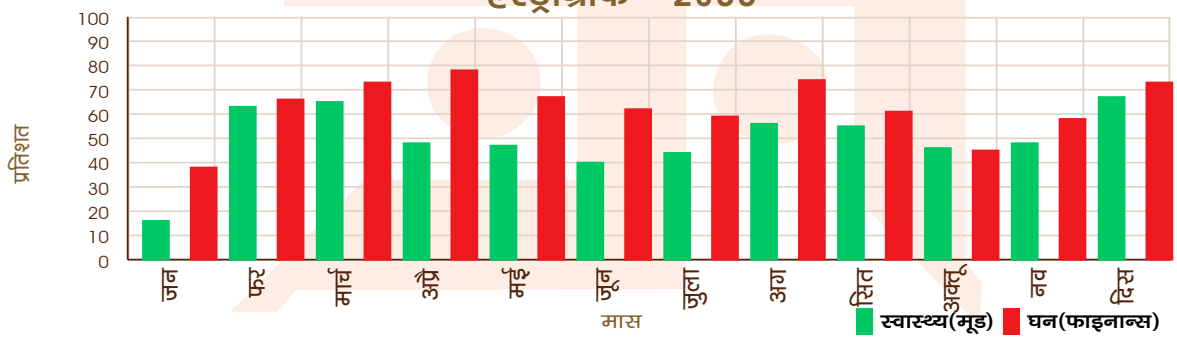

VISHAKHA GARG

एस्ट्रोग्राफ – 2033

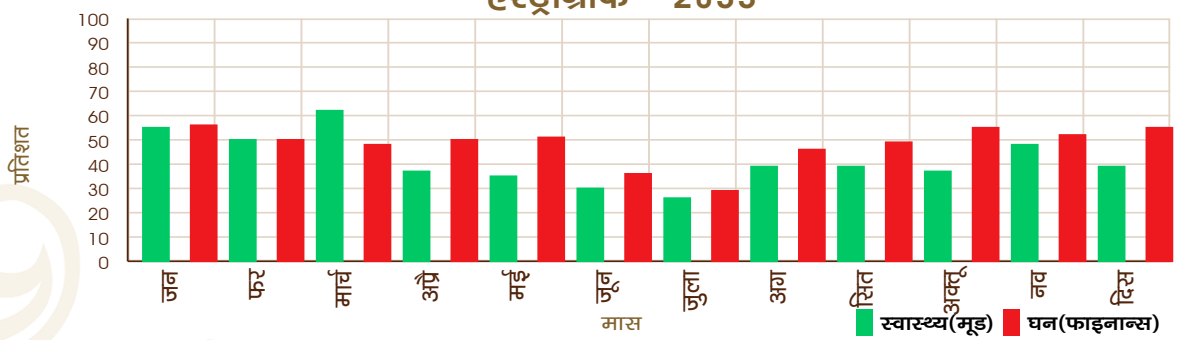

AMAN MITTAL

एस्ट्रोग्राफ – 2034

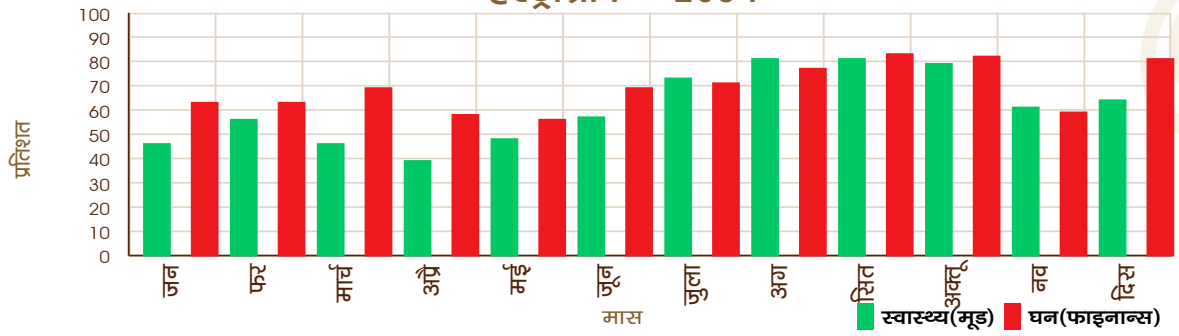

VISHAKHA GARG

एस्ट्रोग्राफ – 2034

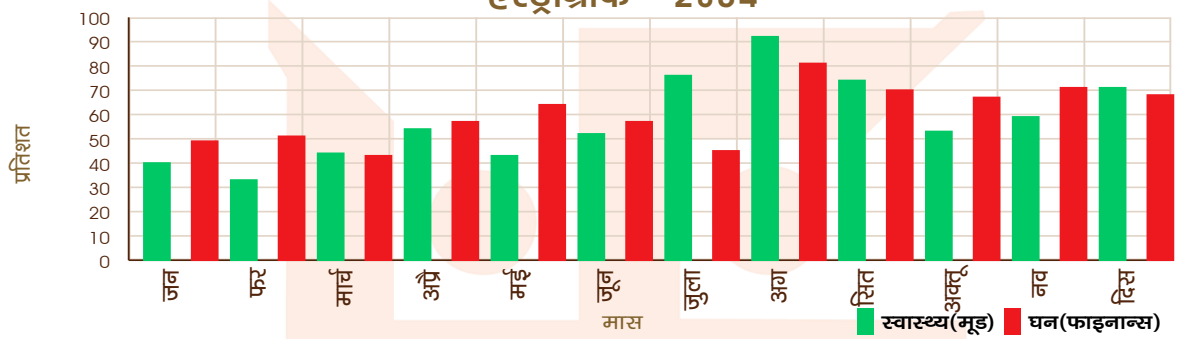

AMAN MITTAL

एस्ट्रोग्राफ – 2035

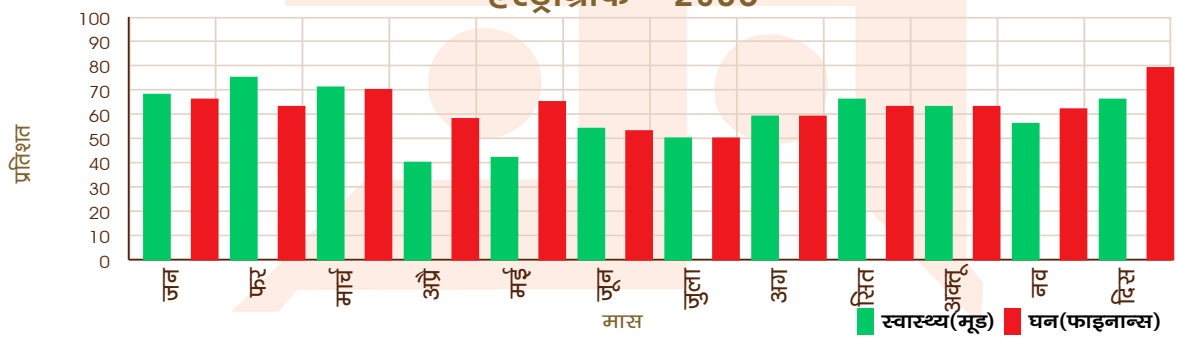

VISHAKHA GARG

एस्ट्रोग्राफ – 2035

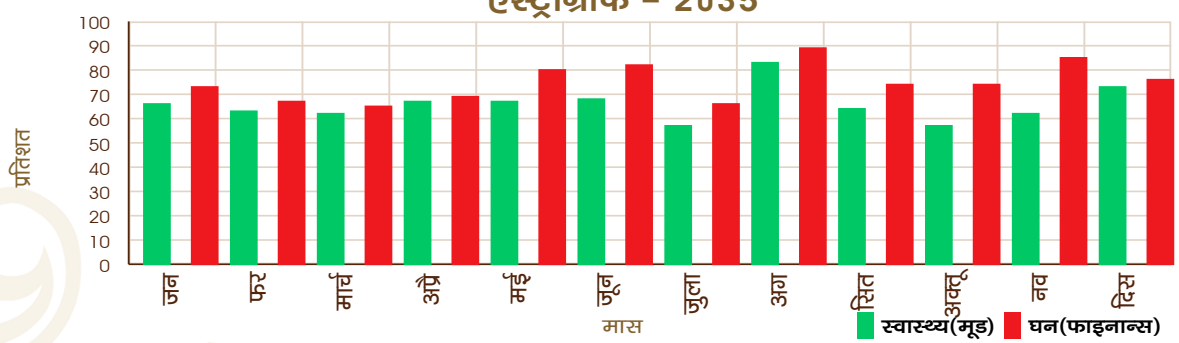

AMAN MITTAL

एस्ट्रोग्राफ – 2036

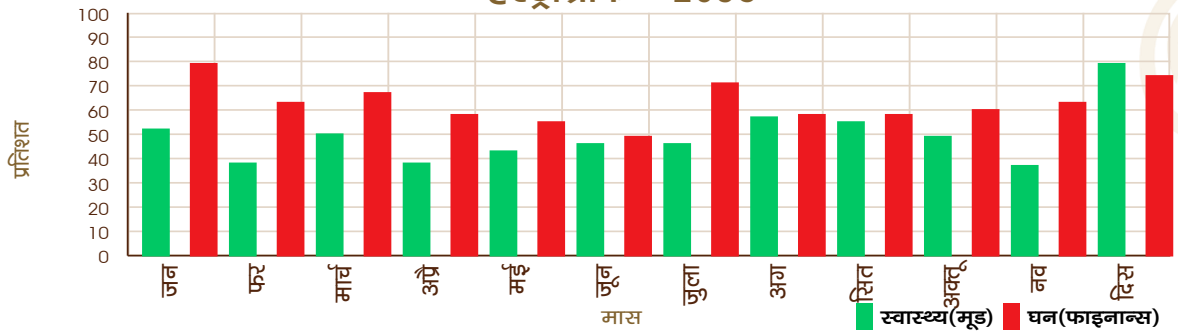

VISHAKHA GARG

एस्ट्रोग्राफ – 2036

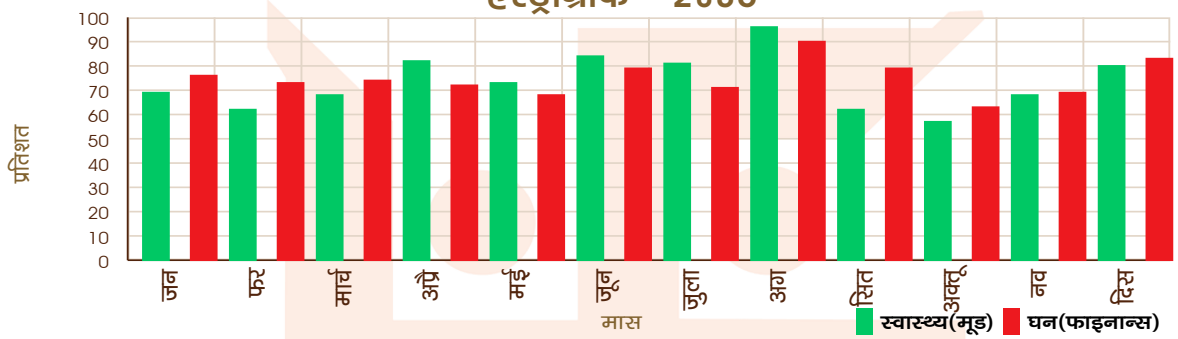

AMAN MITTAL

एस्ट्रोग्राफ – 2037

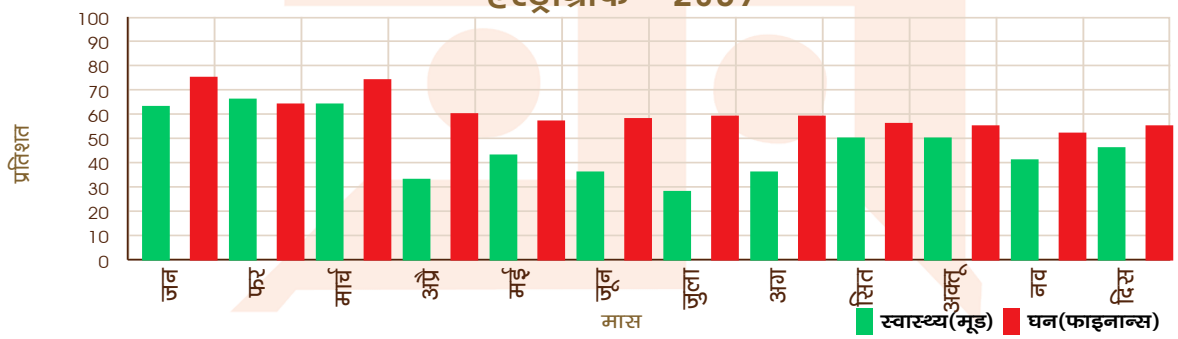

VISHAKHA GARG

एस्ट्रोग्राफ – 2037